रक्षा सम्पदा संगठन
Defence Estates Organisation

सत्यमेव जयते

सम्पदा भारती

15वां अंक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हर घर तिरंगा

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

आज़ादी का अमृत महोत्सव

'सम्पदा भारती' पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता, कहानी आदि में प्रस्तुत विचार रचनाकारों का सृजन–क्षेत्र है। उनसे किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है।

सम्पदा भारती

15वां अंक

प्रधान संरक्षक

अजय कुमार शर्मा

महानिदेशक, रक्षा सम्पदा

संरक्षक एवं परामर्शदाता

मीना बलिमने शर्मा

वरिष्ठ अपर महानिदेशक

संपादक

चारू तिवारी

सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

दीपक कुमार ऋषि, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विक्रम सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

तेजराज सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भल्ला राम मीना, एम टी एस

विशेष आभार

समस्त राजभाषा अनुभाग

साज-सज्जा एवं प्रकाशन

प्रदीप मिश्र, प्रोग्रामर (सूचना प्रौद्योगिकी अनुभाग)

संदेश : महानिदेशक, रक्षा सम्पदा

मैं रक्षा सम्पदा संगठन परिवार के अधिकारियों/स्टाफ को 'हिन्दी दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ साथ ही 'सम्पदा भारती' पत्रिका के ई–प्रकाशन की भी बधाई !

हम सभी जानते हैं कि हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन, उनका प्रचार–प्रसार हमारी कार्यालयीन कार्यविधि का एक महत्वपूर्ण अंग है, क्रमिक भाषा का विकास, उसके निरंतर प्रयोग में निहित है। हिन्दी में कार्य करने में कार्मिकों की रुचि बढ़ाने में पत्रिकाएँ हमेशा से ही सहायक रही है। इसमें दो राय नहीं कि महानिदेशालय स्तर पर भी भाषा प्रयोग के क्षेत्र में सुव्यवस्थित और सारगर्मित हिन्दी के प्रयोग का आग्रह लगातार किया जाता रहा है, इनसे भाषा का परिमार्जन, उसकी समृद्धि सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं मानता हूँ कि पत्रिका रूपी प्रभावी मंच पर रचनाकार अपने विचार स्वातंत्रय के अधीन भाषा से जुड़े प्रत्येक पहलू यथा शब्द, पद, वाक्य, बोध को खंगालता नए सृजन की ओर प्रवृत होता है और इस तरह से कहीं–न–कहीं भाषा समृद्धि में अपना योगदान देता है।

साथियो, इस वर्ष हम 75वां आजादी का अमृत महोत्सव भी मना रहे हैं और 15 अगस्त से आने वाले 25 वर्षों के अमृत काल में प्रवेश कर चुके हैं। 'अमृत महोत्सव' संकल्पना सरकारी भागीदारी नहीं है बल्कि राष्ट्र गौरव, राष्ट्र सचेतता का वो भाव है जो नए रूप, नए कलेवर में हमारे सामने आया है। पुरातन गौरव के साथ भावी स्वपनों को वर्तमान कड़ी में पिरो आगे बढ़ना ही सार्थक है, कल्याणकारी है। यह इस अमृतकाल का एक और संकल्प होगा। आइए इस भावना के अनुरूप हम भी इस अमृत काल में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए इसके आभामंडल के समक्ष नतमस्तक हो राष्ट्रवादी भावनाओं को अपने भीतर कहीं गहरे संजो लें। राष्ट्रहित के कार्यों को तेजी से आयाम दें तथा हिन्दी को इस काल के आरंभ में ही पूरी तरह से अपने रोजमर्रा के कार्यों में समाविष्ट करें।

अंत में, अपनी बात समाप्त करते हुए मैं सभी रचनाकारों तथा हिन्दी अनुभाग के अधिकारियों एवं कर्मियों के प्रयासों की सराहना करता हूँ।

जय हिन्द !

अजय

अजय कुमार शर्मा

एक संवाद : वरिष्ठ अपर महानिदेशक

'सम्पदा भारती' पत्रिका के ई–प्रकाशन की शुभकामनाएं।

राजभाषा के प्रचार–प्रसार में कार्यालयी पत्रिकाओं की महत भूमिका है। हम सभी जानते है हिन्दी एक व्यापक सरल, सहज, आसानी से लिखी और बोली जाने वाली भाषा है। भारत भूमि की सभी भाषाएँ हमारा गौरव है, ईश–तुल्य हैं क्योंकि भाषाएँ मानव को ईश्वर की ओर से दिया गया उपहार है। जैसा कि कहा गया है– चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर बानी। हमारे बहुभाषी देश पर यह बात पूरी तरह से लागू होती है। किन्तु इतनी विविधता के वावजूद एक अंतर्धारा जो समान रूप से पूरे देश में व्याप्त है वह सभी भाषाओं का सम्मान और उनके सृजन, पल्लवन, विकसन के नए सोपान उपलब्ध कराना। तभी तो भारतवर्ष की वैविध्यपूर्ण संस्कृति और सभ्यता का अनवरत काफिला इस 75वें अमृत महोत्सव को और सजाता, संवारता, अर्थवत्ता प्रदान करता चल रहा है।

भाषाओं के विकास में सामान्य जन की भागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। सरकारी कार्यालय के कार्मिकों की भूमिका इसमें काफी बढ़ जाती है। राजभाषा नीति की समुचित अनुपालन दिशा में यह भी एक ठोस उपाय है कि कार्यालय में ऐसा माहौल तैयार किया जाए जिसमें अधिकारी एवं कार्मिक सहज और सरल हिन्दी में कार्य करने में स्वप्रेरित हो। महानिदेशालय इस दिशा में लगातार प्रयासरत है।

संक्षेप में, राजभाषा नीति के प्रति अपने कर्तव्य निर्वहन में महानिदेशालय पूरी गंभीरता से रत है, राजभाषा संबंधी अधिनियमों, नियमों तथा उनके अंतर्गत जारी आदेशों के समुचित अनुपालना में हम कहीं पीछे नहीं है।

अंत में मैं पुनः सभी को उनके प्रयासों के लिए साधुवाद देती हूँ।

जय हिन्द !

मीना बलिमने शर्मा

सम्पादकीय

सम्पदा भारती पत्रिका के एक और नए अंक के प्रकाशन के साथ हम फिर से अपने राजभाषायी दायित्वों के निर्वहन की ओर अग्रसर है। हालांकि यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है किन्तु फिर भी कार्य के प्रति गहनता हमारे दायित्व बोध के साथ–साथ पत्रिका के नए कलेवर को पाठकों के सम्मुख लाती है एवं हमारे रचनात्मक बोध को भी संतुष्ट करती है। देश भर में फैले संगठन के कार्मिक रचयिता इस अवसर का पूरा लाभ उठाते हुए अपने रचना संसार का सृजन करते है। इस तरह से प्रस्फुटित उनकी रचना धर्मिता, विचार वैचित्रय, शब्द चयन एवं पद विन्यास अपने पूरे वैभव के साथ लेख, कहानी, कविता रूप में हमारे समक्ष उजागर होते है। पत्रिका प्रकाशन का ध्येय इसी संयोग से पूरा होता है। संगठन सभी रचनाकारों को उनके प्रयासों के लिए साधुवाद प्रेषित करता है।

साथियो, इस वर्ष हम 'आजादी' का 75वां अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। इस अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई एवं भावी शुभेच्छाएं। देश के प्रति अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन का भार हम सब पर है। इस प्रयास में सजगता से कार्य करने की आवश्यकता है। देश–प्रेम का यह भाव भाषा, भूमि, माटी, जन सभी के प्रति हमारे श्रद्धा भाव को जगाता हुआ अंतराष्ट्रीय पटल पर विराट रूप में सामने आता है। अतः 'नमो नमः भारत भूमि' का गान करते हुए मैं माननीय उच्च अधिकारियों का आभार प्रकट करती हूँ साथ ही रचयिता एवं पत्रिका के सम्पादन, प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों का भी धन्यवाद करती हूँ।

चारू तिवारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

हिन्दी के प्रयोग हेतु राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2022-23 में निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	'क' क्षेत्र (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़, झारखंड और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य, संघ/राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति : क' व 'ख' क्षेत्र को 100%	'ख' क्षेत्र (पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्तिः 'क' व 'ख' क्षेत्र को 90%	'ग' क्षेत्र ('क' तथा 'ख' क्षेत्रों में आने वाले राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रो को छोड़कर अन्य सभी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्तिः 'क' व 'ख' क्षेत्र को 55%
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में	100%	100%	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण लेखन	75%	50%	30%
4.	हिन्दी में डिक्टेशन या की–बोर्ड पर स्वयं द्वारा टंकण कार्य	65%	55%	30%
5.	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण व आशुलिपि)	100%	100%	100%
6.	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण बैठकें				
7.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रत्येक तिमाही के दौरान एक बैठक)	
8.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रत्येक छमाही के दौरान एक बैठक)	
9.	हिन्दी कार्यशाला आयोजन		वर्ष में 4 (प्रत्येक तिमाही के दौरान एक कार्यशाला)	

रक्षा सम्पदा दिवस 2021 : कुछ झलकियाँ

रक्षा सम्पदा दिवस 2021 : कुछ झलकियाँ

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	मैं हिन्दी हूँ (कविता)	यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी	13
2.	लता मंगेशकर (लेख)	चारू तिवारी	18
3.	कार्यालयी कामकाज में हिन्दी (लेख)	विक्रम सिंह	21
4.	मानव चला ..... (कविता)	नरेंद्र चौहान	23
5.	योग का परचम (लघु कविता)	नरेंद्र चौहान	23
6.	कला और कलाकार (लेख)	वैशाली संजय केनेकर	25
7.	बंद दरवाजे (कविता)	वैशाली संजय केनेकर	28
8.	खुशकिस्मत कौन (लेख)	जितेंद्र डडवाल	29
9.	ईश्वर को न मानने पर (लेख)	आदिल प्रताप सिंह	30
10.	जीवन में पुस्तकों का महत्व (लेख)	हरप्रीत कौर	31
11.	जीवन का मतलब..... (कहानी)	शाहिना खातून	32
12.	पछतावा (कहानी)	संजय कुमार ओझा	34
13.	'द ग्रेट हिमालयन ट्रैवलर्स' (यात्रा वृतांत)	के आर दत्ता	36
14.	आदमी की औकात (कविता)	शेख साजिद	38
15.	सब बदल रहा है (कविता)	योगेश	39
16.	ढलती साँझ (लेख)	सौ. निशात शेख	44
17.	अध्यापक और छात्र (लघु कविता)	संजय हरिभाऊ थिटे	46
18.	तब मैं घर आता हूँ (लघु कविता)	मनीष कुमार श्रीवास्तव	46
19.	शहीद–ए–आजम ..... (लेख)	लक्ष्मी रावत	47
20.	कल्पना का भय (कहानी)	मनीष कुमार श्रीवास्तव	48
21.	कुछ नादानियां..... (लेख)	मीना कुमारी	49
22.	मेरी आवाज..... स्मृति	दीपक कुमार ऋषि	50
23.	खंड–खंड इतिहास में अखंड हिंदी	यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी	51
24.	नारी तेरे रूप अनेक (कविता)	रीना ठाकुर	58
25.	आशा ही जीवन है (लेख)	संजय चंद्र पराशर	59

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
26.	सफरनामा (लेख)	भल्ला राम मीना	60
27.	बदलते परिवेश में..... (लेख)	संजय कुमार	62
28.	सलाह (कहानी)	धीरेन्द्र तिवारी	64
29.	सोने का अंडा (कहानी)	मुनेश कुमार मीना	66
30.	प्रयास (कहानी)	आकाश	67
31.	नीमा (कहानी)	कविता	68
32.	मन की तानाशाही (लेख)	सचिन	69
33.	नींबू के भाव (कहानी)	अशोक पासवान	71
34.	पन्ना धाय (लेख)	नरेश कुमार	71
35.	हिम्मत (लेख)	सौ. मीनल मिलिंद धायगुडे	73
36.	शिष्टाचार : जीवन का आधार (लेख)	दक्षिता सिंह	73
37.	फर्ज (संस्मरण)	हेमंत कुमार गोयल	74
38.	स्वर सम्राज्ञी (लेख)	तेजराज सिंह	75
39.	21वीं सदी और उज्ज्वल भविष्य (लेख)	दीपक कुमार ऋषि	78
40.	वास्तु टिप्स (लेख)	दीपक कुमार ऋषि	78
41.	ईश्वर का गणित (लेख)	रियाज बशीर शेख	79
42.	निरक्षरताः एक सामाजिक अभिशाप	पवन कुमार तिवारी	81
43.	पागल (लघु कविता)	अन्नू सिंह	82
44.	सुनो ना माँ (कविता)	अन्नू सिंह	82
45.	शब्द (कविता)	दीपक कुमार तिवारी	83
46.	राजा मार्तण्ड वर्मा (लेख)	प्रदीप मिश्र	84
47.	राजभाषा अनुभाग की गतिविधियां	राजभाषा अनुभाग	88

मैं हिंदी हूँ!

आवाम की जिन्दगी हूँ,
भारत का कतरा–कतरा खून हूँ,
यहीं की धूल, यहीं की माटी हूँ,
हर माथे के पसीने की चमक हूँ,
दुनिया की पूरी आबादी के,
छठवें हिस्से का वजूद हूँ,
हर भूख की गवाह हूँ,
हर ईमान की जमानत हूँ,
तरक्की की आधारशिला हूँ!! मैं हिंदी हूँ!

भारत की नदियों का जल हूँ,
सदियों से हरा–भरा वट–वृक्ष हूँ,
जमीन पर उकेरा गया शब्द हूँ,
इंसानों की सरहदों के पार,
आसमानों पर इंद्रधनुष हूँ,
विद्वानों के अल्फाज और
अनपढ़ों की मीठी आवाज मैं हिंदी हूँ!! मैं हिंदी हूँ!

सरहपाद, चन्दबरदाई, अमीर खुसरो, जयदेव,
रविदास, कबीर की वाणी हूँ,
मीरा बाई, रहीम, केशव, तुलसी की रामायण हूँ,
घनानंद, भूषण, रसखान,
भीखा, सुन्दर, गुलाल की बानी हूँ,
महावीर, हरिऔध, मैथिली,
प्रसाद, हजारी, यशपाल, अश्क,
नागर, नागार्जुन, रांगेय, 'सुमन',
शरत, प्रेमचंद की स्याही हूँ,
आचार्य चतुरसेन, रामचन्द्र शुक्ल,
देवकी नंदन खत्री, दिनकर, बच्चन,
अमृता प्रीतम, शिवानी की मैं हिंदी हूँ!! मैं हिंदी हूँ!!

पुरुखों की वसीयत हूँ,
भारत की बुनियाद हूँ,
पवित्र गीता हूँ मैं,
कुरान–ए–पाक हूँ मैं,
पवित्र बाइबिल और
गुरुग्रंथ साहिब हूँ मैं,
चाणक्य का अर्थशास्त्र हूँ मैं,
आचार्य शंकर का महाभाष्य हूँ मैं,
बुद्ध की जातक हूँ मैं,
अकबर की दीन–ए–इलाही हूँ मैं,
गुरुदेव की गीतांजलि,

गांधी की अहिंसा,
भारत की एक खोज हूँ,
भारत की आजादी हूँ,
भारत का निर्माण मैं हिंदी हूँ!!

पुस्तकालयों में संरक्षित,
पन्नों पर लिपटी हूँ मैं,
शिक्षा की चार–दिवारी में,
विभागों की दहलीजों पर
ठिठकी सी भाषा की मैं हिंदी हूँ!

भारत की जनभाषा मैं,
भारत की हूँ राजभाषा,
इंटरनेट के संवादों में,
कंप्यूटर पर दौड़ रही,
विश्व गाँव की मैं हिंदी हूँ!

जीवन की उहा–पोह में,
हर ठेले हर रेहड़ में,
फुटपाथों संग गलियों में,
दुकानों और मालों में,
भाषाओं के मेले में,
दुनिया की बाजारों में,
सड़कों पर जूझ रही मैं हिंदी हूँ!!

आम आदमी से चलकर,
अंतिम आदमी को लेकर,
अगड़े पिछड़े समाजों से,
छूट चुके आवामों में,
बिछड़े जज्बातों की खातिर,
भारत की सवा अरब,
आवाजों में मिलकर,
इन्कलाब की मैं हिंदी हूँ!

रुपये–डालर के महायुद्ध में,
आतंक–शांति के महासमर में,
प्रभुता की छीना–झपटी में,
अंग्रेजी के महंगे उत्पादों में,
मेहनतकश सस्ती हिंदी हूँ मैं।

सरकारों की आधी आवाज हूँ,
संविधान में प्रतीक्षारत मैं,
शोषण–पोषण की पतली रेखा पर,
भूखी–प्यासी मैं हिन्दी हूँ।
रिश्तों के महाजाल में,

भरी भीड़ में एकाकी,
जनपथ से अब राजपथ,
कदमों के पदचिन्हों से आगे,
मोटरगाड़ी वाली मैं हिंदी हूँ!!

यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
माननीय सदस्यः हिंदी सलाहकार समिति, संस्कृति मंत्रालय और
नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार

"आप लोग जीवन में जो कुछ जियें – गहराई से जियें। दुःख हो सुख हो, उदासी हो या बैलौस मस्ती हो, बिछुड़न हो या प्रेमाकुलता हो – जो कुछ भी हो – आपका अपना हो। उसे शिद्दत से जीने के बाद, अपने अनुभव को अपने ढंग से, अपने शब्दों में व्यक्त करें।"

डॉ. हरिवंश राय बच्चन

रक्षा भूमि सर्वेक्षण पुरस्कार एवं ई-छावनी पर वेबिनार का उद्घाटन(10/02/2022)

रक्षा भूमि सर्वेक्षण पुरस्कार एवं ई-छावनी पर वेबिनार का उद्घाटन(*10/02/2022*)

लता मंगेशकर

(महान गायिका लता मंगेशकर को समर्पित खंड)

रक्षा सम्पदा संगठन मूर्धन्य स्वर मंजरी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

व्यक्तित्व परिचयः सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर अब हमारे बीच नहीं रहीं। सम्पूर्ण संगीत जगत के लिए यह दुख की घड़ी हैं। इस शोक संतप्त माहौल में लता जी के व्यक्तित्व से जुड़ी कुछ स्मृतियों का जिक्र हमें उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के अलावा बचपन की भी झलकियाँ दे जाता हैं। उद्देश्य सिर्फ यही कि लता जी का व्यक्तित्व पुनः हमेशा के लिए कलमबद्ध हो हमारे स्मृति पटल पर अंकित हो जाए।

साथियो,

शीर्षक पढ़ा आपने, 'लता मंगेशकर'। क्या सचमुच 'लताजी' को एक याद के रूप में याद किया जा सकता है। 'लता जी' एक याद तो बिल्कुल नहीं हैं। वे हमेशा 'वर्तमान' में मौजूद हैं। 'उनके लिए थी' का संबोधन चाहकर भी लगाया नहीं जा सकता।

सभी विभूषण उनके व्यक्तित्व, कैलिबर, ओज के सामने फीके, स्पंद रहित सोज़ से घिरे लगते हैं। उनके जाने से संगीत जगत में एक खालीपन महसूस किया जा सकता है, इस खालीपन को कभी नहीं भरा जा सकता। कई बार रात्रि ड्राइव के दौरान ढाबों, सड़कों पर दौड़ते ट्रकों में लता जी के गाने 'चलते–चलते यूं ही कोई मिल गया था' या 'लग जा गले', एक स्वर्गीय आनंद की अनुभूति दूर तक के राहगीरों को करा जाते हैं।

संगीत को लेकर अपनी संवेदनशीलता के बारे में लता जी ने एक इंटरव्यू में कहा था,'मैं किसी बाहरी प्रभाव से सिंगर नहीं बनी। संगीत तो मेरे भीतर था। मैं पूरी तरह इसमें निमज्ज थी।'

कहीं लता जी ने कहा भी है 'अगर मैं गायिका न होकर कुछ और बनती तो उस क्षेत्र में भी 'लता मंगेशकर ही होती।'

लता जी का जन्म 29 सितम्बर, 1929 को पंडित दीनानाथ मंगेशकर और श्रीमती मंगेशकर के यहाँ हुआ। स्थान थाः इंदौर शहर का सिख मोहल्ला, श्रीमती की बहन का घर। सभी भाई बहनों में सबसे बड़ी 'लता दीदी' उम्र भर सभी की लाड़ली 'दीदी' रही।

उनके जन्म के समय पिता दीनानाथ मंगेशकर एक धनी–मानी व्यक्ति थे। उनका बनवाया तेरह कमरों और विशाल बरामदे वाला 5 मंज़िला मकान सांगली के जिस रास्ते पर था उसका नाम 'दीनानाथरास्ता' है। नागपुर से लेकर खानदेश तक लगभग हर शहर के बैंक में उनका खाता था।

पुत्री के गले में सुर है इसका पता पिता को तब चला जब जमीन से मिट्टी खाने जा रही छह सात महीने की पुत्री को रोकने की मंशा से पिता ने सारंगी की छड़ी दिखाई। बच्ची ने मिट्टी का कौर रोकते–रोकते सारंगी पर तभी बजाया गया संगीत का टुकड़ा हु–ब–हु गले से निकाल दिया।

चार साल की लता के साथ परिवार इंदौर आया। हर सुबह वहाँ के शासक के महल में शहनाई बजती। एक बार लता ने शहनाई की आवाज सुनकर उसे लेने की जिद पकड़ी। पिता ने उस जिद को भुलाने के लिए उसी राग में एक बंदिश सुनाई। पुत्री एकाग्रता से उस बंदिश को सुनती रही। संगीत के प्रति यह रागात्मक लगाव 'संगीत शिक्षा' के रूप में 'पूरिया घनाश्री राग' से हुआ। 'जिस तरह कविता में शब्दों का अर्थ होता है वैसे गीत में सुरों का। लता जी का मानना था कि गाते समय दोनों अर्थ उभरने चाहिए।'

आठ साल की लता को पिता से सीख मिली जिसे उन्होने उम्र भर के लिए गांठ बांध लिया ''अगर एक बार तुम्हें विश्वास हो जाए कि तुम जो कर रही हो वह सही है, सत्य है, बस तो फिर कभी किसीसे डरना नहीं । ..... घबराओ तो सिर्फ अपने आप से। खुद से पूछो कि जो कर रही हो वह सही है, अगर जवाब में हाँ कह सको, तो बस, किसी बात की परवाह मर करो।''

पेड़ पर चढ़ना, अमरूद तोड़ कर खाना, अपने कद के बराबर की लाठी लिए घूमना उनके लिए आम बात थी। उनके बचपन के बारे में उनकी माँ बहुत सारी बातें कहती हैं।

''आम लड़कियों की तरह इनके खेल तो थे ही नहीं। न मालूम क्यों उसे 'मालक' (दीनानाथ मंगेशकर) नाटक कंपनी का नकदी का बक्सा बड़ा पसंद था। नाटक के मंचन के बाद जब रुपयों से खचाखच भरा हुआ बक्सा घर लाया जाता, तो लता का हठ शुरू हो जाता, कि मुझे उस बक्से ऊपर बैठना है। उसके बाबा उसका हठ पूरा करते। फिर वह कैशियर से पैसे निकलवाती और उनमें से एक–एक करके रुपए बाहर फेंकती।''
उसका दूसरा शौक था– काँच के कप और तश्तरी तोड़ना।''

पर जब यह लड़की शरारत के मूड में नहीं होती थी, तब अपने आचार–विचार में पूरी 'दीदी' बनी रहती। व्यवहार में, बोलचाल में स्नेह झलकता। स्वभाव से जिद्दी, छोटे–बड़े पर हुकूमत चला लेती थी, स्वतंत्र विचार के साथ–साथ विनोद वृति भी थी। नकलें उतारने में माहिर। वह घर में हो तो हँसी–गाना चलता रहता, घर गुलजार रहता।

छोटी लता मिमिक्री और चित्रकारी दोनों में माहिर थी। लता जी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने औपचारिक शिक्षा नहीं ली। यह कुछ हद तक सही है पर इसकी वजह सांगली के (मुरली घरांची शाला) स्कूल में दाखिला हुआ। ''पहले दिन मास्टर साहब ने मुझे बोर्ड पर 'श्री गणेशाय नमः' लिखने को कहा, जो मैंने लिखा। दूसरे दिन स्कूल जाते वक्त छोटी बहन आशा रोने लगी, तो मैंने उसे कमर पर उठा लिया। फिर स्कूल पहुँच कर बच्चों को मैं कुछ गाने सुनाने लगी। इसी बात पर मास्टर साहब नाराज हो गए, 'यह पाठशाला है अपने छोटे भाई–बहनों को बहलाने की जगह नहीं।' मुझे तो बड़ा गुस्सा आया। मास्टर दीनानाथ की बेटी का इतना अपमान, बस उसके बाद स्कूल की शक्ल ही नहीं देखी। न बाबा ने मुझे इसके बारे में पूछा, न ही माई ने कभी उस तरफ ध्यान दिया।''

लता जी अपने पिता के व्यक्तित्व से बेहद प्रभावित थी। पिता की कही हर सीख उन्हें जीवन भर पथ प्रदर्शक की तरह राह दिखाती रही। एक बार लता को मिले दिलरुबा (एक संगीत साज) की छड़ पिता से टूट गई। लता जी रो पड़ी। फिर पिता ने उन्हें जो कहा, उसकी याद ताउम्र रही – ''तुम्हें रोना और गुस्सा इसलिए आ रहा है न कि यह तुम्हारा जीता हुआ पुरस्कार है ? .....' यानी यह सिद्धि तुम पर असर कर गई है। यह अच्छी बात नहीं है, क्योंकि तुम्हें भविष्य में बहुत बड़े–बड़े पुरस्कार मिलने वाले हैं। अपनी ख्याति, अपने यश पर अभिमान नहीं होना चाहिए '.....। जब भी मुझे कोई पुरस्कार मिला है मैंने खुद को बाबा की यह बात याद दिलाई है।''

उनके पिता रूढ़िवादी थे। आसानी से नए परिवर्तनों को स्वीकार नहीं करते थे। अपने पिता को एक अंतरंग श्रद्धांजलि में हृदयनाथ मंगेशकर (लता जी के छोटे भाई) ने कहा–''अपने सुरों से, संगीत जगत को नए आयाम, नई दिशाएँ देने वाली लता का उदय होना था, इसलिए ईश्वर ने तुम्हें अपने पास जल्द बुला लिया। हो सकता है कि अगर तुम रहे होते तो दीदी का गरिमामय स्वर शायद रूढ़ि और परम्पराओं के अरण्य में कहीं खो जाता। पिता रूढ़िवादी तो थे ही, हो सकता है कि दीदी शायद शादी करके किसी घराने की लक्ष्मी बन कर पूना, कोल्हापुर या सांगली के किसी घर की चार–दिवारी में कीर्ति–विहीन जीवन बिता रही होती।''

माता–पिता से विरासत में पाए संस्कार व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा तो देते हैं किन्तु वर्तमान भविष्य को सुदृढ़ करने का कार्य तो व्यक्ति को स्वयं करना होता है। यही उसका स्वभाव, जीवन के महत्वपूर्ण पड़ाव में लिए गए निर्णय महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। लता जी का मानना था ''जिस दिन कलाकार में सीखने की इच्छा खत्म हो गई तो समझो.....।''

उनका मानना था कि उनकी सफलता में उनका जिद्दी कभी–कभी निष्ठुर स्वभाव भी, जो उन्हें श्रेष्ठ से रत्ती भर भी कम प्रदर्शन करने की अनुमति नहीं देता, जरूर जिम्मेदार है "अगर मजबूरी न हो तो समझौता क्यों किया जाए ? और अगर समझौता ही करना है तो वह काम ही क्यों किया जाए। "

अपने अधिकारों के प्रति सचेत लता जी निजी तौर पर संघर्ष में विश्वास करती थी। चाहे मोहम्मद रफी के साथ रॉयल्टी को लेकर उनका विवाद अथवा एस डी बर्मन के साथ अहं–टकराव, कहीं भी अपनी स्थिति को जरा भी कमजोर नहीं पड़ने दिया।

अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजगता के कारण ही उनके प्रयासों ने रॉयल्टी का मार्ग प्रशस्त किया। जो आने वाली पीढ़ी के लिए मार्मिक संबल लेकर आया। लता जी के बारे में क्या कहा जाए, अपने व्यक्तित्व और विचारों में पूर्ण ईमानदार लता जी का उनकी आवाज की तुलना 'पारदर्शी पानी' से की जा सकती है। निर्बाध, आरोह–अवरोह की तान पानी की तरलता लिए हमारे समक्ष आती है। बहते पानी के समान लता जी की आवाज भी हमेशा ताजा, निर्दोष, पवित्र रहेगी। युगों तक श्रोताओं को आप्लावित करती रहेगी।

लता जी किसी एक युग की नहीं है। उनका संगीत भी किसी एक युग तक सीमित नहीं हैं, यह तो निरंतर बहने वाली स्निग्ध धारा हैं। आज लता जी भले ही सशरीर हमारे बीच नहीं हैं पर तारों की भांति वे अमरत्व प्राप्त कर हमारी स्मृतियों में चुपके से, जाने–अनजाने में इतनी गहराई से रच–बस चुकी हैं कि उन्हें भुला पाना या स्मृतियों से ओझल करना हमसे कभी भी न हो पाएगा।

इति न हन्यते!

चारू तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

कार्यालयी कामकाज में हिन्दी

भाषा हमारी अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। विभिन्न क्षेत्रों में भाषा का रूप भी परिवर्तित हो जाता है। हम अपने दैनिक जीवन में सम्प्रेषण हेतु मौखिक व बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं। इसे हम जनसंचार भी कह सकते हैं जिसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की सूचनाओं को संप्रेषित करना होता है। जहां तक हिन्दी भाषा का प्रश्न है, तो हिन्दी के विभिन्न रूप कार्यालयी हिन्दी में प्रयुक्त नहीं हो सकते। कार्यालयी हिन्दी में पूर्णतः मानक एवं पारिभाषिक शब्द प्रयोग किए जाते हैं। इसे हम प्रशासनिक हिन्दी या कार्यालयीन हिन्दी कह सकते हैं जिसे कार्यालयों में सरकारी कामकाज के प्रयोजन से प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में, वह हिंदी जिसका प्रयोग प्रशासन, वाणिज्यिक, पत्राचार, व्यापार, चिकित्सा, योग, संगीत, कम्प्यूटर, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में होता है उसे कार्यालयी या कामकाजी हिंदी कहते हैं। प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, टिप्पण, अनुवाद कार्य, आलेखन आदि स्वरूप प्रशासनिक हिन्दी के अन्तर्गत आते हैं।

भारत के संविधान में हिन्दी को सरकारी कामकाज के प्रयोजन हेतु राजभाषा का दर्जा दिया गया है। राजभाषा का अर्थ है संविधान द्वारा स्वीकृत सरकारी कामकाज की भाषा। 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार कर संविधान में यह प्रावधान भी किया गया कि संविधान लागू होने के पंद्रह वर्ष तक सरकारी कामकाज के लिए अंग्रेजी का प्रयोग होना था, किन्तु बाद में संविधान संशोधन के द्वारा इस अवधि को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ा दिया गया। ष्भारतीय संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान उल्लेखित हैं जहां संघ के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग के संबंध में स्पष्टरूप से वर्णन किया गया है। इनमें देवनागरी में लिखित हिन्दी संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए राजभाषा, भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा, उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों में अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा, राजभाषा आयोग का गठन, संसदीय राजभाषा समिति का गठन, भाषायी अल्पसंख्यक वर्गों के लिए विशेष अधिकारी का नामांकन इत्यादि प्रमुख हैं।

इसके अतिरिक्त अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास हेतु निर्देश जारी करने का भी प्रावधान है जिसके अंतर्गत उल्लेख है कि हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार कर उसे भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जाए। हिन्दी के विकास का स्वरूप सामासिक हो ताकि संविधान की आठवीं अनुसूची में विर्निदिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए हिन्दी के भंडार में समृद्धि सुनिश्चित की जा सके। इसी प्रकार राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 तथा कार्यालयी हिन्दी के समुचित प्रयोग के संबंध में सरकार द्वारा समय–समय पर दिशानिर्देशों के अनुपालन से हिन्दी को कार्यालयों में प्रयोग की भाषा बनाया जा सके।

वास्तव में राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित करने के पीछे आरम्भिक उद्देश्य भी यही था कि भारत के सभी शासकीय कार्य 'कार्यालयी हिन्दी' के माध्यम से इसलिए किए जाएं जिससे कि भारत की अधिकांश जनता शासन द्वारा लिए गए नीतिगत निर्णयों से परिचित हो सके। इन नीतिगत निर्णयों का संबंध सीधे–सीधे आम नागरिक से होता है। ऐसे में यदि आम नागरिक तक सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों की जानकारी पूर्ण रूप से न पहुँच सके तो वह शासन की सुविधाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाएगा। सरकार का मुख्य कार्य देशवासियों का विकास करना है। वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान अभी तक विकासशील राष्ट्र के रूप में ही है और विश्व के कई ऐसे देश हैं जिनकी जनसंख्या भारत के एक छोटे से राज्य की जनसंख्या से भी बहुत कम है, किन्तु वे राष्ट्र विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आते हैं। उन राष्ट्रों ने अपनी राष्ट्र की प्रधान भाषा को ही अपने कामकाज की भाषा बनाया जिससे वहाँ का शासन तंत्र एक ओर तो नागरिकों से सीधा संवाद कर पाने में सक्षम हुआ, वहीं दूसरी ओर नागरिक भी अपनी ही भाषा में सरकार द्वारा बनाए गए नियमों और प्रावधानों को सहजता से समझकर अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुए।

जिस समय राजभाषा संबंधी प्रावधान विचारार्थ थे उस समय यह भी सुनिश्चित किया गया कि जहाँ भी राजभाषा हिन्दी में कार्य करते हुए कर्मचारी को परेशानी का सामना करना पड़े वहाँ अंग्रेजी के शब्दों को यथावत देवनागरी में लिख सकता है। चूँकि प्रशासन की अपनी सुनिश्चित शब्दावली होती है, ऐसे में अंग्रेजी के अनेक शब्दों का अनुवाद संभव नहीं हो

पाता। अतः उन शब्दों के स्थान पर किसी अन्य शब्द की अपेक्षाकृत अंग्रेजी के शब्द को देवनागरी में लिप्यंतरित कर उसका प्रयोग किया जा सकता है जिससे कि आम व्यक्ति उस पत्र के मंतव्य को समझ सके। इसलिए देखा जाए तो कार्यालयी हिन्दी का वास्तविक उद्देश्य समाज के बहुसंख्यक वर्ग तक शासन की नीतियों को सहज रूप से पहुँचाते हुए एक आम नागरिक को उसके अधिकारों के प्रति जानकारी देना, शासन और जनता के बीच सीधा–संवाद स्थापित करना तथा राष्ट्र के विकास में आम नागरिक की सीधी भागीदारी सुनिश्चित करना रहा है। कार्यालयी हिन्दी द्वारा प्रशासन की व्यवस्था में सामान्य नागरिकों को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कराना सहज है। इससे प्रशासन और जनता में प्रत्यक्ष संवाद संभव हो जाता है।

स्पष्ट है कि संवैधानिक दृष्टि से हिन्दी की स्थिति बहुत मजबूत है, किन्तु अंग्रेजी भाषा के आधिपत्य के कारण कार्यालयों में शतप्रतिशत सरकारी कामकाज हिन्दी में नहीं हो पा रहा है। व्यक्तिगत मनोस्थिति और इच्छाशक्ति के अभाव में हिन्दी में कार्य करने की झिझक को दूर करना थोड़ा कठिन प्रतीत हो रहा है। कुछ छोटे–छोटे उपायों से कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा दिया जाए: –

- साइन बोर्ड, नामपट्ट, काउन्टर बोर्ड, सूचना पट्ट आदि को हिंदी के साथ–साथ स्थानीय भाषाओं में तैयार करवाया जाए ताकि हिंदी जानने वालों को भी पढ़ने में कोई दिक्कत न हो।

- सभी पपत्र, दस्तावेज, मुद्रित सामग्री व अन्य लेखन सामग्री हिंदी में मुद्रित करवाई जाए।

- जहां तक संभव हो व्यावसायिक और व्यक्तिगत पत्र हिंदी में ही लिखे जाएं।

- विजिटिंग कार्ड द्विभाषी रूप (हिन्दी/अंग्रेजी) में छपवाए जाएं।

- यदि पूर्ण रूप से हिंदी में लिखना संभव नहीं है तो कुछ न कुछ तो हिंदी में अवश्य लिखा जाए।

- कंप्यूटर पर यूनीकोड द्वारा टाइपिंग की जाए जो बहुत आसान होती है जिसे बहुत जल्दी सीखा जा सकता है।

- अपने लेखन कार्य में आसान हिंदी का प्रयोग करें ताकि सभी लोग आसानी से समझ सकें। अच्छी हिंदी जानने वाले लोगों द्वारा कम हिन्दी जानने वाले लोगों की कठिनाई का पूरा ध्यान रखा जाए और अपने पांडित्य का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।

- हिंदी में लिखित किसी शब्द या पदनाम के समझ पाने में किसी कठिनाई का सामना किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में कोष्ठक में अंग्रेजी रुपान्तर लिख देना भी उपयोगी रहता है।

- अगर शुरुआत में हिंदी में लिखने में कोई झिझक अथवा कठिनाई हो तो इसे दूर करने के लिए आरंभ में छोटी–छोटी टिप्पणियां हिंदी में लिखनी चाहिए। अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा में सोचकर हिंदी में न लिखा जाए बल्कि हिंदी में ही सोच कर हिंदी में लिखने की कोशिश करनी चाहिए।

ऐसा संभव है कि शुरूआत में हिंदी में काम करने में आपको झिझक महसूस हो किन्तु निरंतर काम करते समय आप देखेंगे कि अंग्रेजी की तुलना में हिंदी सरल भाषा है तथा इसमें काम करना बहुत आसान है। इससे समय की बचत के साथ–साथ हमारी अभिव्यक्ति स्पष्ट और अधिक प्रभावी बनती है।

विक्रम सिंह
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

मानव चला तीसरे विश्व युद्ध की ओर

अपने अहंकार में भरा ये मानव
अब चला तीसरे विश्व युद्ध की ओर

काँप गए पृथ्वी के प्राणी
जनता करती चीख पुकार

बंद करो ये बम धमाके
ना करो मानवता पर वार

अपने अहंकार में भरा ये मानव
अब चला तीसरे विश्व युद्ध की ओर

लाशों के ढेर पर खड़ा ये मानव
भू–मंडलीय ऊष्मी करण का

देख पाया नही, कोई छोर, तेजी से बढ़ रहा
मानव अपने विनाश की ओर

अपने अहंकार में भरा ये मानव
अब चला तीसरे विश्व युद्ध की ओर

बड़े बड़े देश दुनिया में करते
हथियारों का व्यापार

मानव से मानव इस दुनिया में
ना जाने कब करेगा प्यार।

नरेंद्र चौहान
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

योग का परचम

श्रीमद भगवत गीता में
योगेश्वर श्री कृष्ण जी ने कहा है

हे! मानव तुम अपने जीवन
में योग बल अपनाओ

आओ प्यारे मित्रों हम अपने
जीवन में योग बल अपनाएंगे

परम योगी बन इस जीवन
को रोग मुक्त बनाएंगे

योग आसनों को प्यारे मित्रों
अपनी दिनचर्या में लाएंगे

योग द्वारा नकारात्मक विचारों
पर शीघ्र ही विजय पाएंगे

तनावग्रस्त मुरझाए चेहरों पर
फिर से मुस्कान लाएंगे

भारतीय संस्कृति को यारो
हम दुनिया में फैलाएंगे

योग आसनो का महत्व
हम दुनिया को समझाएंगे

विश्व स्तर पर प्यारे मित्रों
योग का परचम लहराएंगे

योग बल के दम पर मित्रों
अपने भारतवर्ष को
फिर से विश्व गुरु बनाएंगे।

नरेंद्र चौहान
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

कला और कलाकार

कला मानवीय जीवन का महत्वपूर्ण अंग तथा शिल्पकार है। कलाकार को समाज का ज्ञान होता है। वह अपनी बुद्धि और कौशल्य से कला का निर्माण करता है। समाज जीवन का दर्शन कलाकार की कला से होता है। संस्कृति का अनुभव भी कला की ऊँचाई और कलाकार की श्रेष्ठता से होता है।

कलाकार कला की निरंतर साधना करता है। निरंतर साधना और रसिक मन सृजनशीलता को विकसित करती है। कला की साधना अत्यंत कठिन और चिरंतन होती है। कला जीवन में सकारात्मकता निर्माण करती है, और जीवन में रंग भरकर जीवन को प्रोत्साहित करती है।

कला जीवन जीने का साधन है, इसके अतिरिक्त कला से जीवन में आनंद भर जाता है। कला की साधना में कलाकार व्यस्त और मशगूल रहता है। कला से पेट के साथ साथ मन भी भरता है और मानसिक तनाव कम होता है। कलाकार की कला ही उसकी पहचान बनाती है।

रविंद्रनाथ टैगोर कहते हैं, कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। हृदय की गहरी अनुभूति जब कला का रूप लेती है तो कलाकार का अंतर्मन आनंद से खिल उठता है। कला इतनी विशाल व विस्तृत है कि अनेक विद्याओं को अपने में समेट लेती है। कला एक ऐसी संपत्ति है जो सभी के पास होती है, पर इसका आभास हर किसी को नहीं होता। अगर आभास हो भी जाए तो किसी अपनों से या फिर परायों से दबाया जाता है।

कलाकार की कला उसकी पहचान होती है। कलाकार को बढ़ावा देना चाहिए, उसे सपोर्ट की भी जरूरत होती है। कलाकार को उसकी कला की कद्र और सम्मान का अहसास होना जरूरी है।

जीवन को परिवर्तनशील बनाने में कला का बड़ा योगदान है। परिवर्तनशीलता निसर्ग नियम और जीवन का अंग है। हर एक इन्सान कलाकार होता है। अपने भीतर के कलाकार को पहचानकर उसे प्रोत्साहित करके कला को बढ़ावा देकर संभालना चाहिए। जीवन जीना भी एक कला होती है। जीवन को समृद्ध और संपन्न बनाना, जीवन का मकसद समझकर जीना, जीवन रंजक बनके उसमें आनंद भरना, इन सभी बातों के लिए जीवन में कला की बहुत जरूरत होती है।

समाज जीवन में कला और कलाकार का उचित सम्मान होना चाहिए। पुराने जमाने में कलाकारों को राजाश्रय मिलता था। कलाकार सम्मानित जीवन व्यतीत कर सके ऐसी उसकी आर्थिक स्थिति होनी चाहिए।

कला में कौशल्य का महत्वपूर्ण स्थान है। कला में कौशल्य का होना जरूरी है। कला मानवीय भावनाओं का दर्पण है जिसमें मन के भाव प्रतिबिंबित होते हैं। कला का अविष्कार कौन–सा रूप लेता है ये कलाकार निश्चित करता है। जैसे संगीत गायन, नृत्य, चित्र, शिल्प, वास्तु, खेल इत्यादि के माध्यम से कला प्रस्तुत होती है।

कला रचनात्मक बुद्धि से प्रस्तुत की जाती है। मानवीय बुद्धि रचनात्मक और प्रखर होती है। इस बुद्धि की सहायता से इंसान रचनात्मक सृजनशील कला का अविष्कार करता है। जीवन ऊर्जा से भरपूर होता है और ऊर्जा जीवन कला के रूप मे उभरती है। नियमित कठिन साधना से कला कलाकार को उस ऊँचाई पर ले जाती है जहां पर कलाकार का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

कला जीवन को संवारती है। रोज के संघर्षमय जीवन में कला मन की थकान को दूर करती है। जीवन को प्रो. त्साहित करती है और मन को प्रसन्नचित रखती है।

वैशाली संजय केनेकर
छावनी बोर्ड, औरंगाबाद

योग उत्सव (19/05/2022)

अंतर्रा ट्रीय योग दिवस की ओर बढ़ते कदम ..

योग दिवस पर व्याख्यान (30/05/2022)

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022 (21/06/2022)

बंद दरवाजे

सबके घरों के दरवाजे
रहते थे सरे आम खुले
लोग भी थे सीधे साधे
और दिल के भले
लोगों का था मिलना जुलना

एक दूसरे के घर आना जाना
मिलजुल कर रहना और
एक दूसरे के काम आना
सरल सुंदर था जीवन अपना
पसंद था एक साथ बड़े परिवार में रहना
प्यार से रिश्तों को संजोना
थोड़े में खुश रहना
अब आया नया जमाना

जीने का नया बहाना
नए दौर का नया फसाना
टुकड़ों में परिवार का बिखर जाना
टूट गया सादगी भरा जीवन का सपना
नहीं रहा रिश्तों को निभाना
और प्यार से संजोना
शिक्षा समृद्धि के दौर में

आयी व्यस्तता जीवन में
रहने लगे लोग अपने बंद घरों में
बंद हुआ लोगों का
आपस में मिलना, बात दिल की करना
और दुःख दर्द अपने बांटना
बंद हुआ दरवाजा घर का
बढ़ गया बोझ दिल का

मानसिक तनाव और हृदय रोग का
और खर्चा हॉस्पिटल का
नकली आया जमाना
नहीं चाहता दुःख दर्द अपने बांटना
आनंद रिश्तों में खो जाना
और दरवाजे दिल के खोलना
मकसद जिंदगी का है समझाना
इंसान बनके है रहना
वरना मिनरल वाटर लगेगा पीना
और ऑक्सीजन सिलेंडर पर है जीना।

वैशाली संजय केनेकर
छावनी बोर्ड, औरंगाबाद

खुशकिस्मत कौन ?

आज माँ ने मुझे फिर डाँटा। वो हमेशा बस मुझे डाँटती रहती है, फालतू की बातों पर जैसे– "सामान इधर–उधर क्यों फैला रखा है, कम से कम कभी तो बिना कहे अपना होमवर्क खत्म कर लिया करो, जब देखो तब बस खेलते रहते हो, तुम हर चीज का नियम क्यो नहीं बांधते हो"। "ओफ! जब देखो तब सब मुझे टोकते और डाँटते ही रहते हैं जैसे कि इशु ये मत करो, वो मत करो" "अभी तुम्हें मोबाइल नहीं दे सकते, छोटे हो तुम, बड़े होने पर खरीद देंगे"। दिनभर सुनते रहो सबकी और पापा तो बस पूछो ही मत, कभी मेरी साइड नहीं बोलते बस पढ़ने की रट लगाए रहते हैं। "अब छठी कक्षा में आ गए हो, मन लगाकर पढ़ाई करो, तभी तो तुम अच्छे बच्चे बन पाओगे और अपने मम्मी–पापा का नाम रोशन कर पाओगे"। पक गया हूँ मैं ये सब सुनकर। कभी–कभी तो लगता है कि काश! मेरे मम्मी–पापा मुझे कभी यूँ रोकते–टोकते नहीं या फिर मेरे मम्मी–पापा मेरी बिल्डिंग के रोहन के मम्मी–पापा की तरह अमीर होते, ताकि मैं भी उसकी तरह महंगे कपड़े, खिलौने, मोबाइल लेकर बाकी सब पर रौब जमाता, पर मेरी किस्मत कहां इतनी अच्छी है।

शाम के 5 बज गए थे। मैंने जैसे ही बैट उठाया, माँ ने टोक दिया, "इशु! अंधेरा होने से पहले घर आ जाना"। मैंने बुरा–सा मुँह बनाया और चल दिया पैर पटकते हुए मैदान की तरफ। हम सब दोस्त क्रिकेट खेलने लगे। तभी एक नया लड़का आया, "हैलो! मैं चिंटू। क्या मैं भी तुम्हारे साथ खेल सकता हूँ?" हमने चिंटू को भी अपनी टीम मे शामिल कर लिया। धीरे–धीरे मेरी और चिंटू की दोस्ती बढ़ने लगी।

एक दिन शाम को चिंटू खेलने नहीं आया। मैं उसके घर उसे बुलाने गया। आंटी ने दरवाजा खोला, "बेटा! अभी कुछ दिन के लिए चिंटू अंकल के साथ बाहर गया है, जब आयेगा तो मैं तुमसे मिलने के लिए भेज दूँगी"।

चार दिन बाद चिंटू वापस आ गया। उसने पूरी बाजू की टी–शर्ट पहनी हुई थी। मैंने उसे टोका, "इतनी गर्मी है, तुमने पूरी बाजू की टी–शर्ट क्यों पहनी हुई है", तो उसने बाजू ऊपर करके अपनी चोट का निशान दिखाया, "उस दिन जब तुम घर आए थे तो मैं घर पर ही था, पर चाची ने तुमसे झूठ बोला। सफाई करते हुए मुझसे फ्लावर पॉट (फूलदान) गलती से टूट कर गिर गया तो चाची ने मेरा हाथ गर्म चिमटे से जला दिया ताकि मैं ये गलती दोबारा ना करूँ और ये निशान मुझे फिर ऐसी गलती दोबारा ना करने की याद दिलाता रहे। वो बाहर वालों के सामने बस मुझसे प्यार का दिखावा करती है। चाचा भी बस चुपचाप चाची की बात सुनते रहते हैं। तुम कितने लकी हो, तुम्हारे पास तुम्हारे मम्मी–पापा हैं। तुम्हें मेरी तरह अपने चाचा–चाची के साथ नहीं रहना पड़ रहा है"। चिंटू की बात सुनकर मुझे आज समझ आ गया कि मैं सच मे कितना लकी हूँ।

जितेंद्र डडवाल
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है
- महात्मा गांधी

ईश्वर को न मानने पर

मुझको तेरे वजूद पर यकीं भी नहीं,
मगर मेरे लब पर नहीं भी नहीं।
सोचता हूँ तो तू हर जगह है मौजूद,
देखता हूँ तो तू कहीं भी नहीं।

हम आजाद देश के आजाद नागरिक हैं, माँ बचपन में बताती थी। मगर आजादी होती क्या है? क्या बेड़ियों में जकड़े आदमी की बेड़ियाँ तोड़ देने का अर्थ उसे आजाद कर देना है? नहीं, मैंने तब ये सवाल कभी नहीं पूछा कि आजादी का अर्थ क्या है? मैं तब एक बालक था। ये सब पूछना तर्कसंगत नहीं लगता था। हालांकि माँ में आक्रोश उमड़ता रहता था। मैं आज पूछता हूँ कि माँ उस आजादी का अर्थ क्या था ? क्या उस आजादी का अर्थ आत्मा की आजादी नहीं था, सोचने की आजादी नहीं था, आस्था की आजादी नहीं था ? आस्तिकों की आस्था को चोट पहुँचाना अनैतिक माना जाता है, यह मैं भी मानता हूँ। मैं जानबूझकर कभी ऐसा नहीं करता। लेकिन किसी की अनास्था को चोट पहुँचाना क्या नैतिकता है ? ईश्वर को न मानने का अर्थ मेरे चरित्र, जीवन शैली और नैतिकता से क्यों जोड़ा जाता है, क्यों उन पर दबे–छिपे या खुले स्वर में संदेह जताया जाने लगता है ? क्या समाज की ईश्वर में आस्था न रखने वाले लोगों के प्रति कोई नैतिक जिम्मेदारी नहीं बनती ? क्या सवाल पूछना, स्वतंत्र होकर सोचना और भीड़ से अलग होना (वह इस प्रक्रिया में स्वतः हो जाता है, कोई भीड़ से अलग दिखने के लिए ऐसा नहीं करता) इतना बड़ा गुनाह है ?

घर में हवन हो रहा है। मैंने सुबह ही माँ से कह दिया था कि मैं ईश्वर में आस्था नहीं रखता, कम से कम वर्तमान में जिन भी रूपों के बारे में मैं जानता हूँ, उनमें से किसी में भी नहीं। मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि ईश्वर है या नहीं, वह हो भी सकता है, लेकिन मेरे मन में आस्था नहीं जग पाती। माँ के पास मेरी इन फालतू बातों के लिए समय नहीं था, सो मैंने संक्षेप में कह दिया कि मैं नास्तिक हूँ (हालांकि मैं नहीं जानता कि मेरी मान्यताएं नास्तिक होने के कितना निकट हैं) – माँ मुझे देखती रहती है और फिर मुझ पर लानते बरसाने लगती है– हमारे घर मे ऐसी संतान कैसे हो गई जो ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह कर रही है ? फिर समझाने का प्रयास करती है– बेटा, ऐसा नहीं बोलते, भगवान नाराज हो जाते हैं। इतना अभिमान अच्छा नहीं होता, इसका परिणाम बहुत बुरा होता है। इतनी बड़ी सृष्टि बिना किसी नियंत्रक के नहीं चल सकती। पता नहीं माँ, चल सकती है या नहीं, लेकिन जिस तरह चल रही है, उसे देखकर मेरे मन में इसके नियंत्रक के प्रति (यदि वह है) कोई श्रद्धा नहीं आती, तो मैं क्या करूँ ? माँ फिर नाराज हो जाती है – सदियों से सब लोग गलत नहीं हो सकते। क्या माँ, मैं अकेला ही नहीं हूँ, हजारों लोगों ने उसके होने पर सवाल खड़े किए हैं... माँ दुखी हो जाती है और 'भगवान' की तरफ से कहती है– मैं इस सिर को एक दिन उसी भगवान के सामने झुका दूँगी। जो ऐसा बोलते हैं, 'वो' उनको अपने सामने झुकने के लिए मजबूर कर देता है। माँ ने जैसे भविष्य देख लिया है और उसकी आँखों मे मुझ पर आने वाली असीम आपत्तियों के लिए चिंता ही चिंता है। माँ, यदि वह शक्तिशाली है ही तो वह आसानी से मुझे अपने सामने झुका सकता है, और हो सकता है कि झुका भी ले, लेकिन वह भय होगा, श्रद्धा नहीं। मैं न चाहते हुए भी एक न देने योग्य उदाहरण देता हूँ – ऐसे तो पूरे यूक्रेन देश को एक पड़ोसी ने अपने सामने झुका लिया है, तब क्या उन झुके हुए सिरों में उसके लिए तनिक भी श्रद्धा है? माँ ने समझाया, मानव इसी सृष्टि का अंश है और यह सृष्टि भगवान का ही अस्तित्व है। इसलिए इस सृष्टि के प्रत्येक मानव में भगवान समाहित हैं। हम इंसान इस धरती का वह महत्वपूर्ण अंश हैं जो इस सृष्टि मे व्याप्त परलौकिक शक्ति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। अपने आसपास प्राकृतिक रूप में जो कुछ भी उपलब्ध है, इसी में ही भगवान का अस्तित्व है। इंसान नहीं तो ज्ञान नहीं, ज्ञान नहीं तो किसी का अस्तित्व नहीं और अगर किसी का अस्तित्व नहीं तो भगवान नहीं।

मैं माँ से ज्ञान प्राप्त करके थोड़े समय के लिए समझ जाता हूँ।

आदिल प्रताप सिंह
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

जीवन में पुस्तकों का महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो ऐसे समाज में रहता है, जिसमें रहने के लिए उसे बहुत–सी बातों का ज्ञान होना जरूरी है, पुस्तकें हमें वही ज्ञान देती हैं। पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं। पुस्तकें ज्ञान अर्जित करने का सरल और सस्ता साधन हैं और इसके लिए हमें किसी पर निर्भर भी नहीं रहना पड़ता। पुस्तकें व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी हैं। पुस्तकें हमें संस्कारी और ज्ञानी इंसान बनाती हैं। हमारे व्यक्तित्व में सदगुण समाहित कर उसमें निखार लाती हैं। व्यक्ति को सभ्य बनाने तथा उसके जीवन के विकास में पुस्तकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुस्तकें जानकारी और प्रेरणा का भंडार होती हैं। ये व्यक्ति के जीवन से अज्ञानता के अंधकार को दूर करते हुए उसके जीवन को रोशन कर उसे सही रास्ता दिखाती हैं। इन्हें पढ़कर जीवन में कुछ महान कर गुजरने की कामना एवं भावना पैदा होती है। भारत की आजादी के संग्रामों में पुस्तकों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुस्तकें किसी भी विचार, संस्कार या भावना के प्रचार का सबसे सशक्त साधन सिद्ध हो सकती हैं।

पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र होती हैं। अच्छी पुस्तकें इंसान के लिए सदैव साथ देने वाली दोस्त होती हैं। अच्छी पुस्तकें हमें सही रास्ता दिखाने के साथ–साथ हमारा मनोरंजन भी करती हैं। बदले में वे हमसे कुछ नहीं लेती और न ही परेशान करती हैं। इससे अच्छा और कौन–सा साथी हो सकता है, जो केवल कुछ देने का हकदार है, लेने का नही? जब भी व्यक्ति उदास होता है, तो पुस्तकें उसका सहारा बनती हैं। ये उसकी रोजमर्रा की बोरियत को दूर भगाती हैं। जो आनंद पुस्तक पढ़कर मिलता है, वह ज्यादा लंबे समय तक असरदार रहता है। मनुष्य अपने एकांत पल को पुस्तकों के संग गुजार सकता है। इंसान के बुरे वक्त में, जब उसके रिश्तेदार व दोस्त भी साथ नही देते, तब पुस्तकें उसके हर अच्छे–बुरे वक्त में साथ देती हैं और जीवन की परेशानियों को भुलाने में उसकी सहायता करती हैं। कार्यालयों में भी पुस्तकालय बनवाए जाते हैं ताकि जिन अधिकारियों/कर्मचारियों की अध्ययन में रुचि होती है, वे फुर्सत के पलों मे अपनी पसंदीदा पुस्तकें पढ़ सकें। प्रायः यह देखा भी गया है कि काम के दबाव के चलते, पुस्तकें पढ़ने से कार्मिकों के कार्य करने की क्षमता में भी वृद्धि होती है।

पुस्तकें व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करती हैं। इनकी सहायता से व्यक्ति पुरातन जानकारियां प्राप्त कर सकता है। पुराने मंदिर और इतिहास की चीजें नष्ट हो जाती हैं, लेकिन हमारी पुस्तकों में सब कुछ सुरक्षित रहता है। पुस्तकें पढ़ते समय व्यक्ति इतिहास के विभिन्न कालों की यात्रा कर लेता है। गीता, रामायण जैसी पुस्तकें पढ़कर मन को परम शांति का अनुभव होता है। पुस्तकों के माध्यम से ही एक पीढ़ी का ज्ञान, दूसरी पीढ़ी तक पहुँच पाता है। मानव सभ्यता, वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं महान विभूतियों के जीवन की जानकारी पुस्तकों द्वारा प्राप्त की जा सकती है, जो हमारा मार्गदर्शन करती है। हमें उन विद्वानों के ज्ञान की प्राप्ति होती है जो शारीरिक रूप से आज हमारे बीच विद्यमान नहीं हैं। लेकिन उनका ज्ञान पुस्तक रूपी भंडार में आज भी जीवित है।

पुस्तकें अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की हो सकती हैं। अच्छी पुस्तकें अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण कर दृष्टिकोण में परिवर्तन लाती हैं, वहीं बुरी पुस्तकें हमें गलत राह पर ले जाकर हमें पथ भ्रष्ट कर सकती हैं। इसलिए हमें केवल अच्छी पुस्तकें ही पढ़नी चाहिए। अच्छी पुस्तकें पढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी हर मुसीबत का समाधान मिल जाता है। पुस्तकें हमारे लिए बहुत ही उपयोगी होती हैं। इनमें लिखी हर बात जीवन के किसी न किसी पड़ाव मे अवश्य काम आती हैं। पुस्तकों से प्राप्त हमारे ज्ञान रूपी खजाने को कोई चोर भी चुरा नहीं सकता।

आधुनिक युग में इंटरनेट का उपयोग इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि व्यक्ति कहीं भी बैठ कर, किसी भी प्रकार की पुस्तक पढ़ने का आनंद उठा सकता है। इंटरनेट ने पुस्तकों की महता में काफी वृद्धि की है। इंटरनेट के माध्यम से ई–बुक का जो आविष्कार हुआ है, वह पुस्तकों का ही आधुनिक रूप है। इंटरनेट पर पुस्तकें कई भाषाओं मे उपलब्ध होती हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि अनुसार किसी भी भाषा में पुस्तक पढ़ने में सक्षम हो जाता है। अतः कहा जा सकता है कि इंटरनेट ने लोगों तक पुस्तकों की पहुँच को और सुगम बना दिया है। हमें इस सुगमता का लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

हरप्रीत कौर
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

जीवन का मतलब तो, आना और जाना है...

ट्रिंग... ट्रिंग... ट्रिंग... ट्रिंग... फोन की घंटी बज रही है। अतुल गहरी नींद में था। फोन की घंटी बजे जा रही है। सुबह के पाँच बजे हैं। इतनी सुबह कौन फोन कर रहा है। अतुल आंखें मलते हुए फोन उठाता है। फोन के उस पार से एक काँपती हुई आवाज सुनाई देती है। "बेटा, मैं कल्याणी बोल रही हूँ"। आवाज सुनते ही अतुल की नींद गायब हो गई। "बेटा, मैंने तुम्हें शुक्रिया कहने के लिए फोन किया है। मांफ करना, सबेरे–सबेरे फोन कर रही हूं। तुम्हारी वजह से आज मैंने अपने बेटे को वापस पाया है। मुझे पता है कि इसके लिए तुम्हें बहुत बड़ी कीमत चुकनी पड़ी है। तुम्हारे लिए बहुत ही मुश्किल था यह निर्णय लेना। लेकिन तुम्हारे एक फैसले की वजह से आज मेरा बेटा जिंदा है। मैं तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा करूँ। बस इस बूढ़ी माँ का आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ रहेगा। आज तुमने मेरी गोद सुनी होने से बचाया है। भगवान तुम्हें हमेशा खुश रखे, तुम्हें खुशहाल जिंदगी मिले, हमेशा ईश्वर से मैं यही प्रार्थना करूंगी। अब तुम भी मेरे बेटे हो।"

अतुल धन्यवाद कह कर फोन रख देता है। अतुल की आँखों में आंसू थे। वह आंखें बंद कर लेता है। आँखों के कोनो से आंसू की बूंदें टपकती हैं। उसकी आँखों के सामने कुछ यादें वापस आने लगती हैं। बस चंद दिनों पहले घटित हुए एक घटनाक्रम उसकी आँखों के सामने आने लगा।

सबसे घिनौना साल 2020 रहा जब कोरोना का कहर पूरी दुनिया में फैल गया था। हजारों लोग मारे जा रहे थे। चारों ओर हाहाकार था, मातम का माहौल था। हॉस्पिटलों में कोरोना के मरीजों की संख्या अनगिनत थी। कई स्थानों को मेडिकल वार्ड बना दिया गया था। प्रतिदिन हजारों की संख्या में मौतें हो रही थीं और उतनी ही संख्या में लोग कोरोना से पीड़ित हो रहे थे। लाखों लोग कोरोना महामारी की चपेट में आकर हॉस्पिटल में दाखिल हो रहे थे। उन मरीजों में से एक थे – अतुल के पिताजी। उनकी उम्र करीब 75 साल होगी। कोविड पॉजिटिव – कोरोना इन्फैक्टिड थे। उनकी हालत बहुत खराब थी। अतुल उन्हें हॉस्पिटल ले जाता है। उनकी हालत इतनी खराब थी कि उन्हें ऑक्सिजन देकर अलग वार्ड में रखा गया। तुरंत संक्रमण फैलने के कारण कोरोना मरीजों को अन्य मरीजों से बिलकुल अलग रखा जाता था। डाक्टरों का मानना था कि ऑक्सीजन हटाने से मरीजों की मौत भी हो सकती है।

अतुल अपने माता–पिता की इकलौती संतान थी। वह अपने पिता को हर हाल में बचाना चाहता था लेकिन कोरा. ना का कहर सब पर बरपा। बूढ़े, बच्चे, जवान सभी इसकी चपेट में आए। इसने किसी को नहीं छोड़ा। लाखों लोगों को हॉस्पिटल द्वार तक पहुंचाया। जो नसीब वाले थे वे वापस घर गए, शेष श्मशान।

इसी महामारी के दौरान कल्याणी देवी अपने 30 साल के बेटे को लेकर हॉस्पिटल आती है। उसकी हालत भी बहुत बुरी होती है। उसका ऑक्सीजन स्तर कम हो जाता है। अगर तुरंत ऑक्सीजन नहीं दिया गया तो उसे बचाना मुश्किल था। इस दौरान हॉस्पिटल की स्थिति इतनी खराब थी कि सबको यह सुविधा देना संभव नहीं हो रहा था। देशभर में ऑक्सीजन की कमी हो रही थी। डॉक्टर–नर्स सब लोग परेशान थे। मरीजों की सेवा कैसे करें, उन्हें बस यही चिंता थी। दूसरी ओर मृत्यु का तांडव जारी था। लोग मरे जा रहे थे। शव जमा होते जा रहे थे एवं प्रशासन की टीम द्वारा अंतिम संस्कार किया जा रहा था। लोगों को उनके परिजनों का मृत शरीर तक अंतिम संस्कार के लिए नहीं सौंपे जा रहे थे। अपनों को अंतिम बार देखना लोगों के नसीब में नहीं था। शायद इतिहास में इतनी बड़ी महामारी का सामना कभी नहीं किया गया होगा। कोरोना रूपी राक्षस सबको अपनी चपेट में ले रहा था। इस कोरोना का कहर सिर्फ आम आदमी पर ही नहीं बरपा बल्कि बड़े–बड़े फिल्म स्टार, गीतकार, खिलाड़ी से लेकर बड़े–बड़े बिजनेसमैन आदि भी इसके शिकार हो रहे थे और मौत की नींद सो रहे थे।

एक समय ऐसा भी आया जब लोग घरों में बंद हो गए। बच्चों को भी अपने ही घरों में कैदी बनना पड़ा। बच्चे स्कूल–पार्क नहीं जा पा रहे थे। बड़े दफ्तर नहीं जा पा रहे थे। वृद्धजन मॉर्निंग वाक पर नहीं निकल पा रहे थे। इसी दौरान वर्क फ्राम होम का कल्चर भी देखने को मिला। सबके मुंह पर मास्क, पास से यदि कोई रिश्तेदार भी निकल जाए तो पहचानना मुश्किल था। पड़ोस में यदि किसी को भी कोरोना हो जाए तो अन्य जन अपना दरवाजा बंद रखते थे।

देश की अर्थव्यवस्था चौपट। रेल बंद, वायुयान बंद। लॉकडाउन की घोषणा होती है। दिल्ली में रहकर काम करने वाले नंगे पैर अपने गंतव्य स्थल तक जा रहे थे परिवार के साथ। रोज कमाकर खाने वाले भूखे मर रहे थे। लेकिन इस बुरे समय में कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होंने अपना जीवन दांव पर रखकर देश का भविष्य, एक जीवन को बचाना ज्यादा जरूरी समझा। और ऐसा ही कुछ हुआ था अतुल के साथ।

हॉस्पिटल में जब अतुल के पिता कल्याणी देवी की इकलौती संतान नैतिक को मरता हुआ देखते हैं, जो उनके पास के बेड पर था, तो परेशान हो जाते हैं। डॉक्टर परेशान थे क्योंकि उसे भी ऑक्सीजन की सख्त जरूरत थी। वह भी कोविड पॉजिटिव था। हालत गंभीर, सांस की तकलीफ। उनके पास मोबाइल था। वह अपने बेटे से मोबाइल पर कहते हैं– "बेटा मैं तो बूढ़ा हो चुका हूं। मुझे जितनी दुनिया देखनी थी मैंने देख ली। मैंने अपने हिस्से की जिंदगी जी ली। लेकिन यह तो अभी जवान है, इसने अपनी पारिवारिक जिंदगी की शुरुआत की है। इसे अभी लंबा जीवन जीना है। अगर मेरे चले जाने से इसका जीवन बच सकता है तो तुम मुझे इजाजत दो ताकि नैतिक अपने परिवार के साथ रह सके। अपना जीवन जी सके, अपने परिवार का दायित्व उठा सके। अगर उसकी बूढ़ी मां के सामने उसका ये जवान बेटा मर जाता है तो उस मां का जीवन मृत्यु से भी भयानक हो जाएगा। लेकिन मुझे पता है कि तुम बहुत मजबूत हो। मेरे बाद तुम अपने परिवार की जिम्मेदारी बखूबी निभाओगे और एक काबिल बेटा बनकर दिखाओगे। एक दिन शायद तुम्हें अपने पिता पर गर्व हो कि मेरे पिता जी ने अपना जीवन किसी को बचाने के लिए त्याग दिया।"

अतुल नीचे रिसेप्शन में बैठा था। उसकी आंखों से झर–झर आंसू बहने लगे। मोबाइल उसके हाथों मे था, उसके हाथ काँपने लगे। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या कहे पिताजी को। वह उन्हें इस तरह कैसे अलविदा कह सकता है। उसके पिताजी उसके लिए सब कुछ हैं। उसकी मां के इस दुनिया से चले जाने के बाद पिता जी ने ही मां व बाप, दोनों का फर्ज निभाया है। आज कैसे वह अपने पिता को ऐसे ही चले जाने की इजाजत दे सकता है। वह उनके शब्द बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था जो उसके शरीर को सुन्न कर चुके थे। वह अपने पिता को समझाता है। उसने कहा– "पापा, मैं आपके बिना कैसे रहूँगा? आप ऐसा मत बोलिए, मैं आपको कैसे जाने दूं।" पिताजी ने कहा– "मुझे नहीं पता था मेरा बेटा इतना कमजोर है। मैंने तो सोचा था कि मेरा बेटा हर परिस्थिति में अपने आप को कभी टूटने नहीं देगा, वह मेरी तरह ही मजबूत है। आज तुम्हें ऐसे देखकर मुझे बहुत दुख हो रहा है। क्या मैंने तुम्हें यही सिखाया है। परोपकार भी हमारा धर्म है, कर्तव्य है। तुम मेरी बात मानो, डॉक्टर से बात करो। मेरा ऑक्सीजन हटाकर उस बच्चे को दे दो। उसके पास समय बहुत कम है। उसे लम्बी जिंदगी जीना है।" अतुल समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे, क्या न करे। लेकिन उसके पापा ने उसकी एक न सुनी। आखिरकार अतुल को यह अहम फैसला लेना ही पड़ा। पिताजी से ऑक्सीजन हटाकर नैतिक को दे दिया गया। उसके प्यारे पापा चंद घंटों में ही उसकी आँखों के सामने चल बसे। वह कांच की मोटी–सी चादर के बीच से बस उन्हें आखिरी बार देख रहा था। उसने गौर से देखा कि उसके पिता भी उसकी ओर देखकर मुस्कुरा रहे हैं। अतुल के आंसू रुक नहीं रहे थे।

अतुल अपने पिताजी का अंतिम संस्कार भी नहीं कर पाया क्योंकि प्रोटोकॉल के अनुसार कोविड मरीजों के शव घरवालों को सौंपे नहीं जा रहे थे। आज अतुल की आँखों में आंसू हैं लेकिन उसे इस बात का गर्व भी है कि वह एक साहसी पिता की संतान है, जिनका त्याग किसी महापुरुष से कम नहीं था। किसी ने बहुत खूब कहा है :–

कुछ पाकर खोना है, कुछ खोकर पाना है, जीवन का मतलब तो आना और जाना है।

सुबह के सात बज चुके हैं। अतुल की पत्नी चाय लेकर आती है और उसे चाय का प्याला देती है। अतुल चाय पी रहा था पर उसकी आंखें नाम थी और आंसुओं की बूंदों में चमक।

शाहिना खातून
छावनी बोर्ड, बैरकपुर

पछतावा

राजवीर मंदिर में बैठे–बैठे कुछ सोच रहा है। तभी एक व्यक्ति आता है, उसके हुलिये को देख वह चौंक जाता है। कह सकते हैं – वह एक मुस्लिम है, वह मंदिर में आकर पूजा करता है। एक सवाल दिमाग पर दस्तक देता है – एक मुस्लिम, मंदिर में कैसे ?

वहीं एक सवाल राजवीर को उसकी सोच से बाहर निकालता है और वह उस शख्स की तरफ देखता ही है कि वह शख्स उस अनपुछे सवाल को भाँप लेता है तथा वहीं मंदिर की दहलीज पर राजवीर के पास बैठ जाता है तथा खुद ही कहता है, मेरा नाम अशफाक है मैं मुस्लिम समाज से हूँ, रोजाना मंदिर आकर पूजा करता हूँ। राजवीर यह सुनकर आश्चर्य से पूछता है, ये सब अनोखा है, क्या इसके पीछे कोई कारण है ? अशफाक मुस्कुराते हुए जवाब देता है, बरखुदार ! हरेक बड़े काम या बदलाव के पीछे कोई वजह जरूर होती है। यहाँ भी है, हमारी बीवी हिन्दू थी। उन्होंने हमारे धर्म को दिल से अपनाया। यही एक उम्मीद उनकी आखों में हमारे लिए भी थी, पर हम जानकर भी अंजान बने रहे क्योंकि ये हमारी शान के खिलाफ जो था। वो जीवन भर हमारे खातिर अपने भगवान से दूर रही और एक दिन वो हमसे दूर अपने भगवान के पास चली गई। उन्होंने हमें एक खत लिखा था जो उनके इंतकाल के बाद हमें मिला। उसमें लिखा था कि उन्हें अपने ईश्वर से बहुत प्रेम था। वो हमसे छिपकर यहाँ इस मंदिर में आया करती थी। हमें बुरा न लगे, इसलिए कभी बोल नहीं पाई। परंतु धोखा नहीं देना चाहती थी, इसलिए खत लिख दिया। उन्होंने हमारे प्यार, हमारे अभिमान के खातिर अपनी इच्छा कभी जाहिर नहीं की परंतु मरते–मरते वो हमें यह सच बता कर गई। तब हमें प्यार की कीमत समझ आई। इसलिए उनके जाने के बाद ही सही, परंतु हमने उनकी वो एक इच्छा पूरी की। अशफाक की बात खत्म हो जाती है। दोनों कुछ देर खामोश बैठ जाते हैं।

अशफाक की बातों से राजवीर के चेहरे पर बैचेनी सी है, जिसे देखकर अशफाक राजवीर से पूछता है, जनाब ! आप कुछ परेशान से लग रहे हो। राजवीर कुछ असहज–सा हो जाता है और कहता है, नहीं ! ऐसा कुछ नहीं। अशफाक कहता है, बरखुदार ! आपकी बैचेनी देख कर कह सकता हूँ आप किसी सच से ही भाग रहे हो। राजवीर तेजी से वहाँ से उठकर जाने लगता है, जैसे अशफाक ने उसकी कोई चौरी पकड़ ली हो। अशफाक उसे रोकता है परंतु राजवीर तेजी से वहां से निकलकर अपनी कार में बैठकर चला जाता है।

राजवीर के दिमाग में अशफाक की सारी बातें घूमने लगती हैं। राजवीर को रातभर नींद नहीं आती। सुबह होते ही वह फिर उसी मंदिर में जाकर बैठ जाता है। फिर से उसकी मुलाकात अशफाक से होती है। अशफाक राजवीर के पास आकर बैठ जाता है। अशफाक समझ रहा है कि राजवीर उससे कुछ कहना चाहता है, परंतु अशफाक चाहता है कि राजवीर खुद अपने अभिमान को तोड़कर सच उनके सामने रखे जिससे वो भाग रहा है। किन्तु वहीं राजवीर चाहता है कि अशफाक उससे आगे से सवाल करे। राजवीर कुछ नहीं बोल पाता। दो–तीन दिन तक यही चलता रहता है। आखिरकार एक दिन राजवीर खामोशी के दीवार तोड़कर बोलता है– असल में मेरी नौकरी में थोड़ी–सी दिक्कत है, बस इसीलिए परेशान हूँ। अशफाक जोर–जोर से हंसने लगता है, बरखुदार ! इतने दिनों बाद अपनी खामोशी तोड़ी भी तो झूठ बोलने के लिए। मियां ! हमारे बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं। आपका चेहरा साफ कह रहा है कि आप खुद से खफा हैं। खुद की गलती मानने की हिम्मत नहीं है आप में। आप इस पुरुष प्रधान समाज से वही पुरुष हैं, जो अपने मन रूपी अकड़ में इतने जकड़ गए हैं कि सच को भी स्वीकार नहीं कर पाते। अशफाक राजवीर की उसके ही असली रूप से पहचान करवाता है।

राजवीर के दिल पर एक बोझ है जिसे वो स्वयं से भी खुलकर नहीं कह पा रहा है और आज वह अपने जीवन के उस एक पहलू को अशफाक के सामने रखते हुए कहता है–

मैं एक मॉडर्न लड़की से शादी करना चाहता था। परंतु मेरे माता–पिता ने मेरी शादी गाँव की लड़की शिखा से करवा दी। मैं उससे ठीक से बात तक नहीं करता था। वह मेरे परिवार के साथ ऐसे घुल मिल गई थी, जैसे बरसों से उनके साथ रह रही हो. मुझे ये भी पसंद नहीं आ रहा था। फिर भी वो मेरी हर जरुरत को, बिना मेरे कहे पूरा कर देती थी. मैं तरक्की कर रहा था। मुझे अपने आप पर बहुत अभिमान था। एक दिन नशे में धुत घर आकर, मैंने शिखा के साथ बद्सलुक्की। मैंने कहा– तुम मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी भूल हो। शर्म आती है मुझे, जब तुम्हे पत्नी कहना पड़ता है। मैं बोलता ही गया, शिखा के लिए यह सब नया नहीं था।

पर मेरे माता–पिता की लिए ये एक कड़वे घूंट के समान था। बिना मुझसे बात किये वो शिखा को अपने साथ ले गए। मैंने ऐसे बिहेव किया, जैसे काले पानी की सजा से मुक्ति मिल गयी हो। जाते वक्त शिखा से मेरी मेज पर एक डायरी रखी थी, जिसमे मेरी सारी जरूरतों की लिस्ट थी। यह देखकर मुझे गुस्सा आ गया– क्या समझती है वो खुद को ? मैं क्या उस पर डिपेंड करता हूँ ? फिर मैंने सोचा– मैं क्यूँ चिड़ रहा हूँ। वो तो थी ही गवांर, अब चली गयी। मैं आजाद हूँ, ऐसा सोच मैं ऑफिस चला गया। ऑफिस में लंच ब्रेक में जैसे ही मैंने टिफिन खोला, मैंने उस महक को मिस किया जो रोजाना मेरे थके चेहरे पर मुस्कान बिखेर देती थी। एक पल के लिए मुझे एक अजीब–सी कमी महसूस हुई। पर इस वक्त मुझे अपनी आजादी का गुमान ज्यादा था।

समय गुजर रहा था। मैं अपनी ही जरुरत की लिए डायरी पर डिपेंड करता था। कमी का कुछ अहसास तो था, पर इगो मेरे सामने आ जाता और मैं फिर अपनी अकड़ में जीने लगता। मैं परेशान जब हो गया, जब मेरा वर्किंग परफोर्मेंस बिगड़ने लगा। हमेशा अपनी प्रोग्रेस के लिए खुद को सारा क्रेडिट देता था। मैं ये मानना ही नहीं चाहता था कि मेरी प्रोग्रेस में शिखा का भी पूरा हाथ था। उसी के कारण मैं अपने जीवन की कई छोटी–बड़ी परेशानियों और जिम्मेदारियों से बहुत दूर था और केवल अपने काम पर फोकस करता था।

बेस्वाद खाने में, मुरझाये फूलों में, बिखरे घर में, हर उस जगह, जहाँ मैं शिखा को देख चिड़ता था, उसे गंवार कहकर निकल जाता था। मुझे उसकी कमी महसूस होने लगी थी, पर ये मान कैसे लेता।

एक दिन मन भारी हो गया, फिर मैंने माँ को कॉल किया। वो मेरी आवाज से ही समझ जाती थी कि मैं परेशान हूँ, पर समझते हुए भी माँ ने मुझे इग्नोर कर दिया और कहा कि शिखा ने दूसरी शादी का फैसला कर लिया है। यह सुनकर मुझे और गुस्सा आ गया और मैंने कॉल कट कर दिया।

कुछ दिनों पहले ही मुझे डाक से तलाक के कागज मिले। पता नहीं क्यों मैं खुश नहीं हूँ, मैं चाहता तो यही था कि शिखा मेरी जिंदगी से दूर हो जाये पर आज मैं बैचेन हूँ।

अशफाक थोड़ी देर रुक कर कहता है– अब तुम क्या सोच रहे हो ? राजवीर कहता है– शिखा मुझसे प्यार करती थी, फिर वो कैसे दूसरी शादी के लिए सोच भी सकती हैं ? अशफाक कहता है– वाह मियां ! क्या अभी भी वो आपसे पूछेगी कि आगे बढ़ूं या नहीं ? आज जब उसकी अहमियत पता चल गयी है, तब भी उससे सच कहने से झिझक रहे हो। सब कुछ सामने है पर फिर माफी मांगने मैं खुद को छोटा महसूस कर रहे हो मियां ! समझ लो अगर अब भी अपने इगो में रहे, तो फिर मौका नहीं मिलेगा।

दोस्तों आदमी का यह इगो ही उसे जिंदगी से हरा देता है। राजवीर सब जनता है, पर उसके अहम के कारण वो शिखा से बात नहीं कह पा रहा है। शायद उसे डर है कि इस बार शिखा उसे ना न कह दे।

अशफाक राजवीर को झंझोड़ कर कहता हैं– जब मैं अशफाक होकर मरी हुई बीवी के खतिर मंदिर जा सकता हूँ, तो क्या तुम एक सच स्वीकार नहीं कर सकते ?

राजवीर को अशफाक की बात दिल पर लग जाती हैं। वो कॉल तो नही, पर शिखा को एक मैसेज करता है। मैसेज डिलीवर होते ही, उधर से कॉल आ जाता है। दोनों के बीच लम्बी बात होती है और यह एक लम्बा कॉल दोनों को वापस मिला देता है। दोस्तों एक टेक्स्ट के बाद शिखा एक पल नहीं रूकती और कॉल कर लड़ती है। यह एक औरत का दिल है, वो जिससे प्यार करती हैं, उसे कभी नहीं झुकाती और वहीँ एक आदमी, हर उस औरत को झुकता है, जो उसे प्यार करती है।

कहानी से शिक्षाः "वक्त किसी का बंधक नहीं, वक्त रहते काम हो जाये तो वह अमूल्य है, वरना पछताने के अलावा कुछ नहीं रह जाता।" जीवन में जो भी मिले उसे स्वीकारने की कोशिश करें, जरुरी नहीं हर चीज जो आप चाहते है वही आपको मिलेगा। लेकिन जो आपको मिला है, वह आपकी किस्मत है जिसे बुरा बनाना केवल आपके हाथ में है।

संजय कुमार ओझा
छावनी बोर्ड, बैरकपुर

द ग्रेट हिमालयन ट्रैवलर्स

24 अक्टूबर 2021, रविवार को आनंद बाजार पत्रिका में प्रकाशित हुआ कि लामखाग पास में ट्रेकिंग अभियान में गए 5 बंगालियों का शव मिला। अतः उन लोगों को याद करते हुए और उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मेरी यह भ्रमण गाथा "द ग्रेट हिमालयन ट्रैवर्स 2013" प्रस्तुत करता हूँ।

21 मई 2013 को कमरहाटी ट्रेकर्स एसोसिएशन के 11 सदस्य लामखागा पास ट्रेकिंग अभियान कोलकाता से शुरु करते हैं। मैं इस अभियान का क्वाटर मास्टर था। इस अभियान में 5 जन प्रशिक्षण प्राप्त सदस्य थे एवं अभियान इंडियन माउंटेनियरिंग फाउंडेशन, नई दिल्ली से अनुमोदन प्राप्त करने के बाद संयोजित हुआ था।

लामखागा पास हिमालय में बहुत ही जनप्रिय माउंटेन ट्रैकिंग रूट है। यह रास्ता भारत चीन बॉर्डर के धौलाधर रेंज के साथ उत्तर पूर्व में गड़वाल और हिमाचल प्रदेश को जोड़ता है। इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है।

इस पास की ऊंचाई 17320 फीट है एवं कुल ट्रैकिंग पथ 125 किलोमीटर है। हरसिल 2620 मीटर से छिटकुल (हिमाचल प्रदेश) जाने में कुल 10 दिनों का समय लगता है। वहाँ जाने का सबसे अच्छा समय मई से सितम्बर तक है। हम लोगों का यात्रा पथ उत्तरकाशी, हरसिल, गंगनानी, कायर कोटी, सूखताल, लामखागा पास, गदार, धमूती, रानी कांदा–ि छटकुल (हि.प्र.) था क्योंकि यह क्षेत्र भारतीय सेना के अधीन है। इसलिए उत्तरकाशी उत्तराखंड के उपकमिश्नर से इनर लाइन परमिट लेना पड़ता है।

उत्तरकाशी पहुंचकर हम लोगों ने अपने उपयोग के लिए खाद्य सामग्री, जलाने की चीजें, गाइड और मालवाहक की व्यवस्था की। अगले दिन सुबह–सुबह बस द्वारा हरसिल जाने के लिए यात्रा आरंभ की। हरसिल पहुंचकर सामान्य जलपान करने के बाद मालवाहक को समान आदि देकर ट्रैकिंग आरंभ की। प्रथम दिन 27.05.2013 को हम लोगों को गंगनानी जाना था जिसकी दूरी 8 किलोमीटर है और यहां तक जाने 5 में घंटा समय लगता है एवं प्राकृतिक दृश्य का आनंद उठाते हुए अपने गंतव्य तक पहुंच जाते हैं और वहां हम अस्थाई तंबू और रसोईघर तैयार करते हैं और रात गुजारते हैं।

28.05.2013 को सुबह नींद से उठने और नित्य कर्म करने के बाद, लंच पैक संग लेकर हम अपने कैंप जाने के उद्देश्य से तैयार हो जाते हैं। आज का गंतव्य स्थान है– कायर कोटी जिसकी दूरी 14 किलोमीटर है और वहां पहुंचने में 7 घंटे समय लगता है। आज ही हम लोगों को बहुत चढ़ाई करना और उतरना पड़ेगा तथा ग्लेशियर को पार करके 3480 मीटर ऊंचाई पर जाना होगा। चूंकि 10000 फुट ऊंचाई पर जा रहे हैं वहां पर जिनुफर को छोड़कर और कोई पेड़ दिखाई नहीं देता है। स्वाभाविक है चलते समय हमें सांस लेने में लकलीफ हो सकती है। शाम को 4.00 बजे दिवतीय कैंप बोल्डरिंग जोन में स्थापित करते हैं। इस कैंप में हम लोग एक दिन एक्लीमेटाइजेशन के लिए आराम करते हैं। प्रकृति के साथ ट्रेकरों का यह सामंजस्य बहुत आवश्यक है अन्यथा हमें बहुत सारी मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। यदि कोई एक सदस्य हाई एल्टीट्यूड पर बीमार पड़ जाता है तो यह अभिमान आधे रास्ते में ही समाप्त कर वापस आना पड़ता है।

30.05.2013 को प्रातः 8.00 बजे नित्य कर्म करने के बाद सभी लोग कुछ ड्राई फूड साथ लेकर तीसरे कैंप के लिए तैयार हो जाते हैं। आज का कैंप सुखताल में है जिसकी दूरी 16 किलोमीटर और यात्रा कवर करने में 9 घंटे समय लगता है एवं 4420 मीटर की ऊंचाई पर आइस फील्ड पर यह कैंप बनाते हैं। पहाड़ों पर शाम थोड़ी देर में अर्थात शाम 7.00 बजे ही अंधेरा हो जाता है। चूँकि खतरनाक स्थान पर हम रात बिता रहे होते हैं इसलिए 7.30 बजे ही रात्रि भोजन समाप्त कर हम अपने तंबू में चले जाते हैं।

31.05.2013 को पास को पार करने की खुशी में टीम के सदस्यगण सुबह 8.00 बजे तक आवश्यक सामान लेकर यात्रा आरंभ करते हैं, क्योंकि आइसफील्ड में थे इसलिए आज का रास्ता हमें जल के साथ तय करना है। समस्त रास्ता ही ग्लेशियर जोन को पार करके 17320 फुट अर्थात 5381 मीटर की ऊंचाई पर चढ़ना होगा। बर्फ के ऊपर से चलना पड़

रहा है इसलिए कुछ दूर चल कर फिर थोड़ा सांस लेकर चलने की क्षमता को संचय करना पड़ रहा है। आज की यात्रा कभी 45 डिग्री या 55 डिग्री ग्रेडिएंट पर है और अंत में हम सभी पास के नीचे पहुंच जाते हैं। इसके बाद हमारे एक सदस्य और एक गाइड रोप अप करके आगे बढ़ते रहते हैं और फिक्सड रोप के माध्यम से 65 डिग्री ग्रेडिएंट को पार कर दोपहर 12.00 बजे पास के ऊपर पहुंच जाते हैं। यहां पर दिन के समय तापमान 5 डिग्री सेल्सियस से 8 डिग्री सेल्सियस और रात में माइनस 2 डिग्री सेल्सियस से 6 डिग्री सेल्सियस तक रहता है।

आज हम लोग 15 किलोमीटर रास्ता तय करके धुनधार पहुंच जाएंगे और जिसकी ऊंचाई 4876 मीटर है और इसको पार करने में 4 घंटे समय लगता है।

इसके बाद पास से नीचे उतरने की बारी है। पास के ऊपर से फिक्सड रोप तैयार करते हैं। पास के ऊपर जाने के मुकबाले पास से नीचे आना ज्यादा खतरनाक है। हम लोगों की रस्सी 80 मीटर होने के कारण कुछ ना कुछ समस्या रही। अंत तक कुछ सदस्य और मालवाहक रस्सी का प्रयोग न करके गिल्सीडिंग कर नीचे उतर आए। रात बिताने के लिए शाम को 4.00 बजे चौथे कैंप की स्थापना की गई।

01.06.2013 को पहले की ही तरह नींद से उठ कर 8.00 बजे तक नित्य कर्म करने के बाद डूमति के लिए यात्रा आरंभ करते हैं। यह यात्रा 15 किलोमीटर की थी और इसमें 7 घंटे समय लगता है। बोल्डरिंग जोन के बीच से आज की यात्रा चढ़ाई और उतराई की है क्योंकि चढ़ाई और उतराई करते हुए हम आगे बढ़ रहे थे, इसलिए रास्ते में थोड़ा ज्यादा विश्राम करना पड़ रहा था। आज हम 3720 मीटर की ऊंचाई पर उतर आए हैं यहां पर ऑक्सीजन भी बहुत थी। इच्छा थी कि डूमति नाला पार करने के बाद हम कैंप लगाएं। पहाड़ों में 12:00 बजे के बाद नाले का पानी बढ़ता रहता है। इस नाले का बहाव इतना तेज था कि हम लोग उस दिन उस नाले के किनारे ही कैंप लगाते हैं। 02.06.2013 का दिन हम लोगों के इस अभियान का अंतिम दिन था एवं हम लोग रानी कांडा होकर चिटकुल पहुंच जाएंगे जिसकी दूरी 19 किलोमीटर है और इसमें 10 घंटे समय लगता है। प्रातः नित्य कर्म करने के बाद पीठ में बैग लेकर डूमती नाला को पार करते है। चूंकि बर्फ का पिघला हुआ पानी है इसलिए उसमें पांव डालते ही ऐसा लगता है कि पांव कटा जा रहा है। इतना कष्ट झेलने के बाद भी हम बहुत आनंदित हैं क्योंकि पहली बात तो यह है कि हम स्वस्थ शरीर के साथ वहां से वापस लौटे हैं। दूसरी बात यह है कि सम्पूर्ण रूप से अब नीचे उतर जाएंगे तथा होटल में रहेंगे और खाना खाएंगे। खैर जो भी हो, रास्ते में चलते–चलते थोड़ा विश्राम और बीच–बीच में कुछ ड्राई फ्रूट खाना और प्राकृतिक दृश्य को अपने मन में समा लेते हैं। यात्रा के दौरान कभी नहीं खाने वाले फूलों के अनेक बगीचे और झरने दिखते हैं। शाम को 6.00 बजे तक थके हारे और भूखे हम वापस लौट कर चिटकुल में आते हैं। चिटकुल में दो रात विश्राम करके हम अपने घर रवाना हो जाते हैं।

इस ट्रेनिंग रूट का निर्धारण श्री रतनलाल विश्वास महोदय के साथ विचार–विमर्श करके किया जाता है। उनकी सलाह और हम लोगों के सार्थक प्रयास से यह अभियान सफल रहा।

के आर दत्ता
छावनी बोर्ड, बैरकपुर

आदमी की औकात

बस इतनी–सी है आदमी तेरी औकात
एक बूढ़ा बाप शाम को मर गया,
अपनी सारी जिन्दगी अपने परिवार के नाम कर गया,
कुछ रोने की सुगबुगाहट हो रही थी,
तो कुछ फुसफुसाहट हो रही थी,
अरे अभी के अभी ले जाओ जलाने,
कौन जागेगा सारी रात,
बस, इतनी–सी है आदमी तेरी औकात।

मरने के बाद मैंने धरती पर देखा,
नजारे नजर आ रहे थे,
मेरी मौत पर कुछ लोग जबरदस्त रो रहे थे,
और कुछ लोग जबरदस्ती रो रहे थे,
मर गया, मर गया करके तीन दिन तक करेंगे बात,
बस, इतनी–सी है आदमी तेरी औकात।

बेटा अच्छी तस्वीर बनवाएगा,
सामने दीपक अगरबत्ती जलाएगा,
खुशबूदार फूलों की माला होगी,
अखबार में अश्रुपूरित श्रृद्धांजलि होगी,
फिर उस तस्वीर पे जाले भी कौन करेगा साफ,
बस, इतनी–सी है आदमी तेरी औकात।

सिर पर कुछ दिन गंजापन होगा,
सबके साथ व्यवहार में सीधापन होगा,
व्यापार, नौकरी बंद होने का गम होगा,
रूपए–पैसों का तो हिसाब मन ही मन होगा,
मिठाई खाएंगे तेरे गम में खूब बंटेगी खैरात,
बस, इतनी–सी है आदमी तेरी औकात।

खुद घरवाले तेरहवें दिन पगड़ी बांधेंगे,
फिर चेहरे पे मुस्कान और त्यौहारी खुशियां बांटेंगे,
तेरी तस्वीर के सामने नाच–गाना भी होगा,
तेरे अपनों की हंसी–ठहाके और पकवानी खाना भी होगा,
तेरी जीवन बीमा राशि पर भी,
खूब होगी बात, बस आदमी तेरी यही औकात।

शेख साजिद
छावनी बोर्ड, औरंगाबाद

सब बदल रहा है

सब बदल रहा है
नजारा प्रकृति के हर रंग रूप का
गाँव की छाव का शहर की धूप का

भाग रहे सरपट–सरपट
सोते–सोते सुबह से शाम
निंद्रा में सब।
जीवन संचालक प्रकृति को ही खा गए
पता ही नही चला कब।

दौड़ क्या है तेरी मानव
मात्र स्वार्थ की भूख।
थोड़ा रूक ! ठहर तो ! देख तो !
कितना तूने जहर घोल दिया
हवा, पानी, वृक्ष, जीव, जानवर
सब का मोल लिया।

सारा शहर सुबह से श्याम धुआँ–धुआँ रहता है।
हवा को भी हवा चाहिए इसका भी दम घुटता है।
चाँद, तारे, खुला सुंदर आसमां शहर के लिए
दुआ भर बन गया।

कितना शोर है
कही किसी एक कोने में नही
चारों ओर है।
पूँ–पूँ , पाँ–पाँ ! संयम कर ! रूक ! ठहर !
सबको कष्ट होता है।

रहने दो ना ! हवा को हवा–सा
पानी को पानी–सा
बहने दो ना ! नदियों को उनके स्वरूप में।
रहने दो ना जंगलो को भरा–भरा, बगियों को हरा–भरा।
ना काटो इन्हे ना दो प्रदूषण का जहर।
वरना बार–बार लाएगी प्रकृति कोरोना सा कहर।

सब बदल रहा है
नजारा प्रकृति के हर रंग रूप का
गाँव की छाव, शहर की धूप का
बदल रहा नदियों का बहाव
बदल रही सूरज की रोशनी
आसमां की सुंदरता, पानी की पवित्रता, इंसान की चरित्रता
जीवो की संख्या, पहाड़ों की ऊंचाई, मानव की सच्चाई।

सब कुछ तो !

मत करो ना ! इतने वैज्ञानिक आविष्कार
परमाणुओं से प्यार फिर प्रकृति तो क्या
इंसान और इंसानियत भी शर्मशार ।

शहर–शहर, गाँव–गाँव
पाश्चात्य–वैश्वीकरण की ज्वाला
जिसका घोर अंधेरा रंग काला

जल गए भारत की सभ्यता–संस्कार
भावनाएं–संवेदनाएं शून्य बेजान
पर्यावरण ही क्या, मानव भी अंधा और अनजान।

गरीब तो मात्र जीना चाहता रहा
लेकिन असंतुष्ट अमीर और अच्छी पीना चाह रहा।
पापा कहते हैं अब सब कुछ बदल गया है
मम्मी कहती है अब पहले सा ना रहा
कहाँ पूछा मैंने भी वो क्या चाहते हैं कहना
कहते हैं अब गर्मी में बहुत गर्मी होती है।
अपनी खेती की जमी पर फैक्ट्रियों की बेशर्मी होती है।

कहीं किसान वक्त पर वर्षा को तरसता है।
तो कहीं राम बेवक्त कहीं ओर ही बरसता है।

दादी भी कहती हैं अब सब बदल गए मौसम–त्योहार
मिट्टी का रंग–खूशबू अपनों का प्यार।
कहीं पहाड़ों पर बर्फ फिसल गई
कहीं सूखा, कहीं बाढ़ तो कहीं भूकंप की आंधी चल गई।

सब बदल रहा है
नजारा प्रकृति के हर रंग रूप का
गाँव की छाव का शहर की धूप का
सर्दियां अब ज्यादा दिनों तक रुकती नहीं है।
थोड़े ही दिनों तक दिखती है
गजक, रेवड़ी–मूँगफलियां
बाजारों में ज्यादा दिनों तक बिकती नहीं है।

सुनाते हैं सब अपने वक्त की कहानी
किसी का शहर में बचपन बीता तो
किसी की गाँव में जवानी।

कोई फसल कोई मौसम की
तो कोई अपने बाग–घर के आँगन में
प्रकृति मनोरम कलरव की।

क्या सब कुछ बदल गया?

दादा के मन में भी जाने क्या जंचा है।
कहते हैं शहर छोड़ गाँव जाएंगे वहीं कुछ बचा है।

सब पंछी जीव–जानवर विलुप्त हो गए
प्रकृति में बदलाव से
ये पीढ़ी अब इंटरनेट पर ही देख लेती है
उनको बड़े चाव से।

सबका बचपन जवानी
खा रहा विज्ञान, भूमंडलीकरण
और वैश्वीकरण का दानव
अब कबड्डी, खो–खो, कुश्ती
सब फोनों पर ही खेलता है आज का मानव

अगर रुके नही स्वार्थी मानव तेरे कदम !
प्रकृति के नाश में।
तो डालेगी प्रकृति जानवरों की जगह पिंजरो में बार–बार
और स्वछंद कर देगी पशु–पक्षियों को तेरे स्थान पर।

सब बदल रहा है
नजारा प्रकृति के हर रंग रूप का
गाँव की छाव, शहर की धूप का

योगेश
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

रक्षा सम्पदा कार्यालय, देहरादून का उद्घाटन (23/06/2022)

रक्षा सम्पदा उप-कार्यालय, रानीखेत का उद्घाटन (24/06/2022)

सम्पदा भारती 14 वां अंक का उद्घाटन

छठा रक्षा सम्पदा व्याख्यान, 2021 (13/12/2021)

ढलती साँझ

चक्र समय का धूम रहा है, गति से एक निरंतर
पीछे छूटे पदचिन्हो को, देखे नहीं पलटकर

पानी भाप बनता है, भाप बादल बनाते है, बादल वर्षा के रूप में पानी बनकर धरती पर पुनः लौटता है। सुबह, शाम में, शाम, रात में और रात पुनः सुबह में परिवर्तित हो जाती है। परिवर्तन सृष्टि का अकाट्य नियम है और जीवन का अभिन्न अंग इसलिए इसका स्वागत सहजता से करना चाहिए। काल की बड़ी क्षिप्र गति है। वह इतनी शीघ्रता से चला जाता है की सहसा उस पर हमारी दृष्टि नहीं जाती। हम लोग मोहावस्था में पड़े ही रहते है और एक–एक पल, एक–एक दिन हमारे जीवन को एक अवस्था से दूसरी अवस्था में ले जाते है। तब कभी किसी एक विशेष घटना से हमे अपनी यथार्थ अवस्था का ज्ञान होता है तब हम स्वय में विलक्षण परिवर्तन देखकर विस्मित हो जाते है। उस समय हमे चिंता होती है कि अब वृद्धावस्था आ गई है, अब हमे अपने जीवन का हिसाब पूरा कर देना चाहिए। दर्पण में प्रतिदिन ही हम अपना मुख देखते है परंतु अवस्था का प्रभाव इतने अज्ञात रूप से होता है कि हमे पता ही नहीं चलता। किसी दिन दर्पण में कान के पास सफेद बालों को देख यह विश्वास करना पड़ता है कि अब वृद्धावस्था आ गई है।

प्राचीनकाल में वृद्ध होने का एहसास होते ही लोग वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम स्वीकार कर विरक्त हो जाते थे और सब कुछ त्यागकर अपने सांसारिक जीवन को समेट लेते थे। वास्तव में वृद्धावस्था धीरे–धीरे आने वाली एक स्वभाविक व प्राकृतिक घटना है। बुढ़ापा जब दस्तक देता है तब यौवन का उन्माद मद्धिम पड़ जाता है। शेर भी खरगोश बन जाता है। जीवन के राग– रंग अकर्षण–विकर्षण के साथ ही जीने का उद्देश्य ही बदल जाता है।

खेलता–कूदता मचलता बचपन सबको प्यारा लगता है, मस्त जवानी की शान भी निराली होती है, परंतु कमबख्त बुढ़ापा किसी को अच्छा नहीं लगता है।लेकिन यह एक ऐसी सच्चाई है जिसका सामना हर व्यक्ति को करना पड़ता है। जीवन रूपी यात्रा का आखरी स्टेशन बुढ़ापा ही है। बुढ़ापे के बाद मानव जीवन में कोई अवस्था नहीं आती बल्कि आत्मा भी जर्जर शरीर को त्याग कर नए चोले की तलाश शुरू कर देती है।

वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है बढ़ा हुआ, परिपक्व, समुन्नत, अधिक समृद्ध एवं सशक्त। परंतु आजकल बूढ़ा होना असमर्थ होने के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। जो अपनी शक्ति, सामर्थ्य, चेतना, आशा और स्फूर्ति खो बैठा है वह बुढ़ा समझा जाता है यघपि भारतीय संस्कृति में वृद्धावस्था, विद्वता एवं जीवन के अनुभवों का खजाना मानी जाती रही है। लेकिन वर्तमान में यह अवांछनीय प्रक्रिया सी हो गई है। परंपरागत रूप से हर संस्कृति में वृद्धो की देखभाल परिवार की ही जिम्मेदारी होती है लेकिन सामाजिक परिवर्तनों के चलते अब यह राज्य एवं स्वशासी संगठनो की भी जिम्मेदारी बन चुकी है।

बुढ़ापा आदमी को परवश बना देता है। उन्हें हर चीज के लिए दूसरों का मुँह ताकना पड़ता है। परिवार वालों की मर्जी के अनुसार ही चलना पड़ता है, बात–बात में अपमान का घुट पीना पड़ता है। उपेक्षा को सहना और घुट–घुट कर जीना उनकी नियति बन जाती है। कैसी विडम्बना है? पूरे परिवार पर बरगद की तरह छाव फैलाने वाला व्यक्ति वृद्धावस्था में अकेला, असहाय और बहिष्कृत जीवन जीता है। जिंदगी की ढलती साँझ में थकती काया और कम होती क्षमताओ के बीच हमारी बुजुर्ग पीढ़ी का सबसे बड़ा रोग है असुरक्षा की भावना। जरा सोचे –– आखिर बुढ़ापा क्यों है बेसहारा? चलिए करते है एक कोशिश बुढ़ापे को करीब से जानने की। बुढ़ापे का एक सच यह है कि उस व्यक्ति ने जो सीखा है, वह भूल नहीं पाता और नई चीजे वह सीख नहीं सकता, यानि उसे पिछले सीखे हुए से ही काम चलाना पड़ता है। अनुभव कि किताब को पढ़ चुकने वाले हमारे बुजुर्गो का मन बीती हुई यादों में गोता लगाता रहता है। वे कभी जीवन से ऊबे लगते है तो कभी आसक्ति में डूबे हुए। कभी वैराग्य का मूर्त रूप नजर आते है, तो कभी उन्हें आगे का रास्ता ही नहीं दिखता। कभी जीने का सामर्थ्य खो चुके हताश से लगते है तो कभी बच्चो की तरह जिद्दी से हो जाते है। हमारा समाज वृद्धों को भले ही बोझ समझता है, उनके सानिध्य को डरावना अनुभव करता है, लेकिन हम उनकी कुर्बानियों को कैसे भूल जाते है। उम्र के इस पड़ाव मे अपनी औलाद के सेवा भाव को अनुकंपा समझते है और जिनकी संताने उन्हें पूरी तरह भूल जाती हैं उनको तो जाने पहचाने चेहरे भी अजनबी से लगते हैं। परंतु सबको यह याद रखना चाहिए कि यह कहानी हर एक की

जिंदगी में दोहराई जाएगी। जानते सब हैं पर मानता कोई नहीं। सभी को चिर यौवन चाहिए। हम सभी को उम्र के उस पड़ाव से गुजरना है लेकिन सभी उस उम्र के मुसाफिरों से दूर रहना चाहते हैं। हम सभी को समझना चाहिए की बुढ़ापा अभिशाप या वरदान नहीं है यह तो उम्र की छेड़खानी है।

चाहे तो उम्र के इस पड़ाव को जिंदगी की कहानी समझ लीजिए। अनेकों बार तो वृद्धों के चेहरे पर खिंच आई आक्षांश व देशांतर रेखाओं के कारण लोग मेलों व बाजारों में उनके साथ नहीं जाना चाहते। पार्टियों की उमंगों, पर्यटन के उल्लास या पिकनिक के जोश में वृद्धों को अचानक सामने आ गए खतरनाक मोड़ का ब्रेकर समझ कर घर पर ही छोड़ दिया जाता है। उन्हें घर की देखभाल करने वाला चौकीदार बना दिया जाता है। आध्यात्मिकता की ओर जबरन जाने के लिए बाध्य किया जाता है। जिनके लिए संतान ही भगवान हो उनका मन किस भगवान में रमेगा भला? वृद्ध अनुभव के अथाह समुद्र होते हैं परंतु आत्मग्रस्त व उदासीन होती युवा पीढ़ी के कारण वे बहिष्कृत तथा कटूक्तियों से बिध–बिध कर जीने को विवश होते हैं। वैसे देखा जाए तो वृद्धों को लेकर यह समस्याएँ अचानक नहीं हुई है यह सब तो आधुनिक उपभोक्तवाद तथा सामाजिक क्षरण का परिणाम है। नई पीढ़ी की परिवर्तित सोच का परिणाम है। पारिवारिक संकीर्णता का परिणाम है। सामाजिक विघटन का परिणाम है। आज का अधिकांश युवा वर्ग यह भ्रम पाल लेता है कि सयुंक्त परिवार व्यक्तिगत उत्थान में बाधक है, पारिवारिक रिश्तो में रहने पर व्यावसायिक वृद्धि नहीं होती। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वहित से प्रभावित होकर मानवीय संवेदना को लकवा मार गया है। मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। रिश्ते नाते उपेक्षित अस्पताल में पड़े अपनी अंतिम साँसे गिनते रोगी के समान हो गए हैं। वृद्धावस्था में सामाजिक उपेक्षा का दर्द बड़ा कष्टदायी होता है। वृद्धाश्रम इसका हल नहीं है। आजकल तो यह मात्र पैसे वालों के लिए मृत्यु का प्रतिक्षालय बना हुआ है।

धिक्कार है! उस मानवता को जो वृद्धों तिरस्कार करती है। पशुओं से भी तुच्छ है वह व्यक्ति जो अपने घर के वृद्ध ों को कभी बंधुआ मजदूर तो कभी बोझ समझता है। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्वक एवं रुग्णावस्था में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तो धिक्कार है उस घर को उस मानवता को और सामाजिक सोच को। आज के युवक भले ही नित–नूतन लक्ष्य को पाने में लगे हैं लेकिन जीवन के अंतिम पड़ाव पर पड़े वृद्धों की सेवा करना भी उनका पुनीत कर्तव्य है।

परिवारों को यह समझना होगा वृद्धों का सानिध्य किसी अछूत बीमारी का आमंत्रण नहीं है बल्कि आंतरिक शुचिता का अनुष्ठान है। वृद्धजन अपने अनुभव से हमारे साहस और संघर्ष के साथ–साथ पुरुषार्थ को भी बढ़ाते हैं। जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का दर्पण दिखाकर हम पर ज्ञान की वर्षा करते हैं। हम में विनम्रता के बीज बो कर यश पाने योग्य बनाते हैं। इसलिए घर में प्रवेश करते ही एक क्षण उनका हाल पूछ लें, उन्हें मधु का अनुभव देगा। उठते समय उनके हाथों में डंडा पकड़ा देना हमेशा ही आशीष का काम करेगा। चश्मा टटोलते हाथों को सहारा दे दें तो वृद्धावस्था बोझ नहीं, वरदान बन जाएगी। सहानुभूति की तरंगों से हर्ष के मधुर कलरव उत्पन्न होंगे। स्नेह का दीप प्रज्वलित होगा और मन के नभोमंडल में कितनी ही मधुर स्मृतियाँ उदित होंगी।

बुढ़ापा नहीं जीवन की स्याही,
हम सब ही होंगे ढलती सांझ के राही।
दिल से उनकी सेवा करना,
अंतिम क्षण तक उनके रहें हम राही।

सौ. निशात शेख
छावनी बोर्ड, देहूरोड

अध्यापक और छात्र

अध्यापक अगर कविता है,
तो छात्र कविता के शब्द है।
वे एक दूसरे की पूरक भी है, और तारक भी हैं।
ज्ञान उनका धन है, और छात्र उनकी संपत्ति है,
विज्ञान का रचयेता है वो, तो छात्र निर्मिती है, उनकी
अध्यापक अगर लोहार की भट्टी है,
तो छात्र भट्टी में तपने वाला लोहा है।
अध्यापक अगर सरिता है,
तो छात्र सरिता में मिलने वाला झरना है।
अध्यापक अगर पानी का कुआं है,
तो छात्र पानी पीने वाला प्यासा है।
अध्यापक अगर दानी है,
तो छात्र दान पाने वाला भाग्यवान है।
अध्यापक अगर फूल का गंध है,
तो छात्र फूल का गंध सूंघने वाला भ्रमर है।
अध्यापक अगर जौहरी है,
तो छात्र उनका बनाया हुआ अलंकार है।

श्री संजय हरिभाऊ थिटे
छावनी बोर्ड, पुणे

तब मैं घर आता हूँ

बिखरी यादों को संजोकर जीवन में मुस्कुराता हूँ।
दूर रहकर व्यस्त समय में जब कुछ समय निकाल पाता हूँ।
जन्म दिवस पर किसी अपने को जब उपहार भिजवाता हूँ।
तब समझो, मैं उस दिन अपने घर को मिलने आता हूँ।

उपहार के जरिये अपनी उपस्थिति दर्ज कराता हूँ।
'जन्म दिवस की तिथि याद है' यह एहसास कराता हूँ।
दूर सही पर साथ मिलकर अपनों का जन्म दिवस मनाता हूँ।
तब समझो, मैं उस दिन अपने घर को मिलने आता हूँ।

दूर रहें या पास, फर्क नहीं है क्षण भर
रिश्ते बनते हैं दिल से और चलते हैं उम्र भर।
सच्चे रिश्तों को कभी दूरियाँ नहीं मिटा पाती हैं
रिश्तों की डोर यदि अंतर्मन से बँधी है।
रिश्तों की मजबूती का पल–पल मैं एहसास कराता हूँ।
तब समझो, मैं उस दिन अपने घर को मिलने आता हूँ।

मनीष कुमार श्रीवास्तव
रक्षा सम्पदा निदेशालय, पुणे

शहीद-ए-आजम, भगत सिंह के आखिरी अलफाज

"हम अपने खून से लिक्खे कहानी ऐ वतन मेरे
करें कुर्बान हंस कर ये जवानी ऐ वतन मेरे"

...कल फांसी का दिन मुकर्रर था और आज भगत सिंह अपने साथियों को खत लिख रहे थे। सोचिए, जब मौत सामने खड़ी हो तो ऐसे में कोई रणबांकुरा ही मुस्करा सकता है कोई मतवाला ही आजादी का परचम लेकर मुस्कराते हुए मातृभूमि पर खुद को न्यौछावर कर पाएगा। तो आइए जानें कि उन्होंने अपनी शहादत से ठीक कुछ घंटे पहले ऐसा क्या लिखा जो इंकलाब कि आवाज बन गया। 22 मार्च, 1931

साथियो,

जाहिर सी बात है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना भी नहीं चाहता। आज एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ। अब मैं कैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता। मेरा नाम हिन्दुस्तानी क्रान्ति का प्रतीक बन चुका है। क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊंचा उठा दिया है। इतना ऊंचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊंचा मैं नहीं हो सकता। आज मेरी कमजोरियां जनता के सामने नहीं हैं। यदि मैं फांसी से बच गया तो वो जाहिर हो जाएंगी और क्रांति का प्रतीक चिन्ह मध्यम पड़ जाएगा। हो सकता है मिट जाए, लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते–हँसते मेरे फांसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ, अपने बच्चों के भगत सिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार आज भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने कि हसरतें मेरे दिल में थी, उनका 1000वां भाग भी पूरा नहीं कर सका अगर स्वतंत्र, जिंदा रह सकता तब शायद उन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके अलावा मेरे मन में कभी कोई लालच फांसी से बचे रहने का नहीं आया। मुझसे अधिक भाग्यशाली कौन होगा, आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है। मुझे अब पूरी बेताबी से जिस अंतिम परीक्षा का इंतजार है, कामना है कि वो और जल्दी आ जाए"।

तुम्हारा साथी
भगत सिंह

यह एक संयोग ही था कि जब उन्हें फांसी दी गई और उन्होंने संसार से विदा ली, उस वक्त उनकी उम्र 23 वर्ष 5 माह और 23 दिन थी और दिन भी था 23 मार्च। भगत सिंह की शहादत से न केवल अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष को गति मिली, बल्कि नवयुवकों के लिए प्रेरणा के स्रोत बन गए। वह देश के समस्त शहीदों के सिरमौर बन गए। भारत और पाकिस्तान की जनता उन्हें आजादी के दिवाने की रूप में देखती है, जिसने अपनी जवानी सहित सारी जिंदगी देश के लिए समर्पित कर दी। ऐसे बलिदानी देशप्रेमी को मेरा शत–शत नमन है।

"लिख रहा हूँ अंजाम, जिसका कल आगाज आएगा
मेरे लहू का हर एक कतरा, इंकलाब लाएगा"

लक्ष्मी रावत
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

कल्पना का भय

भय अर्थात डर मनुष्य के प्रगति मार्ग में सबसे बड़ा अवरोधक होता है। भय क्यों उत्पन्न होता है, इसका क्या कारण है ? इस प्रश्न का उत्तर हमारे मन में ही छिपा हुआ है। मनुष्य की कल्पना शक्ति बड़ी व्यापक होती है। जब व्यक्ति चिंतन करता है तो वह विचारों के अत्यंत गहरे महासागर में गोते लगाता चला जाता है। यह महासागर अच्छा या बुरा, कैसा भी हो सकता है। यह व्यक्ति की सोच व संगति पर निर्भर करता है अर्थात वह जिसका अनुसरण करेगा, उसके मन में वैसे ही विचार जन्म लेंगे। इसे परिभाषित करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा है :–

"मनुष्य अपने विश्वास से निर्मित होता है। जो जैसा सोचता है, वो वैसा ही बन जाता है।"

कहने का तात्पर्य यह है कि यदि व्यक्ति की सोच अच्छी है तथा मन में निरंतर अच्छे विचारों का संचार होता रहता है तो ऐसे व्यक्ति को किसी बात का भय नहीं होता क्योंकि अच्छे विचार उसका मार्गदर्शन करते रहते हैं। परंतु यदि मनुष्य नकारात्मक सोचने लगता है तो उसके मन में बुरे विचार आते हैं जो भय और निराशा को जन्म देते हैं जिसके कारण व्यक्ति अत्यंत व्याकुल हो उठता है। उसके मन का अमनोचैन समाप्त हो जाता है, चेहरे की रंगत उड़ जाती है। वह उस भय एवं निराशा से मुक्ति पाने का मार्ग ढूँढने का प्रयास करता है। अक्सर देखा गया है कि व्यक्ति भय एवं निराशा से स्वयं को मुक्त करने के लिए नशे का सेवन करने लगता है जिससे उन्हें क्षणिक आनंद तो जरूर मिलता है जिसे वह भय से मुक्ति मान लेता है, परंतु इससे वह नशे का आदी हो जाता है। इसका व्यसनी होकर वह अपने शरीर को बर्बाद कर लेता है जो अंततः उनके पतन का कारण बनता है। अतः भय एवं निराशा पर विजय प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए यह जरूरी है कि हम इनके कारण खोजकर उनका समाधान करें। यह कहा जाता है कि भय केवल कल्पना में ही भयानक होता है, यथार्थ में इसका कोई वजूद नहीं होता। व्यक्ति भय से अत्यंत व्यथित इसलिए होता है क्योंकि वह भय की कल्पना को यथार्थ अथवा भविष्य में घटित होने वाली घटना के रूप में देखता है तथा स्वयं को उस परिस्थिति का मूकदर्शक मात्र समझता है। वह यह भूल जाता है कि :–

"हार व जीत उसकी सोच पर ही निर्भर करती है। यदि मान ले तो हार है और यदि ठान ले तो जीत।"

परंतु इसका अर्थ यह भी है कि भयभीत व्यक्ति विचारशील अथवा दूरदर्शी होते हैं। ऐसे व्यक्ति, जो भय को सजीव रूप में देखते हैं, वे अपने मन की असीम शक्ति को भूल जाते हैं। ऐसी शक्ति, जिसके बल पर व्यक्ति ने चाँद–तारों तक का सफर तय किया, अथाह समुद्र की गहराई नापी। वो शक्ति भला कल्पना मात्र से कैसे पराजित हो सकती है, यह विचारणीय है।

आधुनिक युग में अधिकांश युवावर्ग जब जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि सामाजिक समस्याओं के कारण स्वयं को आत्मनिर्भर बनने, समाज के प्रति अपने कर्तव्यपूर्ति में असमर्थ पाते हैं, तो वे हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। उनके मन में भय एवं निराशा के काले बादल मंडराने लगते हैं। ऐसे समय में कुछ युवा वर्ग जिन्हें निरंतर बड़ों का मार्गदर्शन व स्नेह मिलता रहता है, वे भय एवं निराशा पर नियंत्रण पाकर स्वयं को किसी न किसी स्थायी अथवा अस्थायी रोजगार में स्थापित कर संघर्षपूर्ण जीवन यापन करते हुए आगे बढ़ते हैं। परंतु कुछ युवा वर्ग, जो परित्यक्त, बेसहारा अथवा एकांत रह जाते हैं, उनमें से अधिकांश युवा भय को पार नहीं कर पाते एवं युवा होने के बावजूद वृद्धजन की भांति असमर्थ हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति धीरे–धीरे सामाजिक रूप से अपेक्षित व तिरस्कृत होकर 'अनियंत्रित जुनूनी विकार' के शिकार हो जाते हैं, जोकि एक मनोविकार है। इस विकार में व्यक्ति किसी अज्ञात भय के कारण अपने सगे–संबंधियों, मित्रों, पड़ोसियों आदि से दूरी बना लेता है। उसके मन में तरह–तरह के दूषित विचार आते हैं, जिनसे बचने के लिए वह निरंतर प्रयास करता रहता है। आगे चलकर यह विकार इतना घातक हो जाता है कि इसमें व्यक्ति अपनी जीवन–लीला समाप्ति के लिए आत्महत्या जैसे कृत्य को भी अंजाम दे देता है।

इस विकार का मुख्य कारण मानसिक भय अथवा आत्मविश्वास की कमी है। ऐसे विकार का उपचार मनोचिकित्सक के परामर्श द्वारा किया जाता है। अतः भय से उत्पन्न इस विकार को समाप्त करने के लिए आत्मविश्वास को प्रबल करना

आवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि व्यक्ति एकाकी न रहे अथवा स्वयं को व्यस्त रखे तथा फुर्सत के समय स्वस्थ्य मनो. रंजन को अपनाए।

निष्कर्षतः यह कहना उचित होगा कि भय व्यक्ति के विकास तथा प्रगति में बाधा होता है, जिस पर विजय प्राप्त करके ही वह आगे बढ़ सकता है। इसके लिए मन को सशक्त बनाना ही इस समस्या का सर्वोत्तम समाधान है। उचित ही कहा गया है कि :–

"मन से होती कल्पना, मन से होता भय,
मन से मिलती विजयश्री, मन से संभव पराजय"

मनीष कुमार श्रीवास्तव
रक्षा सम्पदा निदेशालय, पुणे

कुछ नादानियां, ऐसी भी

कार्यालय में कई बार ऐसे भी वाकया होते हैं, जो काफी नादानियों से भरे होते हैं, ऐसे ही कुछ वाकया मैं आपके साथ सांझा कर रही हूँ।

पहली बार की डिक्टेशन: मुझे संदेश मिला कि आपको साहब बुला रहे हैं। मैं, अपने पर्स में नोटबुक और पेंसिल डालकर, कंधे पर लटकाकर, फटाफट सर के कमरे में, *May I came in* कहने के बाद खड़ी हो गई। सर ने मुझे बैठने के लिए कहा। सर के कहने पर, मैंने फटाफट डिक्टेशन के लिए अपने पर्स से नोटबुक और पेंसिल निकाली और डिक्टेशन ली। डिक्टेशन खत्म करने के बाद, सर ने कहा ड्राफ्ट बनाकर ले आओ। मैंने डिक्टेशन टाइप की और प्रिंट निकालकार, नोटशीट वाली साइड लगाकर, चुपचाप सर के टेबल पर रख दिया। लेकिन एक बात मुझे समझ नहीं आई कि ड्राफ्ट कैसे बनाऊँगी, क्योंकि मैंने तो ड्राफ्ट सिर्फ पैसों वाला ही सुना था जो कि हमेशा मेरे पिताजी ही बनवाते थे। फिर मुझे लगा सर मुझे कोई फॉर्म देंगे, जिससे मैं ड्राफ्ट बनाऊंगी तथा इंतजार करने लगी कि मुझे बैंक जाना है। पर छुट्टी का समय भी हो गया, लेकिन ड्राफ्ट के बारे में किसी ने कुछ नहीं कहा। मुझे बाद में पता चला कि डिक्टेशन की रफ टाइपिंग को ही ड्राफ्ट कहते हैं।

कॉन्फ्रेंस: कार्यालय में सभी फील्ड अधिकारियों की मीटिंग थी। सभी अधिकारी, सर (*PDDE*) के कमरे में मौजूद थे, सर से दूरी बनाकर बैठे थे। सर, मुझे ट्रेंड करना चाहते थे, इसलिए उन्होने मुझे भी नोटबुक के साथ पॉइंट्स नोट करने के लिए वहाँ पर बुला लिया। मैं वहाँ पर सोफे की तरफ देखने लगी, जहां पर सर (*PDDE*) बैठे थे, क्योंकि वहाँ पर थोड़ी सी जगह खाली पड़ी थी और मैं चुपचाप वहाँ जाकर बैठ गई। मुझे बाद में आभास हुआ कि मैंने कितनी बड़ी नादानी की थी।

बस टिकट: सर (*PDDE*) बहुत स्ट्रीक्ट हुआ करते थे। एक दिन उन्हें अस्थायी ड्यूटी के लिए दिल्ली जाना था। सर अक्सर मुझे ट्रेन या एयर फ्लाइट की टिकट की एक प्रति टूर पर जाने से पहले दे देते थे। ऐसे ही एक बार उन्होंने जाने से दो दिन पहले, मुझे वॉल्वो बस की टिकट दे दिया। मैंने भी टिकट को अपनी अलमारी में संभाल कर रख लिया। दो दिन बाद सर के जाने का दिन आ गया और सर चंडीगढ़ बस स्टैंड के लिए निकल गए।

मैं आराम से लंच करने लग गई। थोड़ी ही देर बाद (लगभग 10 मिनट) इंटरकॉम बजा। मैंने जल्दी से इंटरकॉम उठाया और सुना ..... "अरे मीना, क्या मैंने बस का टिकट तुम्हें दिया था? मैंने जवाब दिया "यस सर, वो तो मैंने अलमारी में संभाल कर रखा है। "सर ने कहा, "अरे भाई, टिकट जल्दी दो....." (असल में वो बस का ओरिजिनल टिकट था, जो ट्रैवल करने के लिए उनके पास होना जरूरी था)। मैंने टिकट सर को दे दिया और सर दिल्ली के लिए रवाना हो गए। और ..... मैं भगवान से प्रार्थना करने लगी कि सर की बस मिस न हो।

मीना कुमारी
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

मेरी आवाज ही पहचान है... स्व. भूपेंद्र सिंह

भूपेंद्र सिंह का जन्म 06 जनवरी, 1940 को अमृतसर, पंजाब में हुआ। अपने कैरियर की शुरुआत में भूपेंद्र ने ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली पर प्रदर्शन किया। वे दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली से भी जुड़े रहे।

साल 1962 में संगीत निर्देशक मदन मोहन ने उनकी आवाज सुनी और उन्हें बॉम्बे बुलाया जहां उन्होंने गजल ''होके मजबूर मुझे उसने भुलाया होगा'' (फिल्म हकीकत) गाया।
इनकी आवाज पार्श्व गायन में सबसे अनोखी थी। उन्होंने किशोर कुमार और मोहम्मद रफी के साथ कुछ लोकप्रिय युगल गीत गाए हैं।

भूपेंद्र सिंह द्वार गाए गए बेहतरीन यादगार गीत व गजल इस प्रकार हैं :–

(i) दिल ढूंढता है
(ii) दो दीवाने शहर में
(iii) करोगे याद तो हर बात
(iv) मीठे बोल बोले
(v) नाम गुम जाएगा
(vi) कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता
(vii) किसी नजर को तेरा इंतजार आज भी है
(viii) दरो–दीवार पर हसरत से नजर करते हैं
(ix) खुभा रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं

भूपेंद्र सिंह बहुत अच्छा गिटार भी बजाते थे। उनकी पत्नी मिताली सिंह भी एक गायिका है। इनके बेटे का नाम निहाल सिंह है जो स्वयं एक संगीतकार हैं।

प्रशंसित गायक भूपेंद्र सिंह का 18 जुलाई, 2022 को शाम में मुंबई के क्रिटिकेयर अस्पताल में निधन हो गया। वे 82 वर्ष के थे। उनकी मृत्यु बॉलीवुड के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

दीपक कुमार ऋषि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

खंड-खंड इतिहास में अखंड हिंदी

(देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका)

प्रस्तावना :

भारत विमर्शों का देश है। आरण्यक संस्कृति, वैदिक अथवा पौराणिक कालखंड रहा हो, प्रत्येक कालखंड अपने–अप. ने विमर्श रखते रहे हैं। हमारे ऋषि–मुनि साहित्य के रचयिता रहे हैं।

अपने मूल से जो लोग शक, तातारी, हूण, मंगोल आदि थे और आक्रमणकारियों के अस्तित्व में विदेशों से आये थे, अपनी पहचान खो कर, हिन्दुस्तानियों के साथ घुल–मिल जाने के कारण उनका विदेशीपन विलुप्त हो गया और वे विशुद्ध भारतीय समझे जाने लगे।

हिंदी साहित्य के इतिहास की परतों को कुरेदें तो भारत के बुनियाद में अतीत इतिहास के संस्कृत के साथ ही जैन, बौद्ध, सिख, मुस्लिम आदि साहित्य मिलेंगे।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देवनागरी आन्दोलन ने जब हिंदी आंदोलन का नाम ग्रहण कर लिया, देहलवी और उर्दू जैसे शब्दों से बचने के लिये हिंदी के विद्वानों ने 'खडी बोली' का एक नया नाम गढा लिया और उसकी प्राचीनता खोजते हुए उससे वर्तमान हिंदी का विकास तलाश करने में जुट गये। जबकि तथ्य यह है कि किसी रचनाकार ने अपनी भाषा को 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक, खड़ी बोली में कभी नहीं कहा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस सच्चाई को एक प्रकार से स्वीकार भी किया है। वे 'खड़ी बोली' का अर्थ 'उर्दू' मानते थे। 'अग्रवालों की व्युत्पत्ति' शीर्षक पुस्तक में उन्होंने 1881 ई. में लिखा भी था 'इनका मुख्य देश पश्चिमोत्तर प्रांत है और बोली स्त्री और पुरुष सबकी 'खड़ी बोली' अर्थात 'उर्दू' है।'

एक अंतहीन गुलामी से जकड़ चुके हिंदुस्तान ने अपने मौलिक स्वराज के लिए जूझना आरम्भ किया तो पसर चुके सामाजिक कुरीतियों, धर्मिक–सांस्कृतिक संघर्षों के मध्य राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिए चिंतकों के स्वरूप में सा. हित्यकारों द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गयी। हिंदी साहित्य में शोषणवादी व्यवस्था, अंग्रेजी लूट, सामाजिक अंधविश्वासों पर गम्भीरता से लिखा गया। हिंदुस्तान ने साहित्य के कुछ डग भरे ही थे धर्म की चौहदी में एक युगीन और अंतहीन खाई पैदा कर दी गई। धर्म के अनुयाइयों ने समाज के बाशिंदो के साथ–साथ भाषा को भी बाँट दिया। भाषा के इस बंटवारे में एक ओर आम बोलचाल की भाषा 'हिन्दुस्तानी' से 'अरबी'–'फारसी' तर्जुमा की बोलचाल के सहज शब्दों को भी बाहर कर इसकी जगह पर संस्कृतनिष्ठ हिंदी को प्रमुखता दी गई, तो वहीं दूसरी तरफ 'हिन्दुस्तानी' भाषा में 'अरबी'–'फारसी' तर्जुमा की बोलचाल के सहज शब्दों को संस्कृत से परहेज कर जारी रखा गया। फलस्वरूप सहस्त्राब्दी के उस छोर के शताब्दी से सदी के इस पड़ाव तक हिंदी दो भाग में बँट कर पली–बढ़ी और बड़ी हुई। एक 'उर्दूनिष्ठ हिंदी' और एक 'संस्कृतनिष्ठ हिंदी'।

ऐतिहासिक उल्लेख :

समाज अलग–अलग भाषा, पृथक–पृथक संस्कृति, विभिन्न संस्कारों के साथ जीवन–यापन करता है। सातवीं शता. ब्दी की यह मान्यता भी कि ब्राह्मणेतर सभी चिंतन पद्धतियां ब्राह्मण विरोधी हैं, सिद्ध योगियों के वैचारिक सैलाब की लपेट में आ गयी थी। साधना पद्धतियों में वैषम्य के बावजूद सूफियों और सिद्धों के वैचारिक फलक की आधारभूमि, जीव, ब्रह्म और जगत के पारस्परिक रिश्तों से निर्मित थी। यही स्थिति जैन रचनाकारों की भी थी।

आठवीं शताब्दी में पालशासक धर्मपाल (770–810 ई.) के समकालीन बौद्ध धर्म की वज्रयान और सहजयान शाखा के प्रवर्तक तथा आदि सिद्ध हिंदी के प्रथम कवि सरह (सरहपा, सिद्ध सरहपा, जिनका मूल नाम 'राहुलभद्र', 'सरोजवज्र', 'शरोरुहवज्र', 'पद्म' तथा 'पद्मवज्र' नाम भी) था। सरहपा के शिष्य शबरपा (जन्म 780 ई.) ने ग्रंथ 'चर्यापद' लिखा। शबरपा के शिष्य लुइप, चौरासी सिद्धों में सर्वोच्च, जिनके शिष्य उड़ीसा के तत्कालीन राजा और मंत्री हो गए थे। विरूपा के दीक्षित शिष्य मगध के डोम्भिया (जन्म 840 ई.) ने इक्कीस ग्रंथों की रचना की जिनमें 'डोम्बि–गीतिका', योगाचार्य और अक्षर द्वि कोपदेश प्रमुख हैं। जालंध्रपा के दीक्षित शिष्य कर्नाटक के कण्हपा (जन्म 820 ई. सन) और बिहार के सोमपुरी निवासी के

लिखे चौहत्तर ग्रंथ बताए जाते हैं। यह पौराणिक रूढ़ियों और उनमें फैले भ्रमों के विरोधी थे।

नवीं शताब्दी का मध्य भाग में गुरु गोरखनाथ (गोरक्षनाथ) जी नाथ सम्प्रदाय के योगी थे।

दसवीं शताब्दी में पुष्पदंत ने धर्मिक उद्देश्य से तीन रचनाएँ 'महापुराण', 'णयकुमार चरिउ' तथा 'जसहर चरिउ' की। सन् 933 ईसवी में जैन आचार्य देवसेन ने ग्रंथ 'श्रावकाचार' रचकर 250 दोहों में श्रावक–धर्म का प्रतिपादन किया गया है। दोहा छन्द में कवि ने गृहस्थ के कर्तव्यों पर भी विस्तार से विचार किया है। हेमचंद्र (1088–1172 ईसवी सन) गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह (993–1142 ईसवी सन) और उनके भतीजे कुमारपाल (1142–1173 ईसवी सन) के यहाँ उनका बड़ा मान था। ये अपने समय के सबसे प्रसिद्ध जैन आचार्य थे। हेमचंद्र ने कई लक्ष श्लोकों के ग्रंथ बनाए जिनमें प्रमुख हैं – 'अभिधन चिंतामणि आदि कई कोश 'काव्यानुशासन', 'छंदोनुशासन', 'देशीनाममाला', 'योगशास्त्रा', 'धतुपारायण', 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' और 'परिशिष्ट पर्च' आदि। अपने व्याकरण के उदाहरणों के लिए हेमचंद्र ने एक 'द्वयाश्रय काव्य' 'कुमारपालचरित' नामक एक प्राकृत काव्य की भी रचना की है। इस काव्य में भी अपभ्रंश के पद्य रखे गए हैं। संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश तीनों का समावेश कर इन्होंने व्याकरण ग्रंथ 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' जो सिद्धराज के समय में बनाया। हेमचंद्र कृत 'हेमचंद्र शब्दानुशासन' से अपभ्रंश के एक बहुचर्चित दोहे का पहला चरण

भल्ला हुआ जु मारिया भैंणी म्हारा कन्त।

अब इसे नस्तालीक लिपि में लिख कर इसी लिपि में पढ़ने पर 'भल्ला शब्द भला, जु शब्द जो, भैंणी शब्द बहनी, म्हारा शब्द हमारा पढा जायेगा' अर्थात इस चरण को इस प्रकार पढेंगे

भला हुआ जो मारया बहनी हमारा कन्त।

यह अपभंश की तुलना में एक विकसित भाषा है और हिन्दवी से कहीं अधिक देहलवी/तथाकथित खडी बोली के निकट है।

बौद्धों के प्रति ब्राह्मणों का वह घृणा भाव जिसका उल्लेख मृच्छ कटिका के सातवें–आठवें अध्यायों में हुआ है, नवीं–दसवीं शताब्दी तक ठंडा पड़ चुका था। शंकर, कुमारिल और उदयन की बौद्ध धर्म विरोधी भूमिकाएं, भी इस समय तक लगभग अर्थहीन होने लगी थीं। हुजवेरी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'कशपफुलमहजूब' से पता चलता है कि दसवीं शताब्दी में अविभाजित हिन्दुस्तान का लाहौर ब्राह्मणों, बौद्धों, सिद्धयोगियों और अनेक सूफी चिंतकों का केंद्र बन चुका था। मुल्तान की सूफी खानकाहों में सिद्ध योगियों का आना–जाना भी था। पृथक–पृथक धर्मिक आस्थाओं के साथ सूफियों और सिद्धयोगियों के मध्य वैचारिक आदान–प्रदान, जैन और सूफी कवियों के प्रेम में संयोग वियोग के अनेक दोहे कथ्य और शिल्प की दृष्टि से परस्पर मेल खाते हैं। प्रारंभिक सूफी कवियों ने मसनवियाँ (कथा काव्य) नहीं लिखे। सूफियों के मल्फूजात और चिट्ठियों में जो कुछ दोहे उपलब्ध हैं, उनमें से कुछ तेरहवीं शताब्दी से पूर्व के लगते हैं। उनकी हिन्दवी या अपभ्रंश रचनाएं दोहों की शक्ल में ही उपलब्ध् हैं। परन्तु तेरहवीं शताब्दी ईस्वी से पूर्व किसी भी मुस्लिम रचनाकार की कोई प्रामाणिक रचना भी उपलब्ध नहीं है।

सन् 1184 ईसवी में शालिभद्र सूरि ने 205 छंदों का खण्डकाव्य 'भरतेश्वर–बाहुबली रास' और 'बुद्धरास'। मुनि जिनविजय ने इस ग्रंथ को जैन–साहित्य की रास–परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना है। सन् 1184 ईसवी में जैन पंडित सा. मप्रभसूरि ने 'कुमारपालप्रतिबोध' नामक एक गद्य–पद्यमय संस्कृत–प्राकृत काव्य लिखा, जिसमें समय–समय पर हेमचंद्र द्व ारा कुमारपाल को अनेक प्रकार के उपदेश दिए जाने की कथाएँ लिखी हैं। यह ग्रंथ अधिकांश प्राकृत में ही है– बीच–बीच में संस्कृत श्लोक और अपभ्रंश के दोहे आए हैं। सन् 1200 ईसवी में आसगुकवि ने पैंतीस छंदों का एक लघु खण्ड काव्य 'चन्दनबाला रास' जालौर में रचा। सन् 1209 ईसवी में जिन धर्मसूरि ने 'स्थूलिभद्र रास' काव्य की रचना की। काव्य की भाषा पर अपभ्रंश का प्रभाव अधिक है, फिर भी इसकी भाषा का मूल रूप हिंदी है। धर्मिक दृष्टि से प्रेरित होने पर इसकी भावभूमि और अभिव्यंजना काव्यानुकूल है। सन् 1213 ईसवी में सुमतिगणि ने 'नेमिनाथ रास' की अठावन छंदों में रचना की। रचना की भाषा अपभ्रंश से प्रभावित राजस्थानी हिंदी है। सन् 1231 ईसवी में विजयसेन सूरि की रचित काव्यकृति 'रेवंतगिरी रास' है। यात्रा तथा मूर्तिस्थापना की घटनाओं पर आधरित यह रास वास्तुकलात्मक सौंदर्य का भी आकर्षण प्रस्तुत करता

है। प्रकृति के रमणीक चित्र इस काव्य तथा कलापक्षों का श्रृंगार करते हैं। 'आराधना' (1273 ईसवी सन के लगभग) दो पृष्ठों में जैन–आराधना प्रक्रिया का प्रतिपादन है। 'अतिचार' (1283 ईसवी सन), 'नवाकार व्याख्यान टीका' (1301 ईसवी सन), 'र्स्वतीर्थ नमस्कार स्तवन' (1302 ईसवी सन) और 'अतिचार' (1312 ईसवी सन) इन सभी पर अपभ्रंश का प्रभाव है। इनमें संस्कृत के तत्सम तथा समस्त शब्द भी प्रयुक्त हैं। सन 1304 ईसवी में जैनाचार्य मेरुतुंग ने 'प्रबंध चिंतामणि' नामक एक संस्कृत ग्रंथ 'भोजप्रबंध' के ढंग का लिखा, जिसमें बहुत–से पुराने राजाओं के आख्यान संग्रहित किए। तरुणप्रभ सूरि कृत अनूदित व्याख्यात्मक ग्रंथ 'तत्त्वविचार प्रकरण' (चौदहवीं सदी), 'षडावश्यक बालावबोध' (1354 ईसवी सन) है, जिसमें जैन धर्म संबंधी शिक्षात्मक कथाएं हैं। सधरु अग्रवाल का 'प्रद्युम्नचरित्रा' (1354 ईसवी सन) ब्रजभाषा के आद्यवधि प्राप्त ग्रंथों में सबसे प्राचीन माना गया है। इसमें चौबीस तीर्थकरों की वन्दना के पश्चात् प्रद्युम्न की कथा का वर्णन किया गया है। शालिभद्रसूरि कृत 'पंचपाण्डवचरितरास' पौराणिक कथा पर आधरित जैन काव्य में पाण्डवों की कथा को अहिंसा पर आधरित रखा गया है। इसका प्रणयन ईसा की चौदहवीं शताब्दी के अंत में किया गया है। पन्द्रह सर्गों में विभाजित इस काव्य में युद्ध और अहिंसा में से अहिंसा का चयन ही कथा का मुख्य लक्ष्य है। इस काव्य की भाषा अपभ्रंश से प्रभावित राजस्थानी हिंदी है। उदयवन्त (विजयभद्र) कृत 'गौतमरास', घटना और भाव समन्वय से युक्त एक सरस खण्डकाव्य है। जैन तीर्थंकर महावीर के प्रथम गणध्र गौतम इस काव्य के चरितनायक हैं। जिसकी भाषा अपभ्रंश–प्रभावित राजस्थानी हिंदी है। जाखू मणियार कृत 'हरिचंदपुराण' (1396 ईसवी सन) कथ्य, अभिव्यंजना तथा भाव–गाम्भीर्य की दृष्टि से यह काव्य भक्तिकाल में रचित ब्रजभाषा–काव्य का आरंभिक निदर्शन है। देवप्रभ द्वारा चौहदवीं शताब्दी के अंत में रचित 'कुमारपालरासो' जैन रास–काव्यों तथा वीर–प्रशस्तिपरक रासो काव्यों की प्रवृत्तियों का समन्वय करती है।

जैन कवि पदमनाथ कृत 'कान्हड़ दे प्रबंध' ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी के आरंभ में रचित काव्यकला के पूर्ण विकास एवं पद्य के साथ गद्य के प्रयोग से युक्त रचना है। इसकी रचना–पद्धति रासो–काव्यों की शैली से भिन्न है। इसमें महाराजा कान्हड़ देव का चरित वर्णित है। 'तपोगुच्छ गुर्वावली' (1425 ईसवी सन) में तपोगच्छीय जैन आचार्यों की नामावली और उनका वर्णन है। इसका गद्य यत्रा–तत्रा अलंकृत और सानुप्रास है। जैन कवि पदमनाथ की 'डूंगर बावनी' (1486 ईसवी सन) जिसका नामकरण कवि ने अपने आश्रयदाता डूंगर सेठ के नाम पर किया है। इसमें 53 छप्पय हैं जिनमें दया, दान, कर्म–फल, नम्रता आदि में ही जीवन–साफल्य माना गया है एवं सप्त व्यसन (जुआ, मांस–भक्षण, सुरापान, वेश्यागमन, आखेट, चोरी, परनारी–रमण) से बचने का परामर्श दिया गया है। जैन कवि ठाकुरसी की रचनाएँ 'कृपणचरित्र' और 'पंचेन्द्रीवेलि' हैं, जिनका रचनाकाल (1523–1526 ईसवी सन) है। इनकी हस्तलिखित प्रतियाँ मुम्बई के दिगम्बर मन्दिर और जयपुर के वध ीचन्द मन्दिर में सुरक्षित है। जैन श्रावक जटमल ने प्रेमविलास प्रेमलता की कथा (1556 ईसवी सन) की रचना लाहौर में की थी। कवि ने इसका आरम्भ जैनाय नमः से करते हुए अपना परिचय एवं तत्कालीन शासक का नाम भी दिया है। इसकी कथावस्तु मौलिक है, जिसमें लोकोत्तर घटनाओं की प्रधानता है। बनारसी दास जैन का भक्तिकालीन नीति कवियों में मुख्य स्थान है। ये जौनपुर के रहने वाले एक जैन जौहरी थे, जो आमेर में भी रहते थे। इनके पिता का नाम खड़गसेन था। ये 1586 ईसवी सन में उत्पन्न हुए थे। सम्राट अकबर के प्रशंसक थे। जहांगीर के दरबार में भी गए थे। शाहजहाँ के दरबार में तो इन्हें विशेष मान प्राप्त था। 'नवरस पद्मावलि', 'नाटक समयसार' (कुंदकुंदाचार्य कृत ग्रंथ का सारद), 'बनारसी विलास' (फुटकल कवित्तों का संग्रह), श्अर्द्ध कथानक', 'नाममाला' यकोशद्ध, 'बनारसी पद्धति मोक्षपदी', 'ध्रुववंदना', 'कल्याण मंदिर भाषा', 'वेदनिर्णय पंचाशिका', 'मारगन विद्या' और 'भाषा सूक्तिमुक्तावली' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। राजसमुद्र का जन्म 1590 ईसवी सन में बीकानेर में हुआ था। इनका बचपन का नाम खेतसी था। 1599 ईसवी सन में जिनसिंह सूरि से दीक्षा लेने पर इनका नाम राजसमुद्र हो गया। इनकी 'शालिभद्र चौपाई', 'गजसुकमाल चौपाई', 'प्रश्नोत्तर रत्नमाला', 'कर्मबत्तीसी', 'शीलबत्तीसी' और 'बालावबोध' प्रमुख रचनाएँ हैं। इनका मुख्य विषय नीति है। इनकी भाषा राजस्थानी है। कुशलबीर के नीति ग्रंथ–'भोज चौपाई', 'सीलवती रास', 'कर्म चौपाई', 'वर्णन संपुट' तथा 'उद्दिम–कर्म–संवाद' हैं। सोजत नगर के निवासी थे। ये कल्याणलाभ के शिष्य थे और इनका रचनाकाल (1637 से 1672 ईसवी सन) है। इनकी भाषा राजस्थानी है और शैली उपदेशात्मक है। आनन्दध्न की निर्गुण भक्ति के भजनों की रचनाएँ मिलती हैं। इनकी 'आनन्दध्न चौबीसी' और 'आनन्दध्न बहोत्तरी' नामक कृतियाँ प्रसिद्ध हैं। जिनदत्तसूरि की 'उपदेश रसायन रास', प्रज्ञा तिलक की 'कच्छुलि रास', सार मूर्ति की 'जिन पद्म सूरि रास', कनकामर मुनि की 'करकंड चरित रास', पल्हण की 'आबूरास', देवेन्द्र सूरि की 'गय सुकमाल रास', अम्बदेव सूरि की 'समरा रास', अभय तिलकमणि की 'अमरा रास' हरिभद्रसूरि की 'नेमिनाथ चरिउ', राजशेखर सूरि की 'नेमिनाथ पफागु', नयनंदी की 'सुंदसण चरिउ' और पदम कीर्ति की 'पास चरिउ' आदि भी उल्लेखनीय हैं। रमल जैन कृत 'मोक्षमार्गप्रकाश' एवं द्वीपचन्द्र जैन कृत 'चिद्विलास' जैन धर्म की दार्शनिक रचनाएं हैं। दोनों खड़ीबोली के विशिष्ट गद्यकार

हैं। दौलतराम जैन बसवा निवासी कृत 'भाषा–पद्मपुराण' अथवा 'पद्मपुराण वचनिका' राजस्थानी–ब्रजभाषा प्रभावित खड़ी. बोली में प्राकृत की जैन रामकथा का व्याख्यामय अनुवाद है। इनकी दूसरी प्रख्यात वचनिका 'आदि पुराण वचनिका' है जो भगवान ऋषभदेव तथा राजा श्रेयांस के जन्मों की कथा से सम्बद्ध जैन प्राकृत–ग्रंथ 'आदिपुराण' का व्याख्यामय अनुवाद है। इनकी अन्य गद्य रचनाएं हैं– 'पुण्याश्रव कथा कोश वचनिका', 'वसुनन्दिश्रावकाचार वचनिका', 'परमात्म प्रकाश वचनिका', 'श्रीपाल चरित्र वचनिका' तथा 'हरिवंश पुराण वचनिका'। दौलतराम जैन इंदौर निवासी कृत 'मल्लिनाथ चरित्र वचनिका', टेकचंद जैन कृत 'सुदृष्टि–तरंगिणी वचनिका' और अभयचंद कृत 'हितोपदेश वचनिका' गद्य की विशेष उल्लेखनीय रचनाएं हैं। ये खड़ीबोली के विशिष्ट गद्यकार हैं। जिनसमुद्र सूरि रचित 'भर्तृहरि वैराग्य–शतक टीका' ब्रजभाषा–मिश्रित खड़ीबोली में उल्लेखनीय टिप्पण–टीका है।

मलिक मुहम्मद जायसी (1477–1542 ईसवी सन) हिन्दवी (हिन्दवी में ब्रज या अवधी जैसी कोई विभाजक रेखा नहीं थी) के कवि, हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के सरल और उदार सूफी महात्मा कवि थे। शेख बुरहान और सैयद अशरपफ के शिष्य जायसी मिस्र में प्रधानमंत्री मलिक वंश के थे। मलिक मोहम्मद जायसी (1467–1542 ईसवी सन) उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के जायस के रहने वाले थे। हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्री धारा के कवि थे। 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'इतरावत', 'कहारनामा', 'चंपावत', 'चित्रावत', 'जपजी', 'धनावत', 'पद्म. ावत', 'पोस्तीनामा', 'मटकावत', 'मसला या मसलानामा', 'मुकहरानामा', 'मुखरानामा', 'मेखरावटनामा', 'मैनावत', 'मोराईनामा', 'लहतावत', 'सकरानामा', 'सखरावत', 'सुर्वानामा', 'सोरठ', 'स्फुट कवितायें', 'होलीनामा' समेत 21 प्रमुख रचनाएं हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मध्यकालीन कवियों की गिनती में जायसी को प्रमुख कवि का स्थान दिया गया है। पद्मावत दोहा और चौपाई, छंद में लिखा गया महाकाव्य है। मलिक मुहम्मद जायसी ने

अरबी तुर्की हिन्दवी, भाषा जेती आहि।
जामें मारग प्रेम का, सभै सराहैं ताहि।

लिखकर हिन्दवी में व्याप्त प्रेम तत्त्व का संकेत किया।

सैयद इब्राहीम 'रसखान' (1548 –1628 ईसवी सन) हिन्दी के कृष्ण भक्त, विठ्ठलनाथ के शिष्य एवं वल्लभ संप्रदाय के सदस्य तथा रीतिकालीन रीतिमुक्त अकबर के समकालीन मुस्लिम कवि थे। रसखान ने भागवत का अनुवाद फारसी और हिंदी में किया है। रसखान के सगुण कृष्ण की सारी लीलाएं बाललीला, रासलीला, फागलीला, कुंजलीला, प्रेम वाटिका, सुजान प्रासंगिक है। रसखान ने नबीश्री हजरत मुहम्मद तथा हजरत अली की प्रशंसा में भी पद लिखा हैं।

अबुल फैज फैजी (जन्म 1574 ईसवी सन) की हिन्दी रचनाएं इसका ज्वलंत प्रमाण हैं।

मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने 'चन्दायन' की भाषा को हिन्दवी कहा। सैयद निजामुद्दीन मधनायक (जन्म 1591 ईसवी) कृत मधनायक श्रृंगार', मीर अब्दुलवाहिद (मृत्यु 1608 ईसवी) कृत 'हकाइके–हिन्दी' आदि महत्वपूर्ण विमर्श है।

मीर अब्दुल जलील (1662–1726 ईसवी सन) ने ऐसी चतुष्पदियां लिखकर जिनमें एक चरण अरबी का, एक फारसी का, एक हिन्दवी का और एक तुर्की का होता था, हिन्दवी के सार्वभौमिक महत्त्व को दर्शाया था। निजामुल्मुल्क आसफ जाह वजीर फर्रुखसियर बादशाह की प्रशंसा में मीर जलील ने लिखा था

'असीस दे के कही हिन्दवी मों यों संबत।
रहे जगत में अचल बास ये वजीर सदा।'

हिन्दवी नस्तालीक लिपि में लिखी जाने वाली भारतीय भाषा, को हिन्दी कहने का भी प्रचलन था जो आगे चलकर देहलवी/उर्दू के लिए भी जारी रहा। शेख अब्दुल्लाह अंसारी (रचनाकाल 1663 ईसवी सन) ने इस्लामी शरीअत पर 'फिकए–हिन्दी' शीर्षक पुस्तक लिखी जिसकी भाषा को हिन्दी बताया–

केते मसले दीन के, अबदी कहैं अमीन।
फिका हिन्दी जबान पर, बूझो करो यकीन।

मुल्ला मसीह ने जहांगीर के समय में पांच हजार छंदों में मसीही रामायन नामक एक मौलिक रामायण की रचना की। इस रामायण को सन् 1888 ईसवी में लखनऊ के मुंशी नवल किशोर प्रेस से प्रकाशित किया गया।

बुल्बुल बीजापुर के कवि ने

हरीरे–हिन्दवी पर कर तूं तस्वीर। लिबासे–पारसी है पाये–जंजीर।

लिखकर फारसी की तुलना में हिन्दवी का वर्चस्व घोषित किया।

जिन रचनाकारों पर संस्कृत के संस्कारों का प्रभाव था और जो अपनी रचनाएं नागरी या कैथी लिपि में लिखने के अभ्यस्त थे, वे अपनी भाषा को 'भाखा' कहते थे। अब्दुल गनी महाराष्ट्र के कवि ने इब्राहीम आदिलशाह की प्रशंसा में 'इब्रा. हीमनामा' लिखा, जिसमें इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख किया कि मैं अरब और अजम ईरान, की कृत्रिम भाषाएं नहीं जानता। मैं केवल हिन्दवी और देहलवी जानता हूं–

'जबां हिन्दवी मुझसों हौर देहलवी। न जानूं अरब हौर अजम मसनवी।'

स्पष्ट है कि हिन्दवी के साथ 'और देहलवी' लिखना इस तथ्य को स्पष्ट संकेतित करता है कि देहलवी एक स्वतंत्रा भाषा थी। यही भाषा, हिन्दवी/हिन्दी, जो नस्तालीक लिपि में लिखी जाती थी, के सहयोग से आगे चलकर उर्दू कहलायी।

झज्जर निवासी शेख महबूब आलम (17वीं शतब्दी) ने 'मसाइले–हिन्दी' में लिखा–

कयामत के अहवाल में हिन्दी कही किताब।
अथवा
तलब बहुत उस यार की देखी साँची सूझ।
लिखी किताब इस वास्ते हिन्दी बोली बूझ।

मीरजा गालिब अपनी उर्दू गजलों के लिए भी हिन्दी शब्द का प्रयोग करते थे। 30 जनवरी 1855 ईसवी सन को सैयद बदरुद्दीन के नाम अपनी चिटठी में लिखते हैं – 'आप हिन्दी और फारसी की गजलें मांगते हैं, फारसी गजल तो शायद एक भी नहीं कही। हां हिन्दी गजलें किले के मुशायरों में दो–चार कही थीं। स्पष्ट है कि गालिब के समय तक आते–आते हिन्दी, हिन्दवी, देहलवी और उर्दू एक दूसरे के पर्याय बन चुके थे। हिन्दवी, हिन्दी अथवा देहलवी कही जाने वाली भाषा का जो नस्तालीक लिपि में लिखी जाती थी, उसका पालन–पोषण मुस्लिम साहित्यकारों ने ही किया। हिन्दवी को 'भाखा' कहने और इसे देवनागरी में लिखने वाले लेखकों की स्थिति कुछ भिन्न नहीं थी।

यहां एक बात और भी स्पष्ट होती है कि प्रारंभ से उत्तर मध्यकाल तक हिन्दवी, हिन्दी या देहलवी के मुस्लिम साहित्यकारों ने अपनी रचनाएं नस्तालीक लिपि में ही लिखीं। इस लिपि में एराब, स्वर–चिह्न, नहीं लगाये जाते। फलस्वरूप अध्ययन की जिज्ञासा से जब इन साहित्यकारों ने प्राचीन अपभ्रंश को नस्तालीक में लिप्यान्तरित किया तो तशदीद द्वित्त्व–चिह्न और एराब न होने के कारण अनेक शब्दों के रूप परिवर्तित हो गये और ध्वनियां भी अपेक्षाकृत कोमल हो गयीं। उदाहरण स्वरुप कुतुबन कृत 'मृगावती' (1503 ईसवी)।

गुरु गोविन्द सिंह (22 दिसम्बर 1666–7 अक्टूबर 1708 ईसवी सन) ने कृष्णावतार की रचना के लिए भाखा को अभिव्यक्ति का जरिया बनाया

'दसम कथा भागवत की, भाखा करी बनाय'।

किन्तु न तो हिन्दवी के पक्षधरों ने और न ही भाखा प्रेमियों ने अपनी भाषा को किसी क्षेत्र–विशेष से जोड़ा, न ही उसमें धर्म–विशेष की गंध देखने का प्रयास किया।

अठारहवीं शताब्दी के अंत तक इलाकाई बोलियों से इतर भारत में संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दवी, हिन्दी, देहलवी, भाखा, रेख्ता, उर्दू आदि ऐसी ही भाषाएं थी। आज जिन भाषाओं को हम ब्रज या अवधी के नामों से जानते हैं, उनके रचनाकारों ने 18वीं शती के लगभग अन्त तक उनका ब्रज या अवधी होना कभी स्वीकार नहीं किया। दकनी पहली भाषा कही जा सकती है जिसने अपनी पहचान इलाके के आधार पर बनाने का प्रयास किया। संभवतः इसीलिए उसका साहित्य दक्षिण की चौहद्दियां नहीं लांघ पाया। जो रचनाकार फारसी साहित्य और भाषा के संस्कारों से जुडे थे और अपनी रचनाएं नस्तालीक यवर्तमान उर्दू लिपिद्ध में लिखते थे, वे अपनी भाषा को हिन्दवी हिंदी और देहलवी कहते थे। अवध की गंगा–जमुनी सभ्यता का प्रभाव हिंदी और इससे जुड़ी क्षेत्रीय भाषाओं अवधी, ब्रज और भोजपुरी पर भी पड़ा। मुगलकाल से लेकर अंग्रेजी शासन और फिर आजाद भारत में अब तक गैर–मुस्लिम और मुस्लिम लेखकों और कवियों ने हिंदी में भी अपना उत्कृष्ट योगदान दिया।

मुगल काल में हिन्दवी के प्रति सम्राटों का विशेष लगाव होने के कारण फारसी के अनेक प्रतिष्ठित कवियों ने भी हिन्दवी, हिन्दी को समृद्ध करने का प्रयास किया। मुहम्मद आरिफ जान (1710–1773 ईसवी सन) कृत 'रसमूरत', 'अंग शोभा', 'मदन मूरत' और 'मंगल चरन' ग्रंथ हैं। कासिमशाह (1736 ईसवी सन) कृत 'हंसजवाहर', नूर मुहम्मद (1764 ईसवी) कृत 'अनुराग बाँसुरी' तथा 'इन्द्रावती' आदि उल्लेखनीय है। इंशा अल्ला खां 'इंशा' (1756–1817 ईसवी सन) का जन्म तो पं. बंगाल की मुर्शिदाबाद में हुआ था लेकिन उनके पूर्वज दिल्ली आकर बस गए और फिर इंशा अल्ला लखनऊ आ गए। इंशा अल्ला खां 'इंशा' की लिखी 'रानी केतकी की कहानी' (उदयभान चरित) को हिंदी की पहली गद्य रचना माना जाता है। इसकी रचना 1803 ईसवी सन में की गई जबकि 1841 ईसवी सन में यह मुद्रित हुई। शाह नजफ अली (1809–1845 ईसवी सन) कृत 'चिंगारी', अवध् के बादशाह वाजिद अली शाह (जन्म 30 जुलाई 1822 – निधन 1 सितंबर 1887 ईसवी सन) के समय में हिंदी–अवधी–ब्रज में अनेकों ठुमरियां, ख्याल, टप्पे और दादरे लिखे गए। वाजिद अली शाह खुद भी संगीत और साहित्य के प्रेमी थे, इसलिए उनके दरबार में हिंदी–अवधी–ब्रज भाषा के रचनाकारों को बहुत अहमियत दी जाती थी। खुद वाजिद अली शाह की प्रसिद्ध 'ठुमरी बाबुल मोरा नैहर छूटो जाए', आज भी बेहद लोकप्रिय है। अवध में वाजिद अली शाह के शासनकाल में भी हिंदी, अवधी और ब्रज भाषाओं का खूब विकास हुआ। सैयद अहमद देहलवी कृत फरहंगे–आसफिया के प्रथम खंड से इसी युग के एक मुस्लिम रचनाकार का लगभग इसी आशय का एक दोहा है–

बाँह छुडाए जात है, निबल जानि के मोहि।
हिर्दय में से जाय तो, मरद बदूंगी तोहि।

सन 1857 ईसवी सन भारतीय समाज जिस त्रासदी से जूझ रहा था उसका चित्रण उस काल के कवियों और लेखकों की कृतियों में देखने को मिलता है। उस समय एक अंतहीन गुलामी से उपजी समस्याओं अस्मिता का प्रश्न, गुलामी का दर्द, गरीबी और भूख की चुभन, स्त्रियों एवं पिछड़े वर्ग की दयनीय स्थिति आदि हमारे साहित्य के मूल विमर्श रहे। तब के साहित्य में सांप्रदायिकता एवं आतंकवाद के विमर्श नहीं थे जो बीसवीं शताब्दी के अंत और इक्कीसवीं शताब्दी का सबसे महत्वपूर्ण विषय बन कर सामने आए हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में हिंदी हिन्दुओं की भाषा और उर्दू मुसलामानों की भाषा के रूप में स्वीकार की जाने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में पंडित प्रताप नारयण मिश्र के

जपौ निरंतर एक जबान। हिंदी हिन्दू हिन्दुस्तान।।

जैसे महामंत्र ने विद्वानों की सोच का धरातल ही बदल दिया।

सन 1947 ईसवी सन के भारत विभाजन के बाद की रचनाओं में सांप्रदायिकता एवं दहशत के विमर्श केंद्र में आ गए। अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक सभी इसी धूल–माटी की पैदाइश हैं। सभी के पूर्वज यहीं जन्में और यहीं जीवन पूर्ण किए। सभी की भाषा, संस्कृति संवेदनाएं, समस्याएं, गरीबी और बेरोजगारी भी एक जैसी ही है। अलग–अलग पंथ पृथ. क–पृथक रास्तों से उसी एक ईश्वर तक ले जाते हैं।

बीसवीं सदी में हिंदी के ईसाई धर्मावलम्बी विद्वान बेल्जियम से भारत आये एक मिशनरी फादर कामिल बुल्के (1 सितंबर 1909 – 17 अगस्त 1982 ईसवी सन) थे। भारत आकर जीवन पर्यंत हिंदी, तुलसी और वाल्मीकि के अनुयायी रहे। सन 1972 से 1977 ईसवी सन तक भारत सरकार की केंद्रीय हिन्दी समिति के सदस्य बने रहे। इन्हें साहित्य एवं शिक्षा के

क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1974 ईसवी सन में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। रामकथा : उत्पत्ति और विकास, 1949 ईसवी सन हिंदी–अंग्रेजी लघुकोश, 1955 ईसवी सन अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश, 1968 ईसवी सन मुक्तिदाता, 1972 ईसवी सन नया विधान, 1977 ईसवी सन नीलपक्षी, 1978 ईसवी सन उनकी महत्वपूर्ण कृति है। अगस्ट सरडेल, अलेक्जेंडर फॉकनर, ई एच पॉमर, ई बी ईस्टवीक, ए एच हार्ली, ए एफ रुडोल्पफ हार्नलि, एच एच विल्सन, एच एस केलॉग, एच सी शोलबर्ग, एडविन ग्रीव्ज, एफ ए की, एफ एस ग्रॉउज, एम केप्शन, एम टी आदम, एस डब्ल्यू फैलन, कर्क पैट्रिक, कर्नल डब्ल्यू आर एम होलरॉयड, कैप्टन रोबक, कैप्टन विलियम प्राइस, कैमिलो तेगलीऑब्ने, कोशकार, गिल क्राइस्ट, जूल ब्लॉक, जे जेटलो प्रोखनो, जे टी प्लॉट्स, जे डी बेट, जेम्स आर बैलेंटाइन, जॉन ए ग्रियर्सन, जॉन क्रिश्चियन, जॉन चेम्बरलेन, जॉन टी प्लॉट्स, जॉन डाउसन एमआर ए एस, जॉन पार्सन, जॉन पफर्गुसन, जॉन बार्थविक गिलक्राइस्ट, जॉन बीम्स, जॉन शेक्सपीयर, जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, जॉर्ज एस ए रेमकिंग, जॉर्ज हाडले, जोसेफ हेलिओडोर गार्सा द तासी, जोहन जोशुआ केटलेर, डंकन पफोर्ब्स, डॉ ज म दिम शीट्स, डॉ रोनॉल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर, डॉ. अलेक्सेई पेत्रोविच बरात्रिकोव, डॉ एलपी टेसिटरी, डॉ. जे एन कारपेंटर, डॉ. जे एम मैकपफी, डॉ. डगलस पी हिल, डॉ. मोनियर विलियम्स, थॉमस रोबक, द रोजेरिओ, पादरी एडविन ग्रीपफस, पादरी टी एवंस, पीटर ब्रेटन, पेजजोनी विकारियो, पॉल व्हले, फर्ग्युसन, फड्रिक फॉन श्लीगल, फांसिसस एम तुरोनेसिस, फेडरिक पिंकाट, बेंजामिन शुल्ट्ज, मेजर एफ आर एच चौपमेंन, रूसो, रेवरेंड अहमद शाह, रेव. रेंड एजी एटकिंस, रेवरेंड टी ग्राहम बेली, रोबक, विलियम एंड्रीय, विलियम एथॉरिंगटन, विलियम प्राइस, विलियम बटलर येट्स, विलियम हंटर, सर मोनियर विलियम्स, सेवास्तिवा रोदल्फ डालगादो, सैंडफोर्ड ओरनोट, हेनरी थॉमस कोलब्रुक, हेनरी माय इलियट, हेरा सिम लेबडेपफ, हैरिस हेनरी आदि विद्वानों ने हिंदी के लिए अपने योगदान दिए हैं। इक्कीसवीं सदी में हिंदी के ईसाई धर्मावलम्बी विद्वान डॉ. अलेक्जेंडर सेंकेविच, डॉ. आई बंघा, डॉ. ई तुर्बियानी, डॉ. उलरिक स्टोर्के, डॉ. एंड्रीज शूटलर, डॉ. एडमोर जे बेबिनियु, डॉ. एण्डरीस बॉक रैमिग, डॉ. एम आर एल्विन, डॉ. एलिजाबेथ असा होल, डॉ. एलिस डेविसन, डॉ. एवगेनी पेत्रोविच चेलीशेव, डॉ. ओडोलेन समैक्ल, डॉ. केनेथ ई ब्रायंट, डॉ. केरीन शोमर, डॉ. कै. थरीन जी हेनसन, डॉ. कैथलीन अर्नडल, डॉ. कोबर्न, डॉ. कोल्वो कोवाचेव, डॉ. क्लॉउस पीटर जॉलर, डॉ. गैब्रिएला निक एलीवा, डॉ. ग्रुने बॉम जेसन ओ, डॉ. जूडिथ बेनाडे, डॉ. जे पैट्रिक ओलोवेल्ले, डॉ. जेम्स डब्ल्यू गैर, डॉ. जेम्स लोष्टपफेल्ड, डॉ. जेरोस्लाव स्ट्रैंड, डॉ. जॉन जे गुम्प्रज, डॉ. जॉन पीटरसन, डॉ. जॉन ब्रैडन लोवे, डॉ. जॉन स्टेटन हॉली, डॉ. टिमोथी लुबिन, डॉ. टीम वण्डर अवयर्ड, डॉ. डगलस आर्नोल्ड जॉस, डॉ. डब्ल्यू एम क्लेवर्त, डॉ. डेजी रॉकवेल, डॉ. डेनियल गोल्ड, डॉ. डेविड एन लोरेन्जें, डॉ. डेविड एस मैंगीयर, डॉ. डेविड सी स्वैन, डॉ. तातियाना रुतकिवस्का, डॉ. तैयो दमिस्टेखत, डॉ. थियोडोर रिकोर्डी जूनियर, डॉ. थॉमस बी, डॉ. दानुता स्आसिक, डॉ. निकोल बलबीर, डॉ. निकोलॉय जरबेया, डॉ. पीटर जी पफीड लैंडर, डॉ. पॉल अरनी, डॉ. प्रोफेसर हेन्स हेनरिक हॉक, डॉ. फिन थीसन, डॉ. फिलिप लुत्जेन डर्फ, डॉ. फ्रांसिस प्रिटचेत, डॉ. पफांसेस्का ओरसिनी, डॉ. फेंकलिन सी सौथवर्थ, डॉ. बेथली साइमन, डॉ. बैरतील टिक्कनें, डॉ. बोरिस एम वोल्खोंसकी, डॉ. ब्लादिमीर मिलनर, डॉ. मारजेना मैगनुसजेवस्का, डॉ. मारिओला ओफ्रेडी, डॉ. मारिया क्षेशतापेफ ब्रिसकी, डॉ. मारिया नेज्यिशी, डॉ. मार्गोत गात्सलापफ हेलजिंग, डॉ. मैगी रोंकीन, डॉ. मोनिका बाहम टैटलबाख, डॉ. रिचर्ड बार्ज, डॉ. रिचर्ड सरन, डॉ. रूपरेख्त कार्ल्स यूनिवर्सिटॉट हाइडेलबर्ग, डॉ. रूपर्ट स्नेल, डॉ. रेबेका जे मैनरिंग, डॉ. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर, डॉ. रोबर्ट ह्युक स्टड्स, डॉ. लिंडा हेस, डॉ. लिनी हेनसन, डॉ. लूसी रोजेन्स्टीन, डॉ. लोथार लुत्से, डॉ. विलियम चार्ल्स मैकड्युगल, डॉ. वी एन फिलिप, डॉ. वेंडी सिंगर, डॉ. शलोट वोदवील, डॉ. शॉकर जी एच, डॉ. सिस्टर क्लेमेंट मेरी, डॉ. सुसन एस वैदली, डॉ. स्टीवेन सपुफले, डॉ. स्टेफनो पियानो, डॉ. हिडी पॉवेल, डॉ. हेर्मोन एच वॉन ओलफन, डॉ. हेलमुत नस्पिटल आदि विद्वानों ने हिंदी के लिए अपने योगदान दिए है।

यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
माननीय सदस्यः हिंदी सलाहकार समिति, संस्कृति मंत्रालय और
नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार

नारी तेरे रूप अनेक

जाने कितने ही रूपों में नारी,
जीवन को तुमने ढाला है ।
कभी बनी मूर्ति सौम्यता की,
तो कभी रणचंडी बन मोर्चा संभाला है।
माँ, बहन, बेटी या पत्नी,
हर रूप में कर्तव्य निभाया है।
कभी बन प्रेयसी भी तुमने,
लड़खड़ाते कदमों को संभाला है।
जन्म लिया एक आलय में,
दूजे घर को अपनाया है।
एक नहीं दोनों आँगन को,
प्रेम की बगिया से महकाया है।
ममता के अपने आँचल से,
बच्चों का जीवन सजाया है।
सदमार्ग में चलने का उनको,
जीवन में मार्ग बताया है।
अंतस में अपने दर्द समेटे,
मुस्कान से हौठों को सजाया है।
नैनों में दुख के नीर भरे,
पर कोरों में ढ़लने से बचाया है।
अपनी उड़ानें, अपने सपने,
परिवार की खुशियों पर वारा है।
जज्बा है छू लेने को नभ भी,
पर नया वो ही माना आकाभा सारा है।
तुम ही भक्ति, तुम ही शक्ति,
दुनिया में खेल निराला है।
पग–पग पर बिखरे शूलों से,
छलनी हुए बिन आपने,
कदमों को निकाला है।
समझ सका ना कोई अब तक,
नारी का मन कितना गहरा है।
समझ सका है क्या अब तक कोई,
समंदर में पानी कितना ठहरा है।
आज के दौर की मांग यही है,
होकर श्रृंगारित शस्त्र भी चलाना है।
अपनी गरिमा और सम्मान की खातिर,
अब खुद ही रणचंडी बन जाना है।

रीना ठाकुर
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

आशा ही जीवन है

योगस्थः कुरु कर्माणी सङ्ग व्यकत्वाधनंजय।
सिद्धयसिद्धयाः सामोआ भूत्वा समत्वम योग उच्यते।।

भगवत गीता के इस श्लोक में श्रीकृष्ण ने सफलता और असफलता के मोह को त्याग कर अपने कार्य को पूरे मन से समभाव से करने का संदेश दिया है। जब व्यक्ति पूरे मनोयोग से कार्य करता है, तब इसका प्रभाव उसकी कार्यकुशलता पर भी पड़ता है। प्रसन्नता कार्य कुशलता की वृद्धि में अहम भूमिका निभाती है। गीता के एक श्लोक में प्रसन्नता के महत्व को बताते हुए कहा गया है कि प्रसन्नता सब दुखों का नाश करने वाली होती है। प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति की वृति स्थिरता को प्राप्त कर लेती है, जिससे प्रतिकूल परिस्थितियों में व्यक्ति विचलित नहीं होता।

प्रसन्नता आशावादिता की अग्रणी है। प्रसन्नता से ही आशावादिता का विकास होता है। आशावादी व्यक्ति हर कठिन परिस्थिति में भी अपने आशावादी दृष्टिकोण से स्थिति को संभाल लेता है। ऐसा व्यक्ति अपने कष्ट या समस्याएं दूसरों को नहीं बताता फिरता। इस तरह वह केवल अपने जीवन में ही सुख की वृद्धि नहीं करता बल्कि अपने संपर्क में आने वाले दूसरे लोगों के जीवन में भी सुख लाता है। आशावादी होना सबसे महान गुणों में से एक है। इसी हुनर के बल पर व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन बनाए रखता है। वह निराशा के भाव को अपने आसपास फटकने भी नहीं देता।

'नर हो ना निराश करो मन को'

यह पंक्ति यही संदेश देती है– पुरुष! कभी भी अपने मन को निराशा के भंवर में मत फँसने दो। स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा हरिश्चंद्र, स्वामी रामतीर्थ आदि न जाने कितने महापुरुषों का जीवन कठिन दौर से गुजरा। उन्हें बहुत से विरोध और बाधाओं का सामना करना पड़ा, किन्तु आशावाद की संजीवनी के बल पर वे सभी कठिनाइयों को धैर्यपूर्वक सहते रहे।

उपरोक्त उदाहरण सभी में एक नई आशा का संचार करते हैं। अतः हम सभी को आशावादिता का संकल्प लेना चाहिए। ताकि जीवन में किसी भी मोड़ पर कैसी भी समस्याएं आएं हम अपना धैर्य ना छोड़ें। कार्य क्षेत्र में तो आशावादी विचारधारा अत्यावश्यक है। यदि सभी कर्मचारी इसी दृष्टिकोण से कार्य करेंगे तो कार्यकुशलता में शत–प्रतिशत वृद्धि होगी।

संजय चंद्र पराशर
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

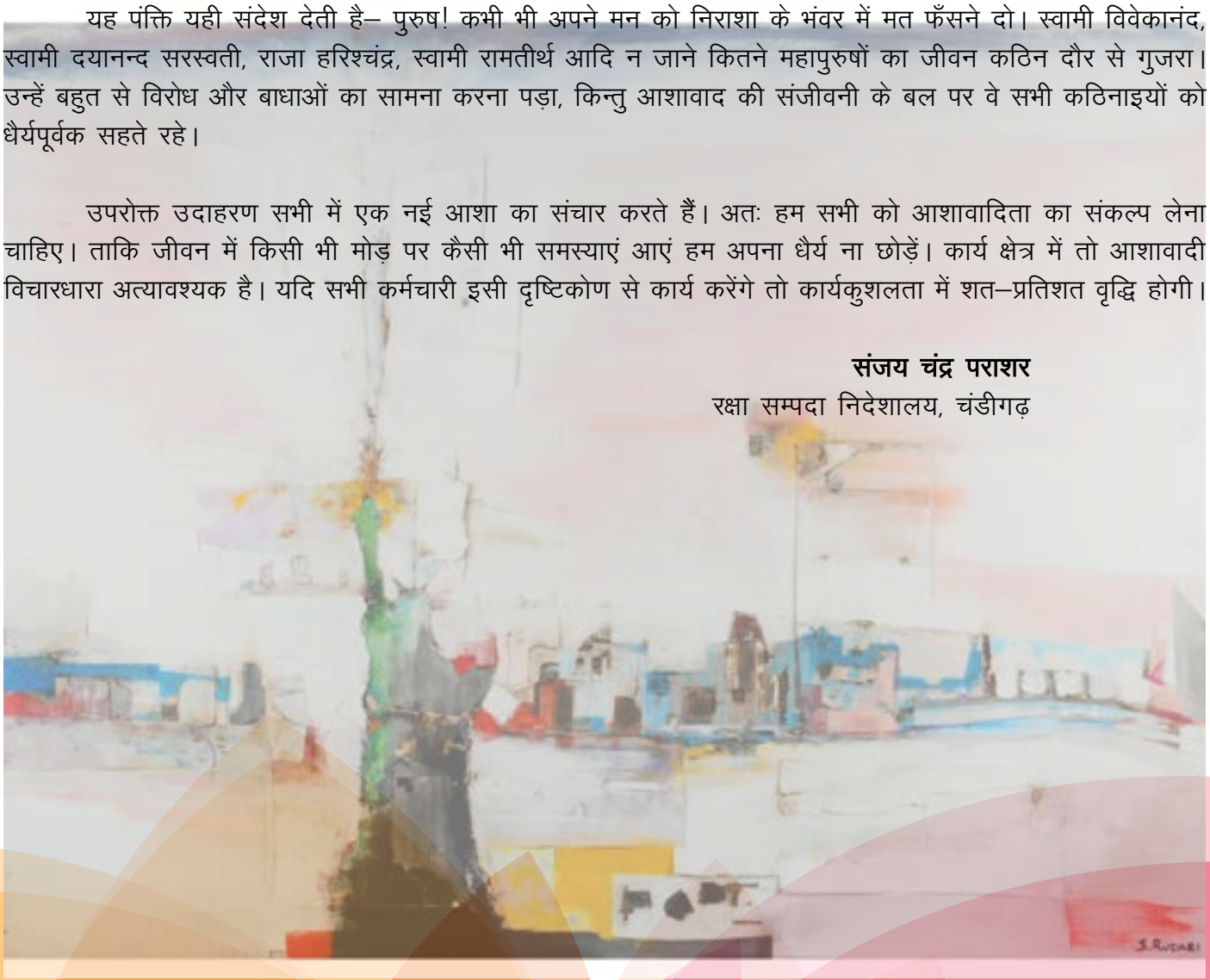

सफरनामा

लता मंगेशकर का संगीत किसी परिचय का मोहताज नहीं है। पाठकों की याद को ताजा करने के उद्देश्य से उनके संगीत सफर की एक झलक प्रस्तुत है। लता जी को जीवन में कितने पुरस्कार मिले, यदि इसका जिक्र करें तो थोड़ी देर ठहर कर सोचना होगा। इसलिए नहीं कि अवार्ड की संख्या ज्यादा है बल्कि इसलिए जो अवार्ड उन्हें मिले उनसे अवार्ड का मान कितना बढ़ा। आइए उनकी संगीत यात्रा पर एक नजर डालें।

लता जी ने फिल्म 'मधुमती' के लिए 1959 में प्लेबैक सिंगर का पुरस्कार जीता (आजा रे परदेशी), 1963 में फिल्म 'बीस साल बाद' के गाने 'कहीं दीप जले कहीं दिल', 1966 में 'खानदान' फिल्म के गाने 'तुम्ही मेरे मंदिर', 1978 में 'जीने की राह' फिल्म के गाने 'आप मुझे अच्छे' के लिए सर्वश्रेष्ठ गायिका का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। उसके बाद लता जी ने फिल्मफेयर पुरस्कार में उनके नाम पर विचार न करने के अनुरोध सहित इस पुरस्कार को ग्रहण करने में असमर्थता जताई।

1973 में 'परिचय' फिल्म के गाने 'बीती न बिताए रैना', 1975 में 'कोरा कागज' फिल्म के गाने 'रूठे–रूठे पिया' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

– वे राज्य सभा की सदस्य रहीं।
– 1989 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित।
– 1999 में पदम विभूषण।
– 2001 में भारत रत्न से नवाजा गया।

लता जी की कुछ बेहतरीन स्पंदित रचनाएं हैं :–

– 1961 की फिल्म 'हम दोनों' में गाए 'अल्लाह तेरे नाम'।
– राग मोड मेन राजस्थानी लोक परंपरा से लिया 'पाकीजा' (1972) गाना 'ठाड़े रहियो'।
– 1963 की फिल्म बंदिनी का गाना 'मोरा गोरा रंग ले' (गुलजार का डेब्यू गीत)।
– 'लग जा गले', 'वो कौन थी' (1963) फिल्म का नाम।
– 'दिल धड़के नजर शर्माएं' अलबेला (1951) का गाना इत्यादि।

इसके अलावा राग 'बागेश्री' में सी रामचन्द्र का लय बद्ध किया 'राधा न बोले' (आजाद 1965) या राग हेमंत में 'बलमा' (बहुरानी 1963), 'धीरे से आजा' (अलबेला 1951) राग पीलू में बेहतरीन रचनाएँ कही जा सकती हैं।

मींद आधारित बिहाग रचना 'तेरे सुर और मेरे गीत (गूंज उठी शहनाई 1959) जिसमें उन्होंने उस्ताद बिस्मिल्लाह खान द्वारा बजाई गई शहनाई से ताल बंधाई थी, लाजवाब कही जा सकती है।
लता जी के प्रिय संगीतकारों में मदन मोहन का नाम लिया जा सकता है। उन्होंने मदन जी की राग ललित में लयबद्ध रचना 'प्रीतम दरस दिखाओ' (चाचा जिंदाबाद 1959) मन्ना डे के साथ सहगान रूप में गाई है। इस गाने में तीन ताल में ली गई तालें असाधारण हैं।

मशहूर संगीतकर एसडी बर्मन ने एक बार कहा था, उनके गाने 'तुम न जाने' (सजा 1951) (रवीद्र संगीत से प्रभ. ावित) को केवल लता जी ही आवाज दे सकती थी।

लता जी ने बर्मन द्वारा लयबद्ध किए गए राग तोड़ी में सदाबहार 'रैना बीती जाए' (अमर प्रेम 1972) गाना गया, उसमें 'श्याम न आए' की तान हर बार गाने में बिल्कुल अलग तरह से उभरी है।

लता जी ने हिन्दी सहित लगभग 30 भाषाओं में कुल 25000 गाने गाए।

लता जी द्वारा गाए गए कुछ सबसे प्रसिद्ध गाने हैं :–

– ठंडी हवाएँ (एसडी बर्मन)
– प्यार किया तो डरना क्या (नौशाद)
– रसिक बलमा (शंकर जयकिशन)
– आप की नजरों ने (मदन मोहन)
– ये ज़िंदगी उसी की है (सी रामचन्द्र)
– अजीब दास्तान है ये (शंकर जयकिशन)
– मौसम है आशकाना (गुलाम मोहम्मद)
– तू जहां–जहां चलेगा (मदन मोहन)
– पिया तोसे नैना लागे रे (एसडी बर्मन)

भारत और लता जी के स्वर गाने आपस में इस तरह से गूँजे हैं कि इन्हें अलग नहीं किया जा सकता।

आजादी के 75वें वर्ष में लता जी का जाना असहनीय दुख तो है पर देश की जीवंतता, इसकी माटी की सौंधी खुशबू से सराबोर यूथ पुनः जब भी नयेपन को आत्मसात करेगा, लता जी द्वारा गाए गए गानों से स्फूर्तिमान हो अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होगा। सम्पूर्ण देशव्यापी परिसर लता जी की संगीत लहरी से हमेशा गुंजायमान रहेगा।

भल्ला राम मीना
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

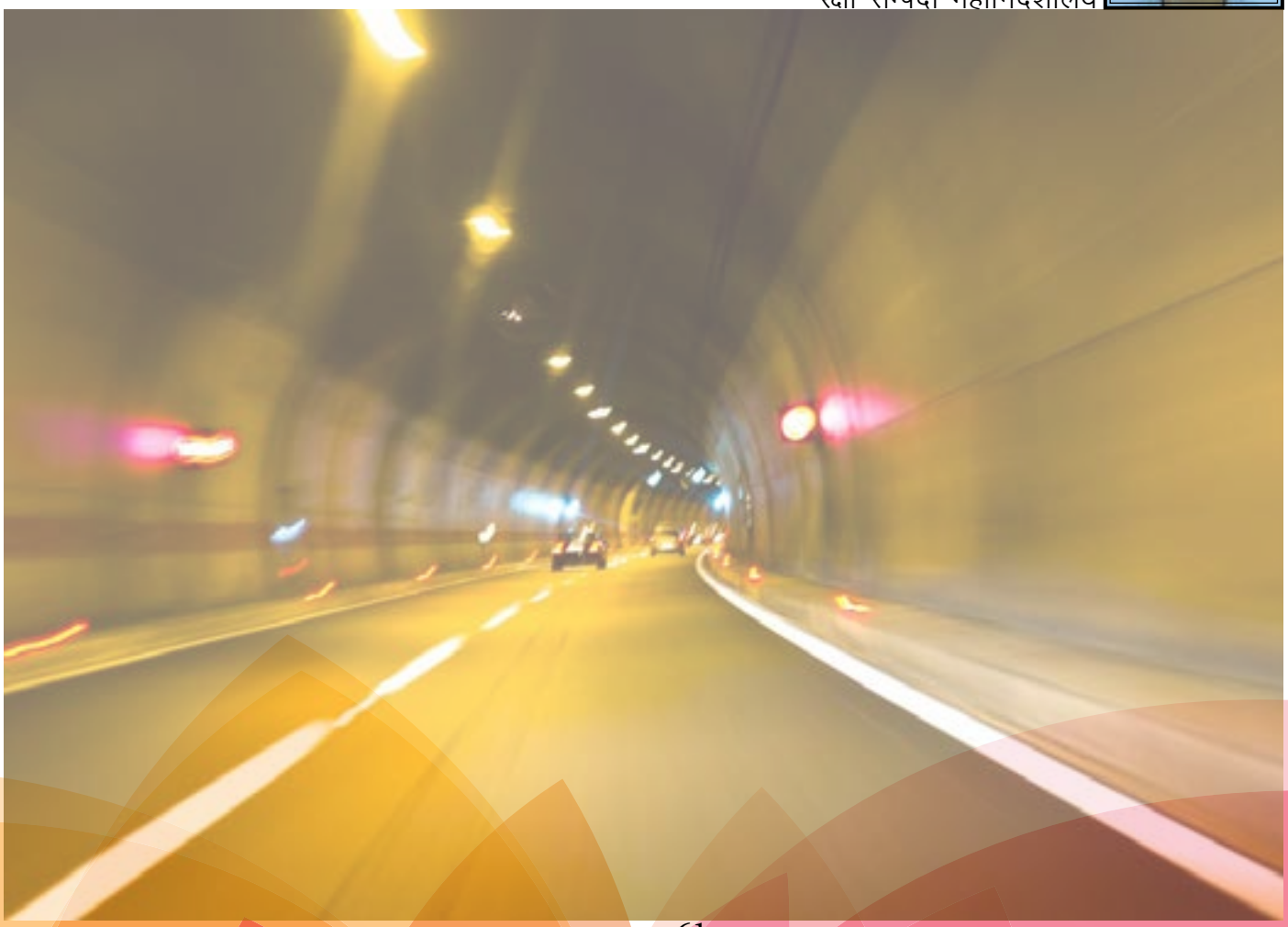

'बदलते परिवेश में नौनिहालों का भविष्य'

अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि विलियम वर्ड्सवर्थ ने कहा था 'बच्चा आदमी का पिता होता है।' अर्थात बच्चे के जीवन की पूर्णता एक समग्र आदमी के रूप में दिखती है। बच्चे, जो अपने परिवार के अनमोल रत्न होते हैं, वे राष्ट्र के निर्माता भी होते हैं। उनके विकास एवं प्रगति पर किसी भी राष्ट्र की प्रगति निर्भर करती है परंतु वर्तमान में प्रत्येक देश में कोरोना महामारी जनवरी–2020 से लेकर अब तक तबाही के भिन्न–भिन्न मंजर दिखा रही है। इसका व्यापक असर न केवल उद्योगों और व्यापारों पर पड़ा है, बल्कि इसका बड़ा असर स्कूलों पर, बच्चों की मानसिक स्थिति और प्रवृति पर भी पड़ा है। लगभग दो वर्षो से इस महामारी के कारण पूरे भारतवर्ष के अधिकांश स्कूल, कॉलेज इत्यादि बंद चल रहे हैं। इस वजह से बच्चे घरों में ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे हैं। स्कूली छात्रों की सामान्य दिनचर्या में न केवल क्लासरूम में पढ़ाई शामिल है, बल्कि खेल–कूद, मानसिक विकास तथा अन्य शिक्षणेत्तर गतिविधियां भी शामिल होती हैं, जो कि इस ऑनलाइन शिक्षा की वजह से बाधित हो गयी हैं।

अचानक हुए इस बदलाव से सभी राज्यों, वर्गो, जाति, लिंग और सभी क्षेत्र के बच्चे प्रभावित हुए हैं। वें एक प्रकार से कैदखाने में कैद हो गये हैं, विशेषकर उन घरों में जो एकल परिवार के हैं और छोटे–छोटे घरों या फ्लैटों में पहले से ही एक प्रकार के आइसोलेसन में जी रहे हैं। संयुक्त परिवारों और बड़े घरों में तो थोड़ी बहुत राहत है क्योंकि उन घरों में रहने वाले बच्चों की देखभाल व पढ़ाई–लिखाई में मदद हेतु बड़े–बुजुर्ग व अन्य लोग होते हैं पर एकल परिवार और कामकाजी दम्पतियों के परिवार के बच्चो पर इस महामारी का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है।

इस महामारी के कारण भारत में स्कूलों के अचानक बंद हो जाने के कारण पारंपरिक स्कूली शिक्षा आधारित भारतीय स्कूली शिक्षा प्रणाली अब एक अव्यवस्थित ऑनलाइन आधारित शिक्षा प्रणाली के रूप में बदलती जा रही है। अव्यवस्थित इसलिए क्योंकि हम न तो मानसिक रूप से और न ही तकनीकी रूप से ऑनलाइन शिक्षा की इस अप्रत्याशित चुनौती के लिए तैयार थे। अचानक होने वाले इस तकनीकी बदलाव के कारण न केवल छात्र–छात्राओं को डिजिटल रूप से विभाजित कर रहा है बल्कि उनके सीखने की क्षमता और उनकी समस्त प्रगति यथा सामाजिक, सांस्कृतिक, फिटनेस आदि को भी धीमा कर दिया है।

स्कूलों में बच्चों के न केवल तरह–तरह से सीखने की प्रवृत्ति का विकास होता है बल्कि वें अपने जीवन में भिन्न–भिन्न प्रकार की आने वाली चुनौतियों से निपटने का मानसिक विकास भी होता है। बच्चों पर, उनकी सीखने की क्षमता और विविधता के अलावा, स्कूली शिक्षा की अनुपस्थिति का, बच्चों और किशोरों के समग्र विकास पर दीर्घकालिक प्रभाव भी पड़ा हैं।

कोरोना महामारी की वजह से स्कूलों के बंद होने के कारण बच्चों के सीखने की क्षमता पर बहुत बुरा असर देखने को मिल रहा है। बच्चे स्व–अध्ययन या ऑनलाइन शिक्षा पर समय तो अधिक व्यतीत कर रहे हैं पर सीख कम रहे हैं जबकि बच्चे स्कूल में कम समय में अधिक सीखते हैं। यानि स्कूलों में वे कम समय में अधिक मात्रा में और तेजी से पाठ्यक्रम सीखते हैं। जबकि घरों में स्व–अध्ययन या ऑनलाइन पर अधिक समय देने के बावजूद भी पर्याप्त पाठ्यक्रम को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। एक अध्ययन के अनुसार यह पाया गया है कि लगभग 97 प्रतिशत औसतन 4 से 5 घंटे अधिक–से–अधिक ऑनलाइन पढ़ाई में समय व्यतीत कर पाते है, जो कि स्कूल की प्रत्यक्ष पढ़ाई से बहुत कम है क्योंकि स्कूल की प्रत्यक्ष पढ़ाई आमतौर पर होमवर्क, ट्यूशन और अन्य निर्देशित चीजों के सीखनें की गतिविधियों पर अधिक समय व्यतीत करते हैं। सामूहिक या स्कूली शिक्षा बच्चों के सीखने की लालसा और अभिलाषा को बढ़ा देती है जिससे बच्चों में पढ़ाई के प्रति एक प्रकार की रुचि पैदा होती हैं जबकि एकल अध्ययन या ऑनलाइन शिक्षा नीरस और उबाऊ हो जाती है।

इस महामारी का दूसरा प्रतिकूल असर भारत के उन ग्रामीण इलाकों पर भी पड़ा है जो आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े हैं क्योंकि वहाँ के अधिकांश घरों में स्मार्ट फोन, लैपटॉप या कम्प्यूटर जैसे आधुनिक उपकरणों की बहुत कमी रहती हैं। जहां स्कूल और शिक्षक तो हैं पर ऑनलाइन पढ़ाई के लिए आवश्यक उपकरण नहीं हैं जिससे कि ग्रामीण बच्चों का थोड़ा–बहुत विकास हो पाता। एक अध्ययन के अनुसार यह देखा गया है कि इन इलाकों में दूरस्थ शिक्षण संसाधनो,

ऑनलाइन सुविधाओं के बावजूद अधिकांश बच्चे किसी प्रकार के दूरस्थ या ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि ये बच्चों में इसे सीखने की सामग्री या संसाधनों के बारे में जागरूकता की कमी का होना बताया गया हैं। इन ग्रामीण इलाकों की एक महत्वपूर्ण समस्या परिवारों की आर्थिक स्थिति का कमजोर होना भी हैं। माता–पिता या अभिभावकों के लिए मुख्य बाधा डिवाइस (स्मार्ट फोन या कम्प्यूटर) और इंटरनेट (डेटा) पाने की असमर्थता है यानि वे ऑनलाइन पढ़ना भी चाहते हैं पर उनमें इतनी आर्थिक क्षमता नहीं हैं कि ऑनलाइन शिक्षा के लिए जरूरी उपकरण खरीद सकें। वहीं एक अन्य समूह है जो अपने बच्चों के लिए उपकरण और इंटरनेट इत्यादि का खर्च तो वहन कर सकता है लेकिन इस ऑनलाइन शिक्षण उपकरण और प्रक्रिया के उपयोग के बारे में उसे पर्याप्त जानकारी है ही नहीं।

बच्चों में सीखने की क्षमता में कमी के अतिरिक्त, बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ रहा हैं। जैसे–जैसे छात्र अपने घरों में कैद होते गए, वे अपने मित्रों और शिक्षकों से दूर होते गए। माता–पिता या अभिभावकों के रोजगार पर भी बुरा असर पड़ा है। कुछ लोग इस महामारी की चपेट में आये तो इसका असर उनके बच्चों के मानसिक स्तर पर भी पड़ा। घरों में जबरन एकांत व हमउम्र मित्रों के अभाव के कारण उपजी संवादहीनता ने बच्चों के सीखने व समझने की क्षमता और स्वाभाविक जिज्ञासु–भाव को बहुत अधिक प्रभावित किया है। इनमें अधिकांश 5 से 13 वर्ष के आयु के बच्चे तथा लगभग सभी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर खराब असर पड़ा है।

इस महामारी के कारण देश में बढ़ती बेरोजगारी के कारण बच्चों के बालश्रम में भी अत्यधिक वृद्धि देखने को मिल रही है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण ऑनलाइन शिक्षा या दूरस्थ शिक्षा तो दूर की बात, उन्हें खाने के लिए भी नहीं मिल पा रहा है जिससे इन परिवारों के बच्चे अपने माता–पिता या अभिभावक के कार्य में मदद करने को मजबूर हो गये हैं। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि बच्चे जितने अधिक समय तक स्कूल से दूर रहेंगे, वे उतने ही पढ़ाई में कमजोर होंगे और उनके स्कूल लौटने की संभावना भी कम होती जाएगी।

सरकार को शिक्षा, विशेषकर स्कूली शिक्षा से जुड़ी समस्याओं को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। देश में सरकारी स्कूली शिक्षा की स्थिति निजी स्कूल की तुलना में अच्छी नहीं है। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। निजी स्कूली शिक्षा अच्छी है परंतु इस महामारी के काल में वह दिनोंदिन मंहगी होती जा रही है, जिससे यह सामान्य वेतनभोगी या निम्न मध्यवर्ग के लोगों की पहुंच से दूर होती जा रही है। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हैं।

बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षा, एक अच्छा विकल्प है जो इस महामारी के समय में स्कूल के आभासी रूप से बच्चों को जोड़े रखा है। परंतु असल शिक्षा तो स्कूलों, विद्यालयों में सामूहिक व प्रत्यक्ष क्लास रूम में मिलती है न कि मोबाइल, टैबलेट या लैपटॉप जैसे आधुनिक उपकरणो से।

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि नौनिहालों का भविष्य विद्या के मंदिर अर्थात विद्यालय में ही बन सकता है। अतः कोरोना महामारी से उबरकर हमें अपने नौनिहालों को एक स्वस्थ और सुंदर माहौल देना होगा, जिसमें रहकर वे स्वयं के विकास के साथ–साथ एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे।

संजय कुमार
रक्षा सम्पदा निदेशालय, पुणे

सलाह

माँ–बाबा रेलगाड़ी से शाम को आने वाले थे। उनकी 5 बजे की रेलगाड़ी थी। मैं और मेरी बेटी रूही उन्हें लेने स्टेशन जा रहे थे। रूही अपने नाना–नानी से मिलने के लिए उतावली हो रही थी। बार–बार पूछ रही थी कि "माँ अब कितनी दूर है स्टेशन?" मैं उसकी उत्सुकता देखकर हँस दी। मैं मन ही मन थोड़ा घबरा रहीं थी कि कहीं माँ रूही को कुछ कह ना दे, तो फिर से वो उदास हो जाएगी या अपने प्यार के जवाब में प्यार ना पाकर उसका चेहरा मुर्झा ना जाए और वो मुझसे फिर से वही सवाल ना करने लगे कि "नानी मुझे पसंद क्यूँ नहीं करती। मेरे बाकी दोस्तों के नाना–नानी तो उनके साथ खेलते हैं, उनके लिए चॉकलेट लाते हैं पर मेरे नाना–नानी ऐसा क्यूँ नहीं करते।" अब मैं उस चार साल की बच्ची को कैसे समझाऊं कि उसके नाना–नानी, खासतौर पर माँ, उसे इसलिए पसंद नहीं करते क्योंकि मैंने उसे अनाथालय से गोद लिया है। मेरे पति शाश्वत के इस दुनिया से चले जाने के बाद मैंने कभी भी शादी ना करने का निर्णय लिया था, सिंगल मदर बनने की ठान ली थी और माँ–बाबा की नाराजगी के बावजूद मैंने सारी औपचारिकता पूरी करके रूही को घर ले आयी। और कहीं ना कहीं मेरी शादी ना करने के लिए माँ–बाबा रूही को जिम्मेदार ठहराते थे।

हम सब घर आ गए। रात के खाने के समय माँ–बाबा ने फिर से मेरी दूसरी शादी की बात शुरू कर दी और मेरा वही टका–सा जवाब सुनकर माँ–बाबा गुस्सा होकर अगले दिन की रेलगाड़ी से चले गए। पर मुझे पूरा विश्वास है कि एक न एक दिन माँ–बाबा रूही को जरूर अपनाएँगे।

माँ–बाबा के इस तरह से नाराज होकर जाने से मन बहुत उदास था। मैं शाम को रूही के साथ पार्क में गयी। रूही बाकी बच्चों के साथ खेलने चली गयी और मैं बेंच पर बैठकर बच्चों को खेलते देखने लगी पर मन अब भी माँ–बाबा की चिंता में लगा हुआ था। समझती हूँ मैं माँ–बाबा की चिंता, सामाजिक दबाव, वो पड़ोसियों की घूरती निगाहें कि आप की बेटी शादी कब कर रही है, ये रूही किसकी बेटी है। ये सब केवल सवाल ना थे, कहीं ना कहीं ये मेरे चरित्र पर उठते प्रश्न भी थे कि जरूर इसका कोई चक्कर होगा। आखिर पति को गए 5 साल हो गए और ना जाने किसकी बेटी को रख रखा है।

सामने वाली ब्लॉक की मिसेज शर्मा आकर मेरी बगल वाली बेंच पर बैठ गयी। मैंने उनके हैलो का जवाब एक फीकी से मुस्कान के साथ दिया। मिसेज शर्मा ने आगे बात शुरू की, "वो कामवाली बता रही थी कि आपके माँ–बाबा आए हुए थे, बड़ी जल्दी चले गए।" मैंने जवाब दिया, "हाँ, अचानक एक जरूरी काम आ जाने से उन्हें जाना पड़ा।" मिसेज शर्मा ने आगे फिर बात जारी रखी, "एक बात बोलूं, आप शादी क्यूँ नहीं कर लेती, रूही को भी एक पिता का प्यार मिल जाएगा, आपके माँ–बाबा भी खुश हो जाएंगे।" मुझे कामवाली पर बहुत गुस्सा आ रहा था, उसने मेरे घरेलू मामला अब सामाजिक मसला बना दिया था। मिसेज शर्मा ने आगे कहा, "आप तो जानती ही हैं कि बिल्डिंग में लोग तरह–तरह की बातें करते हैं, ऐसे में आपकी सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा।" अब मेरे सब्र का बाँध टूट चुका था, फिर भी मैंने अपने गुस्से पर काबू पाते हुए कहा, "आपकी सलाह के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद मिसेज शर्मा। मैं जानती हूँ कि आपको मेरी बहुत चिंता है, तभी कामवाली से सारी जानकारी समय–समय पर लेती रहती हैं। आपसे मुझे बस एक बात कहनी है, ये जो सलाह होती है ना इसकी एक खास बात होती है। इसकी प्रकृति वैकल्पिक होती है, बाध्यकारी नहीं। इसको मानना या ना मानना सलाह लेने वाले पर निर्भर करता है। मेरे घर में दिलचस्पी दिखाने की बजाय अगर आप अपने पति और उनकी सेक्रेटरी में दिलचस्पी दिखाएंगी तो बेहतर होगा।" बस इतना सुनना था कि मिसेज शर्मा पैर पटकते हुए बड़बड़ाते हुए चली गई, "आज कल किसी को सलाह देना भी गुनाह हो गया है। भलाई का तो जमाना ही ना रहा।"

रूही ने मिसेज शर्मा को गुस्से में जाते हुए देख लिया था, उसने मुझसे बड़ी मासूमियत से पूछा, "मम्मी! आंटी ऐसे गुस्से में क्यूँ चली गयी।" मैंने जवाब दिया, "बेटा! कभी–कभी आपकी चुप्पी दूसरों के लिए आपकी जिंदगी में दखलंदाजी का मौका होता है, आपको उन्हें आईना दिखाना जरूरी होता है और साथ ही ये भी बताना कि आप अपनी जिंदगी के निर्णय लेने में सक्षम हैं।" रूही ने प्रश्नवाचक नजरों से मेरी और देखा, ये बड़ी–बड़ी बातें उस छोटी बच्ची के दिमाग में कहाँ से आने वाली थी। मैंने उससे कहा, "तुम ऐसे क्यू नहीं समझती जैसे कि मैंने आंटी की पसंदीदा चॉकलेट लाकर उन्हें नहीं दी तो वो गुब्बारे की तरह मुँह फुलाकर चली गईं।" इतना सुनकर रूही हंसने लगी और मैं भी उसकी खिलखिलाहट देखकर मुस्कुरा दी।

धीरेन्द्र तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

नवीनतम सर्वेक्षण तकनीकों और रक्षा भूमि सीमाओं के आर.एस. एवं जी.आई.एस. द्वारा मानचित्रण पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्घाटन *(18/10/2021)*

टेले-मेडिसिन सुविधा का उद्घाटन *(09/11/2021)*

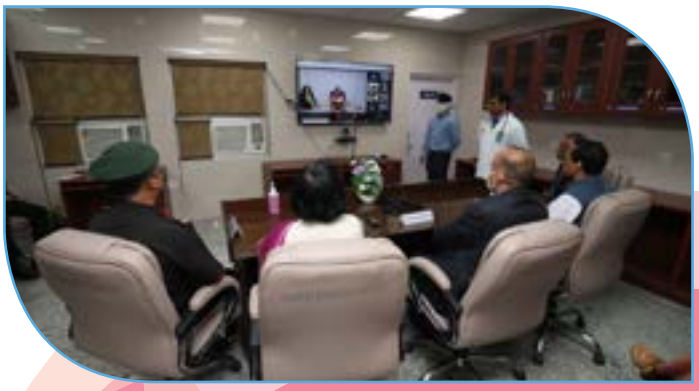

सोने का अंडा

बहुत पहले की बात है। मेरे गांव में अली नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसके माँ–बाप बचपन में ही गुजर चुके थे। वह खेतों में काम करके बड़ी मुश्किल से अपना गुजारा करता था। उसके पास एक मुर्गी थी, जो उसको रोज एक अंडा देती थी।

जब कभी उसके पास खाने के लिए कुछ नहीं होता तो वह रात को अपनी मुर्गी का अंडा खा कर ही सो जाता था। उसके पड़ोस में बासा नाम का एक व्यक्ति भी रहता था जिसकी प्रवृति सही नहीं थी। जब उसने देखा कि अली ठीक से अपना गुजारा कर रहा है तो यह उसे बर्दाश्त नहीं हुआ। एक दिन जब अली घर पर नहीं था तो उसने उसकी मुर्गी चुरा ली। इसके बाद बासा मुर्गी को मार कर पका कर खा गया। जब अली घर आया और उसने घर पर मुर्गी नहीं देखी तो इध ार–उधर अपनी मुर्गी को ढूंढने लगा। उसने बासा के घर के बाहर मुर्गी के कुछ पंख देखे। उसने इस बारे में जब बासा से बात की तो बासा ने कहा कि उसकी बिल्ली एक मुर्गी को पकड़ कर लाई थी। मैंने उसे पका कर खा लिया। मुझे क्या मालूम था कि वह तुम्हारी मुर्गी थी।

अली ने बासा से कहा कि वह इस संबंध में सरपंच को शिकायत करेगा। यह बात सुनकर बासा ने मुर्गी के स्थान पर अली को एक छोटी बत्तख दे दी। अली ने उस बत्तख को पाला पोसा। कुछ दिन बाद वह बत्तख बड़ी हो गई और अंडा देने लगी।

एक रात जब बहुत बारिश हो रही थी, एक साधू भीगता हुआ बासा के घर आया और कुछ देर घर में रहने की जगह देने के लिए प्रार्थना करने लगा। लेकिन बासा ने उसको मना कर दिया। इसके बाद वह साधू अली के घर गया। अली ने उसे रहने के लिए जगह भी दी और खाना भी खिलाया।

अगली सुबह वह अली के घर से जाने लगा लेकिन जाते हुए उसने अली के बत्तख के सिर पर हाथ फेरा। इसके बाद जब बत्तख ने जो अंडा दिया, वह सोने का अंडा था। अली यह देखकर बहुत खुश हुआ। अब बतख जब भी अंडा देती तो वह सोने का ही अंडा होता था। सोने के अंडे बेचकर अली की समस्त गरीबी दूर हो गई। लेकिन फिर भी वह साध ारण जीवन ही जीता था।

एक दिन बासा ने बत्तख को सोने का अंडा देते हुए देख लिया और वह सरपंच के पास गया। वह सरपंच से बोला कि अली ने कल मेरी बतख चुरा ली। जब सरपंच ने अली से पूछा तो उसने सारी कहानी सुनाई कि कैसे बासा ने ही उसको वह बत्तख दी थी। सरपंच ने कहा कि मैं कल इसका फैसला करूँगा कि बत्तख किसको मिलेगी।

बत्तख ने रोज की तरह सरपंच के पास भी सोने का अंडा दिया। अगले दिन सरपंच ने दोनों को सामान्य अंडा दिखाया और कहा कि कल तुम्हारी बत्तख ने यह अंडा दिया है। अलग से पूछने पर अली ने सरपंच जी को सच बताया कि उसकी बतख सोने का अंडा देती थी। जबकि बासा ने कहा कि उसकी बत्तख सामान्य अंडा देती है। सरपंच ने एक नई बत्तख लेकर बासा को दे दी और अली को सोने का अंडा देने वाली बत्तख दे दी। अली दोबारा सोने का अंडा देने वाली बत्तख पा कर बहुत खुश हुआ।

शिक्षाः हमें कभी भी लालच नहीं करनी चाहिए और न ही दूसरों से ईर्ष्या करनी चाहिए।

मुनेश कुमार मीना
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

प्रयास

(सफलता की कुंजी)

कई बार हम प्रयास किए बिना ही हार मान लेते हैं जबकि कई बार प्रयास करने पर जब कुछ हाथ नहीं लगता है तो मन मसोस कर रह जाते हैं। अगर हमें अपने जीवन में सफल होना है या सफलता प्राप्त करनी है तो बार–बार असफल होने के बाद भी प्रयास करना नहीं छोड़ना चाहिए। इन्ही पंक्तियों पर आधारित एक नन्ही चिड़िया के प्रयास की कहानी आपके सामने प्रस्तुत है।

एक गाँव के पास एक घना जंगल था। एक बार जंगल में बहुत भीषण आग लग गई। प्रायः जंगलों में आग की घटनाएं घटती रहती हैं जिनके लिए अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य ही जिम्मदार होता है।

जंगल की आग बढ़ती ही जा रही थी। किसी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि करें तो क्या करें। सब जानवर अपना घर छोड़कर दूसरे जंगल की ओर पलायन करने की तैयारी कर रहे थे। बड़े जानवर और पक्षी अपने अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर बहुत चिंतित हो रहे थे। थोड़ी ही देर में जंगल मे भगदड़ मच गई। सभी पशु, पक्षी अपनी–अपनी जान बचाने में लगे हुए थे।

वहीं जंगल मे एक नन्ही–सी चिड़िया भी थी। सभी परिस्थितियां देखकर उसे अपने सभी साथियों के बारे में बहुत चिंता हो रही थी। उसने सोचा कि मुझे अपने साथियों की मदद करनी चाहिए और साथ ही अपने घर को भी बचाना चाहिए।

गाँव के बाहर जंगल के पास ही एक छोटा–सा तालाब था। नन्ही चिड़िया उस तालाब में गई। उसने अपनी चोंच में पानी भरा और जंगल में आकर जंगल की आग को बुझाने का प्रयास करने लगी। वह बार–बार तालाब में जाती और अपनी चोंच में पानी भरकर जंगल में लाकर आग बुझाने का प्रयास करती रहती।

नन्ही चिड़िया को बाकी जानवरों ने ऐसा करते देखा तो वे हँसने लगे और बोले, "अरे चिड़िया रानी, ये क्या कर रही हो? चोंच भर पानी से जंगल की आग बुझा रही हो। मूर्खता छोड़ो और प्राण बचाकर भागो, जंगल की आग ऐसे ही नहीं बुझेगी।"

वह बहुत समय से एक बन्दर नन्ही चिड़िया को देख रहा था। चिड़िया भी थक रही थी लेकिन मुँह से उफ्फ किए ये बिना लगातार अपना काम कर रही थी। बन्दर चिड़िया के पास गया और उससे पूछा, "बहिन यह क्या कर रही हो! तुम्हे नहीं जाना क्या अपने लिए नई जगह खोजने?"

इस पर चिड़िया कहती है कि "विपत्ति चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न हो, बगैर प्रयास किए कभी हार नहीं माननी चाहिए और मेरा जंगल ही मेरा घर है। मेरे सुख दुःख में यही मेरा साथी था। अब जब इसको मेरी जरूरत है तो मैं इसे छोड़कर कैसे जा सकती हूँ। अतः इसे बचाने के लिए मुझे जो भी कुछ करना पड़ेगा, मैं जरूर करूँगी।"

अक्सर हम किसी बड़ी समस्या के सामने आने पर उसे देखकर यह सोच लेते हैं कि समस्या बहुत बड़ी है और वो हल हो ही नहीं सकती। हम उसका एक पहलू देखकर अपना दृष्टिकोण बना लेते हैं। जबकि उसका दूसरा पहलू भी हो सकता है। शायद वहां से उसका हल बहुत आसानी से निकल जाए। इसलिए जीवन में जब भी किसी समस्या का समाना करना पड़े, तो हर पहलू पर विचार कर उसका आंकलन करना चाहिए। कोई न कोई आसान समाधान अवश्य निकल जाएगा। ऐसा बोलकर चिड़िया फिर से अपने काम पर लग गई।

चिड़िया की यह बात सुनकर अन्य सभी जानवरों के सिर शर्म से झुक गए। उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया। उन्होंने सोचा, "जब इतनी छोटी–सी चिड़िया इतनी अच्छी भावना से काम कर सकती है, तो वे सब क्यों नहीं?"

नन्ही चिड़िया के इस प्रयास पर यह कहावत सटीक बैठती है : –

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान।।"

अब सब जानवर चिड़िया की मदद करने लगे। थोड़ी ही देर बाद आसमान में घनघोर बादल छा गए और बारिस होने लगी। चिड़िया और सभी जानवर यह देख बहुत खुश हुए। बरसात के पानी से थोड़ी ही देर में जंगल की पूरी आग बुझ गई। सभी ने ईश्वर का धन्यवाद किया।

शिक्षाः "निरंतर प्रयास करने वाले कभी असफल नहीं होते। ईश्वर भी उनका साथ देते हैं, जो अपने कार्य को निष्ठापूर्वक और लगन से करते हैं।"

आकाश
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

नीमा

शहरी भारत में लगभग हर घर में एक अनिवार्य दैनिक आगंतुक होता है – घर के कामों जैसे सफाई, पोछा लगाने, बर्तन धोने, खाना पकाने आदि में मदद करने के लिए एक अंशकालिक नौकरानी। हम, नियोक्ता उनके साथ दुर्व्यवहार नहीं करते हैं (ऐसा न हो कि वह काम छोड़कर चली जाये) हम उनकी पृष्ठभूमि, शिक्षा, परिवार, स्वास्थ्य, कठिनाइयों, आघात को जानने के लिए उनके साथ शामिल नहीं होते हैं। हम सभी के बारे में चिंतित रहते हैं, उनके बारे में सोचते भी नहीं हैं। हम ज्यादातर मामलों में, उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति की परवाह किए बिना काम करते रहते हैं। उनके लिए कोई बीमारी की छुटटी नहीं है और यदि वे अस्वस्थ हैं तो उन्हें 1–2 दिनों के भीतर वापस आ जाना चाहिये।

हम सोचते हैं, नौकरानियाँ हमारे घर में आती हैं, रोबोट की तरह काम करती हैं और अगले घर पर समय पर पहुचने के लिए जितनी जल्दी हो सके निकल जाती हैं। यदि कोई उन्हें ध्यान से देखता है, या थोड़ा सा जांचता है, तो यह समझना मुश्किल नहीं होगा कि उनमें से कई लोगों के जीवन की बहुत दुखद कहानी है। उन्हें अपने पति, लड़कों और कभी–कभी अपने माता पिता के हाथों हर तरह की गालियों और मार–पिटाई का शिकार होना पड़ता है, यह महिला एक बेहतर कल की उम्मीद में सब सहती रहती है जो कभी नहीं आता और जीवन आगे बढ़ता रहता है।

नेपाल के काठमांडू के पास के एक गांव की मूल निवासी है नीमा। वह दिल्ली के घरों में सफाई का काम करती है वह कभी स्कूल नहीं गई, नीमा के अस्तित्व के लिए संघर्ष और एक असम्मानजनक जीवन उसके भारत आने के तुरंत बाद शुरू हुआ। उसके पति, एक हाउसिंग सोसाइटी में सुरक्षा गार्ड थे, पहले दिन से उसके पति ने कभी उसकी परवाह नहीं की। उसकी शादी में कोई प्यार या सम्मान नहीं था। विवरण छोडकर सीधे उसकी स्थिति पर आते हैं, उसका पति घर पर कुछ भी योगदान नहीं देता और अपना पूरा वेतन शराब और जुए पर खर्च करता है। अपने आनंद के लिए उससे पैसे छीन लेता है। अगर वह विरोध करती है, तो उसे बुरी तरह से मारता–पीटता है। उस शारीरिक आघात से बचने के लिए वह चुपचाप पैसे उसे सौंप देती है।

नीमा का एक 25 साल का बेटा उसकी जिंदगी में सिरदर्द बना हुआ है। उसने केवल दसवीं कक्षा ही पढाई की और अपने पिता से शराब पीना, अपनी माँ को पैसे के लिए धमकाना, और इसके अलावा अपने दम पर कमाने के लिए कुछ नहीं करना जैसे सभी अदभुत गुण विरासत में मिले हैं।

नीमा बहुत मेहनत करती है और उसके जीवन में पुरुष उसकी मेहनत की कमाई से कम कमाई करते हैं कितनी शर्म की बात है। वह अपना लगभग पूरा पैसा घरेलू खर्च पूरा करने और उनके शराब पीने और जुए के ऊपर खर्च कर देती है। यदि वह कुछ राशि बचाने में सफल हो जाती है, तो वह अपने बैंक खाते में जमा कर देती है जिसके बारे में उसके परिवार को पता नहीं होता है। उसके जीवन के अनुभव के रूप में उसकी ओर से एक बुद्धिमान कदम ने उसे सिखाया है

कि अपने बुढापे में खुद को सम्भालना होगा।

वह कम से कम पिछले 26 वर्षों से अपने माता–पिता या भाई–बहनों से नहीं मिली व बात नहीं की। उसने उनसे संपर्क खो दिया और वह नहीं जानती कि उसके माता–पिता जीवित हैं या उसके भाई–बहन कहाँ हैं।

नीमा अभी 56 साल की है और उन्हें किसी से कोई उम्मीद नहीं है। वह कहती है कि वह अपने जीवन में बहुत रोई है, ऐसी पिटाई खाई है कि वह इसका जिक्र करते ही कांप जाती है। जब उससे पूछा गया कि इतनी बड़ी उम्र में उसका क्या होगा, जब उससे इतना काम नहीं होगा, तो उसके पास इसका कोई जवाब नहीं होता और न ही कोई उम्मीद होती है।

हमारे चारों तरफ कई नीमा हैं। वे बेकार, गैर–जिम्मेदार आदमियों के साथ जीवन बिता रही है जो सिर्फ खाते–पीते हैं। खून खौलता है लेकिन उनकी क्या मदद की जा सकती है? यह एक असंभव स्थिति है। लोग बताते हैं कि जब उन्होंने हस्तक्षेप करने की कोशिश की तो उन्होंने अपनी औरतों के साथ और दुर्व्यवहार किया। वास्तव में उनके जीवन में जो कमी है वह बहुत व्यक्तिगत है। गलती करने वाले पतियों को परामर्श, चेतावनी या धमकियों की कोई परवाह नहीं है। इससे वे और अधिक क्रूर हो सकते हैं और अपनी पत्नियों को और भी अधिक प्रताडित कर सकते हैं। वयस्क बच्चों के लिए वे बहुत स्वार्थी होते हैं और बहुत जल्दी उनकी शक्ति को समझ जाते हैं तथा पीड़ा देने वाले का साथ देकर आनंद लेते हैं।

वाकई लाचार स्थिति है !!

कविता
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

मन की तानाशाही

एक बार की बात है राजा परीक्षित ने वेदव्यास जी से प्रश्न किया कि क्या मेरे बुजुर्ग मन के इतने गुलाम थे कि इसे काबू करने मे असमर्थ रहे ? इस बात पर वेदव्यास जी ने जवाब दिया कि राजा, मन लज्जत का आशिक है तथा बहुत चतुर और बलवान है इससे छूटने का कोई भी उपाय नहीं है। तुम्हें जल्दी ही इसकी समझ आ जायेगी अर्थात तुम्हें जल्दी ही इसके बारे में पता चल जायेगा कि मन क्या चीज है।

राजा परीक्षित ने कहा– इसका कोई उपाय है। वेदव्यास जी ने कहा– कोई भी उपाय नहीं है। राजा परीक्षित को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। फिर वेद व्यास जी ने कहा, अच्छा मैं तुम्हें पहले ही बता देता हूँ कि आज से तीन महीने के बाद तेरे पास एक सौदागर, बहुत सुंदर सफेद रंग का घोड़ा लेकर आयेगा। तू उस घोड़े को मत खरीदना। अगर खरीद भी लिया तो उस घोड़े पर स्वयं सवारी न करना। अगर तुम उस घोड़े पर सवार हो भी जाओ तो पूर्व दिशा की ओर मत जाना, और अगर पूर्व दिशा की ओर चले भी जाओ, तो तुम्हें रास्ते में एक औरत दिखाई देगी, तुम उस औरत से बात मत करना और अगर बात कर भी लो तो उसे अपने राजमहल में लेकर मत आना। अगर उसे महल में ले भी जाओ तो उसे अपने साथ मत रखना। अगर उसे साथ में रख भी लो तो उससे कभी शादी मत करना। और अगर उससे शादी कर भी लो तो उसके कहने में न आना।

अच्छा जाओ, मैंने तुम्हें मन की शक्ति के बारे में पहले से ही सचेत कर दिया है। अब तुम इसका इलाज कर सकते हो, तो कर लो।

तीन महीने के बाद एक सौदागर घोड़ा लेकर आया जो दिखने में सफेद रंग का था और बहुत ही फूर्तीला तथा बड़ा सुंदर था। राजा ने ऐसा घोड़ा कभी नहीं देखा था। वजीरों, महामंत्री ने घोड़े की काफी तारीफ की और कहा– महाराज आप इसे खरीद लो, यह घोड़ा हमारे राज्य की शोभा बढ़ायेगा। राजा ने वह घोड़ा खरीद लिया।

कुछ दिनों बाद वजीर और महामंत्री जी ने कहा– महाराज यह घोड़ा बहुत अच्छा है, इसमें कोई भी ऐब नहीं है, यह आपकी सवारी के लायक है। राजा ने मन में कहा, अच्छा सवार हो जाते हैं, पूर्व दिशा को नहीं जायेगें। जब राजा घोड़े पर सवार होकर निकला, तो घोड़ा मुहँजोर होकर पूर्व दिशा में जंगल की ओर भाग पड़ा। पूर्व दिशा की ओर, रास्ते में राजा को एक बहुत खूबसूरत स्त्री रोती हुई दिखाई दी। राजा ने घोड़े से उतरकर उसके रोने का कारण पूछा तो वह स्त्री कहने लगी, मेरे स्नेही और रिश्तेदार मुझसे बिछुड़ गये हैं। मै उनको ढूंढते–ढूंढते जंगल में फंस गयी हूँ। अब मै जंगल में बिल्कुल अकेली हूँ। मुझे डर है कि कहीं मुझे जंगल में शेर, रीछ आदि जानवर मार न दें। मैं मरना नहीं चाहती। यदि आप मेरी सहायता नहीं करेंगे तो, आपको पाप लगेगा। मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं क्याँ करू? और कहां जांऊ ? कृपया करके आप मुझे अपने साथ ले चलें। राजा ने सोचा, इस अबला स्त्री को जंगल में अकेला छोड़ना भी इसके साथ न्याय नहीं होगा। क्यूँ ना इसे अपने साथ ले चलूँ। लेकिन इससे शादी नहीं करूँगा। ऐसा करने से मुझे पाप भी नहीं लगेगा।

राजा उस अबला स्त्री को अपने साथ महल में ले आता है और कुछ दिनों के बाद उस राज्य के लोगों ने उस औरत की काफी तारीफ की कि यह बड़ी नेक स्त्री है, बड़ी सुशील है और बड़ी सुंदर है। यह राजा के लायक है। जब राजा ने यह सब तारीफ अपने राजदरबारियों, सेनापति, वजीरों आदि से सुनी तो उसने सोचा कि मुझे इससे शादी कर लेनी चाहिए। कुछ समय बाद राजा ने शादी कर ली और कुछ दिन गुजर जाने के बाद राजा ने उस स्त्री से कहा कि एक आम आदमी भी जब शादी करता है, तो वह अपनी बिरादरी को खाना खिलाता है, और मैं तो एक राजा हूँ। मैंने तो ऐसा कोई समारोह नहीं किया। क्यूँ न हमें एक भोज समारोह रखना चाहिए? तुम अपने रिश्तेदारों, सगे–संबंधियों को इस भोज समारोह में आने का निमंत्रण दो। ऋषि, मुनियों, तपस्वियों को भी बुलाओ।

जब भोज समारोह के दिन सभी सगे–संबंधी, रिश्तेदार तथा ऋषि, मुनि, तपस्वी आदि भोजन ग्रहण कर रहे थे, तो स्त्री (रानी) ने कहा, मैं आपकी अर्धांगिनी हूँ। मैं भी आपके साथ इन सबकी सेवा करुँगी। ऋषि, मुनि, तपस्वी आदि तो जंगलों के रहने वाले थे। उन सबका ध्यान भोजन की तरफ न जाकर उस रानी की सुन्दरता पर जा रहा था। इस पर रानी, राजा को कहती है कि ये सब मेरी तरफ बुरी नजर से देख रहे हैं। ये सभी साधु, ऋषि–मुनि के रूप में आये हुए कामी लोग हैं, बदमाश हैं। वह उनके बारे में भला बुरा कहने लगी।

यह बात सुनकर राजा को क्रोध आ जाता है, राजा तलवार लेकर जैसे ही कत्ल करने की इच्छा से खड़ा होता है तो उसी वक्त वहाँ पर वेदव्यास जी प्रकट होते हैं और बोलते हैं कि बता राजा तू क्या कहता था ? राजा परीक्षित को सब कुछ याद आ जाता है, फिर वह शर्म से अपना सिर झुकाकर वेदव्यास जी से माफी मांगता है और अपने किये हुए कार्यों पर प्रायश्चित करता है।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मन ने बड़े–बड़ों की मिट्टी पलीद की है। विश्वामित्र, श्रृंगी, पराशर आदि कई अन्य ऋषि–मुनि, मन के वश में आकर गिर गये।

मन को वश में करने का बस एक ही तरीका है, हमारी धार्मिक पुस्तकें कहती हैं कि जो ताकत मन को वश में करती है वह मनुष्य के अंदर ही है। जब नौ–दरवाजों को खाली करके ऊपर रूहानी मंडलों में पहुँचकर उस नाम रूपी अमृत को पियोगे, तो ही मन वश में आयेगा अन्यथा नहीं।

सचिन
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

नींबू के भाव

दिन रविवार – सरकारी जीवात्मा के लिये सबसे प्यारा दिन। मैं थैला लेकर सुबह 8 बजे निश्चितता के साथ सब्जी लेने बजार निकल गया। बाजार पहुँचकर चुनिंदा सब्जी खरीदी ही थी कि मोबाइल की घंटी बज उठी। दूसरी तरफ से पत्नी जी मधुर आवाज में बोली– सुनिए जी, आते समय "नींबू" जरुर लेते आइएगा। पूरा बाजार छान मारा, परन्तु नींबू महाशय नदारद थे। खैर, खोज पूरी हुई और एक टूटी–फूटी टोकरी में विराजमान मिला नींबू महाशय। वह भी पीला–पीला, सूखा, मरियल, धूप में मुर्झाया। सब्जी वाले से मैंने नींबू का भाव पूछा– सब्जी वाले ने नीचे घूरते हुए कहा– आप रहने दो दादा, न खरीद पाओगे। मुझे लगा जैसे किसी ने एक बाल्टी पानी सिर पर डाल दिया हो।

मैनें एकटक नींबू को देखा – जैसे नींबू कहा रहा हो कि मेरा भाव सिर्फ तुम जैसे तुच्छ मनुष्य ने बढ़ाया है। क्योंकि मुनष्यों ने नींबू और मिर्च की अमर प्रेम–कथा गढ़ रखी है जिसके कारण हर छोटे–बड़े दुकान पर, घर के गेट पर, छत पर लटकती हुई दिख जाती है। नींबू के बढ़ते दाम के कारण भूत–प्रेतों, चुड़ैलों और पिभाचों में अभूतपूर्व खुशी का महौल है। ये सोचकर खुश हो रहे हैं कि लोग भूत भगाने के लिए अब क्या प्रयोग करेंगे ? नींबू के भाव बढ़ने के कारण तांत्रिकों, जादू–टोने और टोटके का बाजार काफी सुस्त चल रहा है। नींबू समुदाय में घोर निराशा और अवसाद का भाव है। हर वर्ष आलू–प्याज–टमाटर के बढ़े भाव के कारण उनको इतनी इज्जत मिलती है कि सरकारें तक हिल जाती हैं। और यहां उसे हिकारत की नजरों से देखा जाता रहा है। वैसे हम नींबूओं को थोड़ी–मोड़ी इज्जत कोरोना वायरस आने के कारण मिला है। इसलिए आजकल थोड़ा खुश रहते हैं। नहीं तो सच बता रहे हैं वो दिन दूर नहीं जब शरीर में नींबू की कमी कारण लोग अस्पताल में भर्ती किये जायेंगे और उसकी डोज को लेने के लिए रजिस्ट्रेशन कराने पड़ेंगे। डाक्टर द्वारा नींबू को सिरिंज में भरकर देह में चढ़ाया जायेगा।

यह सब सोच ही रहा था कि फिर मोबाईल की घंटी बज उठी। पत्नी जी बोली अजी, कितनी देरी कर रहे हैं आने में। पूरा बाजार खरीद कर घर लाने वाले हैं क्या? जल्दी आईए घर, बाबू का रो–रो कर बुरा हाल है और फोन कट हो गया। कमबख्त यह कोई न बात नहीं। घर से लम्बी लिस्ट बनाकर जाइए तब भी कम से कम दो बार फोन की घंटी बजेगी और कई नामों के समान की फरमाईश होगी ही होगी।

मैंने जैसे–तैसे ऊंचे दाम पर नींबू खरीदा और घर की तरफ चल दिया। 10 मिनट में अजादगढ़ बाजार से घर पहुँच चुका था। देखा पड़ोस की भाभी जी घर में बैठी हुई है। उनको दुआ–सलाम किया। मैंने बोला– अरे भई, चाय–वाय पिलाओ भाभी जी को। भाभी जी ने हंसते हुए कहा, नहीं भाई साहब– मैं तो बस "नींबू की शिकंजी" ही पिऊंगी। यह सुनकर मेरा सिर चकरा गया। मैंने संभलते हुए कहा, भाभी जी माफ कीजिएगा, हम इतने बड़े आदमी नहीं हैं। जो हम आपको नींबू की शिकंजी पिलायें। भाभी जी ने बड़े दबे स्वर में कहा– भाई साहब सोचा था अपने घर में नींबू के दर्शन नहीं हो रहे, तो कम–से–कम आपके घर में ही .....।

सचमुच ! इस नींबू के भाव ने हमें बेभाव कर दिया है। हमारे दांत तो बिना नींबू खाये ही खट्टे हो चुके थे।

अशोक पासवान
रक्ष सम्पदा निदेशालय, कोलकाता

पन्ना धाय

भारतवर्ष में आदिकाल से वर्तमान युग तक समय–समय पर नारी ने अपनी शक्ति व बुद्धिमता के बल पर कई ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया है जो इतिहास के पन्नों पर अमिट हो गई। जब–जब अधर्म, अन्याय तथा असत्य अपनी चरम सीमा पर पहुंचा है, तब–तब नारी शक्ति ने आगे बढ़कर धर्म, न्याय तथा सत्य को स्थापित करने में अपना भरपूर सहयोग दिया है। आदिशक्ति जगदम्बा ने सदैव मानवता की रक्षा के लिए दुराचारियों का दमन किया है। वेद पुराणों में ऐसी अनगि. नत कथाओं के प्रमाण हैं।

भारत में वीरांगनाओं व देशभक्त महिलाओं की कमी किसी भी युग में नहीं रही। अनेक ऐसी महिलाएं हुई हैं जिन्होंने

अपने समय में देश व समाज का नेतृत्व किया है तथा एक नई दिशा दी। **यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमंते तत्र देवता** अर्थात् जहाँ पर नारियों का सम्मान होता है वहीं पर देवताओं का वास होता है। इस सिद्धांत पर चलने वाला हमारा देश सदैव नारी–शक्ति को सम्मानित करता रहा है।

ऐसी ही नारी–शक्ति की मिसाल बलिदानी महिलाओं की श्रेणी में पन्ना धाय का नाम बहुत ही सम्मान से लिया जाता रहा है। पूर्ण रुप से देश को समर्पित एवं स्वामिभक्ति की मूर्ति पन्ना धाय को कौन नहीं जानता। पन्ना धाय एक ऐसी साहसी महिला थी जिन्होंने वक्त आने पर देश के लिए अपने पुत्र को भी हंसी–खुभी बलिदान कर दिया।

पन्ना धाय का जन्म पन्द्रहवीं शताब्दी में कमेरी गाँव के खींची जाति के राजपूत परिवार में हुआ था। उसमें साहस, उदारता, कर्तव्यपरायणता के गुण कूट–कूट कर भरे हुए थे।

महाराजा संग्राम सिंह के बाद राजा विक्रम सिंह चितौड़गढ के राजसिंहासन पर बैठा। वह एक अयोग्य एवं अकर्मण्य शासक था। अतः कुछ समय बाद उसे हटाकर उसके छोटे भाई उदय सिंह को उसका उतराधिकारी घोषित किया गया। उस समय उदय सिंह की आयु मात्र छह वर्ष की थी। उसकी माता राजमाता करुणावती का निधन हो चुका था।

बालक उदय सिंह पन्ना धाय की गोद में पल रहा था। पन्ना धाय का स्वयं का पुत्र चन्दन भी उदय सिंह की ही आयु का था। उदय सिंह के संरक्षण का उतरादायित्व दासी पुत्र बनवीर को सौंपा गया था। बनवीर एक स्वार्थी व्यक्ति था। एक दिन बनवीर ने उदय सिंह की हत्या करके उसके राज्य को हड़पने की योजना बनाई क्योंकि उसे मानूम था कि राजदरबार में उसका विरोध करने का साहस कोई भी नहीं कर सकता।

पन्ना धाय उदय सिंह को अपने पुत्र से भी अधिक प्यार करती थी क्योंकि वह चितौड़ का भावी शासक था। पन्ना धाय को जब बनवीर की इस कुटिल योजना का पता चला तो वह बहुत चिंतिति हुई। अतः उसने राजकुमार उदय सिंह को अपने पुत्र के कपड़े पहनाकर फलों की टोकरी में लिटाकर पत्तों से ढ़क दिया। साथ ही उसने उदय सिंह को दूध में नशीला पदार्थ भी पिला दिया था ताकि वह सोता रहे। पत्तों से ढ़की टोकरी को अपनी विश्वासपात्र वीरा को सौंपकर उसे नदी के तट पर प्रतीक्षा करने के लिए कहा। उधर दूसरी और पन्ना धाय ने अपने ह्रदय पर पत्थर रखकर उदय सिंह के कपड़े अपने पुत्र चन्दन को पहनाकर उसे उदय सिंह के बिस्तर पर सुला दिया। वीरा के दुर्ग से बाहर निकल जाने पर पन्ना धाय बनवीर की प्रतीक्षा करने लगी। बनवीर अपनी योजना के अनुसार आधी रात को उदय सिंह के कक्ष में पहुंचा और बिस्तर पर लेटे चन्दन को उदय सिंह समझ कर उसकी हत्या कर दी।

उधर पन्ना धाय को भय था कि कहीं बनवीर को चन्दन और उदय सिंह के भेद का पता न चल जाए। उसने अपने पुत्र चन्दन का अंतिम संस्कार नदी के तट पर कर दिया तथा वीरा से उदय सिंह को लेकर राज्य से बाहर निकल पड़ी।

पुत्र की मृत्यु के बाद पन्ना धाय उदय सिंह को लेकर बहुत दिनों तक शरण के लिए भटकती रही, पर दुष्ट बनवीर के खतरे के डर से कई राजकुल जिन्हें पन्ना धाय को आश्रय देना चाहिए था, उन्होंने पन्ना को आश्रय नहीं दिया। पन्ना जगह–जगह राजद्रोहियों से बचती, कतराती भटकती रही। आखिरकार कुम्भलगढ़ में उसे शरण मिल गयी। उदय सिंह किलेदार का भांजा बनकर बड़ा हुआ। तेरह वर्ष की आयु में मेवाड़ी उमरावों ने उदय सिंह को अपना राजा स्वीकार कर लिया और उसका राज्याभिषेक कर दिया। उदय सिंह 1542 में मेवाड़ के वैधानिक महाराणा बन गए। पन्ना धाय ने जब उदय सिंह को राजसिंहासन पर बैठे हुए देखा तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसका बलिदान सफल हो गया। वह उपने लक्ष्य को प्राप्त कर पूर्ण संतुष्ट हो गयी तथा ईभवर को धन्यवाद दिया। उसका बलिदान अमर हो गया। महाराज उदय सिंह ने भी पन्ना धाय को अपनी माता का सम्मान दिया तथा उनकी चरण रज अपने मष्तक पर लगाकर गौरवान्वित हुए। उन्होंने पन्ना धाय को राजमाता का सम्मान दिया। कुछ समय बाद पन्ना धाय की मृत्यु हो गई। महाराजा उदय सिंह ने ससम्मान उनका अंतिम संस्कार किया।

इस प्रकार बलिदान की मिसाल कायम करने वाली पन्ना धाय सदा–सदा के लिए अमर हो गई तथा अपनी स्वामीभक्ति, साहस, त्याग और बलिदान के कारण युगों–युगों तक याद की जाती रहेंगी।

नरेश कुमार
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जयपुर

हिम्मत

बात अप्रैल महीने की है, जब कोरोना का प्रकोप तीव्रता से चल रहा था। कोरोना कक्ष में रोज सुबह जाते वक्त एक 30–32 साल के युवक को खड़ा हुआ देखती थी। एक दिन मैंने ही उनसे पूछा, कौन मरीज है, आप उनके कौन हैं ? फिर उसने बोला– नमस्ते दीदी, रूम नंबर 7 में मेरी माँ भर्ती हुई है। कृपा करके आप उनसे कहिए– मैं उनका बेटा यहीं हूँ, कुछ पसंद का खाना चाहिए तो बोलो। मैंने अंदर जाते ही उनकी माँ को सब बोल दिया। फिर दूसरे दिन बोला– मैं माँ की बहुत फिक्र करता हूँ। उसने बड़े कष्ट उठाये हैं मुझे बड़ा करने में। ऐसा जी करता है कि मैं एक व्यक्ति की 'सुरक्षा उपकरण किट' डाल के अंदर जा कर उससे मिल लूँ। तो जावो ना, मैने उससे कहा। नहीं दीदी, ना मैं कल को छोड़ सकता हूँ ना आज को। उसका हाथ पकडे हुए एक छोटा बच्चा खडा था। बोला मुझे कुछ हो गया तो, इसका क्या होगा। इसलिए माँ से मिलने नहीं जाता। मैंने भी सोचा– ये कैंसी बीमारी आयी है।

जिस वक्त आदमी को जरूरत है, कोई उसके पास नहीं जा सकता, फिर उसकी माँ को बोला वो आपके लिये बहुत चिंतित है। उसने कहा– उसे कहो, ऐसी कोई बीमारी नहीं बनी जो मुझे मेरे पोते से अलग करे। और सच में दस दिन बाद वह ठीक होकर घर चली गयी। अच्छी सोच ने उसकी मदद की। दोस्तो ! यही मैं कहना चाहती हूँ, बीमारी को अगर स्वीकार करके उसे सकारात्मकता से देखो तो वो बहुत छोटी लगती है, और हम उससे जल्दी निपट सकते हैं, और अगर डर गये तो वो बढ़ती ही जाती है, यही बात तो कोरोना के मौसम में देखी गयी।

जो कम बीमारी थे, डर के मारे वो सीरीयस हो गये और जो हिम्मत से डटे रहे, रहे, उसको ज्यादा बीमारी से भी तकलीफ नहीं हुई। तो हर वक्त क्यों ना यह याद रखें कि बीमारी कैसी भी हो, उसका सामना हिम्मत से करें, तो शायद उस पर काबू पा सकेंगे।

सौ. मीनल मिलिंद धायगुडे
छावनी बोर्ड, खड़की

शिष्टाचार : जीवन का आधार

हमारे व्यक्तित्व का दर्पण हमारा आचार–व्यवहार अर्थात शिष्टाचार है। शिष्टाचार से अभिप्राय है शिष्टापूर्ण व्यवहार। मीठी वाणी, मधुर व्यवहार तथा शालीन स्वभाव शिष्टाचार के मुख्य तत्त्व हैं जो आपको प्रशंसा का पात्र बनाने के साथ ही पग–पग पर सफलता दिलाने में सहायक होते हैं। प्रकृति प्रदत्त प्रसन्नता, मुस्कुराहट एवं नम्रता शिष्ट व्यवहार के ऐसे सूत्र हैं जो जीवन की सार्थक सफलता के लिए सोपान का काम करते हैं।

व्यवहार कुशलता, शिष्टता, संस्कार एव सभ्यता का पाठ हम अपने परिजनो से भी सीखते हैं जिसमें माता–पिता, भाई–बहन, चाचा–चाची, दादा–दादी आदि शामिल हैं। यह शत–प्रतिशत सत्य है कि शिष्ट एवं व्यवहार कुशल बनने की प्रथम पाठशाला परिवार में शिक्षक की भूमिका अभिभावकों की रहती है। परिवार का प्रत्येक सदस्य स्वयं शिष्ट व्यवहार को अपनाकर ही भविष्य की पीढी को संस्कारित एवं शिष्ट बनाने के उतरदायित्व का निर्वहन करता है।

जीवन–मूल्य पढ़ाए नहीं जाते बल्कि उन्हें सीखा जाता है। किन्तु आज पाश्चात्य संस्कृति, भारतीय समाज को इस प्रकार प्रभावित कर रही है कि लोग पाश्चात्य संस्कृति का अंध अनुकरण कर रहे हैं। इस कारण लोगों का नैतिक पतन एवं समाज में जीवन– मूल्यों का पतन हो रहा है। साहित्य, समाज का दर्पण होता है किन्तु कुछ लोग सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए घटिया साहित्य सृजन कर रहे हैं जिसका हमारे आचार–विचार तथा व्यवहार पर कुप्रभाव पड़ रहा है।

शिष्ट–व्यवहार के निर्माण में शिक्षा की अहम भूमिका है किन्तु आज भारतीय शिक्षा–प्रणाली एक शिष्ट नागरिक बनाने के बजाए भावी पीढी को एक ऐसी मशीन बना रही है जो प्रति पल ए.टी.एम. की तरह नोट उगल सके। ऐसे में शिष्ट नागरिकों की कल्पना करना ही मूर्खता है। शिष्टाचार सीखने की एक सतत प्रक्रिया है जिस पर परिवार, समाज साहित्य, सभ्यता, संस्कृति एवं शिक्षा का सीधा–सीधा प्रभाव पड़ता है। यही वह गुण है जिसकी सराहना होती है। घर–बाहर, सर्वत्र मनुष्य अपने मधुर व्यवहार से सम्मोहन की सुरभि बिखेरता रहता है तथा अपने व्यक्तित्व को निखारता रहता है।

मनुष्य के लिए भाषा और वाणी ईश्वर की अनुपम देन हैं। इस दोनों की सहायता से मनुष्य के मौलिक गुणों में शिष्टाचार को संस्कारित एवं समाहित करने का प्रयास संभव है। अतः उपरोक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि शिष्टाचार ही जीवन का आधार है।

दक्षिता सिंह
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जयपुर

फर्ज

ऑफिस के कार्य से बाहर गए बेटे के लौटते ही माँ ने पूछा– 'तुझे मालूम है कि अपने पिता के इलाज का पूरा खर्च बहू उठा रही है ?

'नहीं तो ?

'क्यों ? दीपाली ने जब हार्टअटैक के बारे में बतलाया होगा तो रुपयों की बात भी की होगी?

'खर्च की तो उसने कोई बात नहीं की।'

'अरे, बड़ी अजीब बात है। बहू ने तुझसे भी कुछ नहीं पूछा। माना कि वह कमाती है, किन्तु इसका यह मतलब तो नहीं कि खर्च करने में पति से पूछने की जरूरत ही नहीं।'

माँ की बातों से संदीप का पारा चढ़ गया। शाम को पत्नी के घर आते ही तीखे स्वर में बोला– 'दीपाली, तुमने अकाउंट से इतनी बड़ी रकम बिना किसी से पूछे ही निकाल ली ?

'बताने का समय ही कहां था ? उस समय तो दिमाग में बस एक ही बात थी कि पापा का ऑपरेशन बिना देरी के सफलतापूर्वक हो जाए। मैं क्या, उस समय जो भी कोई होता, वह यही करता।'

'इसका सीधा मतलब तो यह हुआ कि तुम कमाती हो इसलिए खर्च करने में तुम्हें किसी से पूछने की आवश्यकता ही नहीं ? मैं पूछता हूँ आखिर रुपए देने की जरुरत ही क्या थी ?'

दीपाली का स्वर भी तीखा हो गया, 'जब इलाज के लिए पापा के पास पैसे नहीं थे तो क्या हमारा कर्तव्य नहीं था कि उनकी मदद करते ? क्या विपत्ति में पापा को ऐसे ही छोड़ देती ?'

दीपाली के उत्तर से माँ भड़क उठी, 'बहू व्यर्थ में बात का बतंगड़ ना बनाओ। एक तो गलती की और दूसरा बहस कर रही हो।'

'मैं कहां बहस कर रही हूँ ? बीमार पिता की मदद करने को बहस का विषय तो आपने बनाया है। आप ही निर्णय करें, जब देवर की पढ़ाई और ननद की शादी में मैंने अपनी मर्जी और खुशी से खर्च किया तो पिता के इलाज में मेरी मदद करना गलत कैसे हो गया ? आपके इस तरह के विचारों ने तो दोनों परिवारों के बीच अपने–पराए की दीवार खड़ी कर दी।'

'कल हम किसी मुसीबत में फंस जाएं तो क्या प्रियंका दीदी खड़ी–खड़ी मूंह ताकती रहेंगी? क्या उनका फर्ज नहीं होगा कि वे हमारी मदद के लिए आगे आएं ? और यदि वे ऐसा नहीं करती हैं तो क्या हम उनके बारे में कोई अच्छे विच. ार रख पाएंगे ? माँ जी, आप ही बताएं जब सर्विस करती हुई एक महिला अपने पद की जिम्मेदारियों से जुड़े हुए निर्णय स्वतंत्र रुप से लेने में सक्षम है तो घर–परिवार के मसलों में भी निर्णय लेने की स्वतंत्रता उसे क्यों नहीं मिलनी चाहिए ? और पूर्व–सहमति की भी जरुरत क्यों होनी चाहिए ? माँ जी, मुझे तो अस्पताल जाना है, लेकिन इतना फिर कह देती हूँ कि पापा की मदद करके मैंने कुछ गलत नहीं किया, संतान होने का अपना फर्ज निभाया है।'

हेमन्त कुमार गोयल
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जयपुर

स्वर सम्राज्ञी

आधुनिक युग में स्वर को पूरे परफैक्भान के साथ यदि सुनने का मन करें तो जेहन में सबसे पहले लता मंगेशकर का नाम आता है। प्रसिद्ध संगीतकर बड़े गुलाम अली उनकी आवाज सुनने के बाद फरमाते हैं :–
'जिस शास्त्रीय संगीत को हम 03 घंटे में पूरा करते हैं, लता उसे 03 मिनट में गा देती हैं।'

उनके बचपन की संगीत लहरी का परिचय देते हुए चालीस के दशक के मशहूर मराठी संगीतकर 'दत्ता दावजेकर' कहते हैं "कोल्हापुर में मैं विनायकराव (अभिनेत्री नंदा के पिता) की कंपनी में कर्मचारी था। गायन परीक्षा में छोटी लता के अद्भुत प्रदर्शन से मैं चकित था..... मैं जो भी गाता वह साथ–साथ ही गाती, कुछ भी सिखाना नहीं पड़ता था। लता को नया गाना सुनाते हुए आप उसे सिखा रहे हैं या गप–शप कर रहे हैं, यह पता नहीं चलता। लड़की इतनी खुशमिजाज है। .....गीत की पंक्ति गुनगुनाती रहेगी। रिकॉर्डिंग के समय बताना नहीं पड़ता कि माइक्रोफोन से कितना दूर रहना है, चेहरा माइक से किस कोण पर होना चाहिए ..... सुरों की तरह माइक्रोफोन से भी दोस्ती है।..... एक बात ओर, संगीतकार चाहे पुराना हो अथवा नया, लता की एकाग्रता वही रहेगी..... हां पुरानों के साथ कुछ खुल कर बातें होती हैं।''

अपने जीवन की एक घटना के बारे में बताते हुए लता जी कहती हैं, जब मैंने पहली बार स्टेज पर गाना गाया, मेरी उम्र नौ साल की थी। मेरे पिता ने जो मेरे गुरु भी रहे हैं– "तब प्रसन्न होकर उपस्थित लोगों से कहा था कि आपने मुझे जो प्यार दिया है उसके बदले में मैं लता के रूप में मेरा संगीत दे रहा हूं। आज मैं लोगों के ऋण से मुक्त हो गया"। लता जी का मानना था 'जो काम समय पर नहीं होता, वह सही नहीं होता।'

अपने गाए गीतों को लेकर लता जी का कहना था 'मैं अपने गीतों का रस नहीं ले पाती क्योंकि मैं अपना संगीत भी एक क्रिटिक (आलोचक) के कानों से सुनती हूं।'

लता जी को फिल्म "चाचा जिंदाबाद" का गाना 'बेरन नींद न आए मोहे'..... (संगीतकार मदन मोहन) अपना श्रेष्ठ गीत लगता था। इस बारे में प्रसिद्ध संगीतकार ओ पी नैय्यर ने एक बार कहा था– "मैं नहीं जानता कि मदन मोहन लता मंगेशकर के लिए बने थे या लता जी मदन मोहन साहब के लिए बनी थी। लेकिन आज तक मदन मोहन जैसा म्यूजिक डायरेक्टर नहीं हुआ और लता मंगेशकर जैसी सिंगर नहीं हुई।"

पार्श्व गायिका के रूप में लता जी का पहला गाना मराठी फिल्म "किती हसल (1947)" में 'नाचू ये गडे खेलू' था। हिंदी फिल्म जगत में पहला गाना बसंत जोगलेकर की फिल्म 'आप की सेवा में' हसल (1948) में गाया था। रिकॉर्डिंग रूम में लता जी सबसे पहले माइक से थोड़ा दूर होकर खड़ी होती थी। फिर जब वे माइक पर गाने के लिए आती थी तो यह विशुद्ध संगीत होता था। गाने की बारीक तकनीक और गायन कम समय में सांसों पर नियंत्रण संगीतकार अनिल विश्वास से सीखा। पार्श्व गायिका के तौर पर इनकी प्रतिभा सर्वप्रथम गुलाम हैदर की फिल्म 'मजबूर' (1948) में उभर कर सामने आई।

गायन के प्रति लता जी के समर्पण की एक मिसाल 'उर्दू' के शब्दों के रूबरू होने के लिए 'उर्दू' की ट्यूशन लेना रहा।

लता जी के 70 दशक के गायन कैरियर में 1949 का साल ब्रेकथ्रू वर्ष कहा जा सकता है। इस वर्ष इन्होंने 'महल' (आएगा आने वाला), 'अंदाज' (उठाए जा उनके सितम) तथा 'बरसात' (जिया बेकरार है) जैसे बेहतरीन गाने गाए। 'बरसात' फिल्म के 'जिया बेकरार है आई बहार है' गाने को तो उस समय का यूथआइकॉन गाना कहा जा सकता है। जब भारत पाकिस्तान विभाजन विभीषिका का दर्द झेल रहे शरणार्थियों के कैंपों में शाम को चूल्हे की आग और धुएँ में कहीं दूर सरकारी रेडियो में ये गाना बजता था तो उस वक्त का युवा या युवती नव–निर्मित होने वाले भारत की कल्पना कर एक दैवीय आशा से भर उठते थे।

लता जी के जीवन में गौरव के अनेक ऐसे क्षण आए जिन्होंने एक गायिका के रूप में स्वयं उनके मन को भी आह्लादित किया। वह समय था 01 मई 1960 जब वे शिवाजी पार्क में महाराष्ट्र राज्य की स्थापना के अवसर पर मराठी प्रार्थना गान

के लिए आमंत्रित की गई।

तीन वर्ष पश्चात, उनकी आवाज दिल्ली में एक रैली में गूंजी जब भारत–चीन युद्ध में शहीद फौजियों के परिवारों के कल्याण उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उनके द्वारा गाए गए 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गाने ने ऐसा समाँ बांधा कि स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू आँखों में आंसू भर लता जी के पास आए और बोले 'बेटी आज तुमने मुझे रुला दिया।'

ये प्रसंग, वाकय लता जी के महान व्यक्तित्व की धरोहर पूंजी हैं। लता जी को संगीत के साथ–साथ संगीतकारों की मनोदशा, कार्यशैली की भी बड़ी समझ थी। संगीतकारों की सराहना करने का उनका तरीका बेहद यूनिक था। हर गाने के बारीक खंड पर उनका ध्यान रहता, गाने के दौरान विशेष खंड पर उनकी मुस्कान केवल संगीतकार ही समझ सकते थे।

वे विशुद्ध कलाकार थी। अपने कार्य के प्रति पूर्णतया समर्पित। प्रत्येक धुन और शब्द को सटीक पैमाने के साथ गाने वाली लता जी अपने तौर पर किसी गाने के रीटेक (संगीतकार द्वारा) पर पूछ बैठती थी "क्यों" ? ये काम के प्रति उनका समर्पण भाव ही था। प्रसिद्ध संगीतकार विशाल भारद्वाज ने जब इस बारे में उनसे पूछा तो उनका जवाब था– एकबारगी गाना गा लेने में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के उपरांत वो जानना चाहती (संगीतकार से) है, कहाँ गलती रह गई कि रीटेक की जरूरत पड़ी।

आगे विशाल इसी में जोड़ते हुए कहते हैं :– 'लता जी अपनी रिकॉर्डिंग में पूर्णतया तैयार होकर आती थी और एक टेक में पूरा गाना गा देती थी।' एक बार कि बात बताते हुए वे कहते हैं– अपने पहले सेशन के दौरान लता जी ने मेरी घबराहट को देखते हुए मुझे रिकॉर्डिंग रूप में बुलाया और रिलेक्स होने को कहा तथा यह भी कहा कि मैं उन्हें न्यू कमर की भांति ट्रीट करूँ।

लता जी हमेशा गायकों के आत्म गौरव को बढ़ाने के उपाय करती थी। 'महल' (1947) फिल्म के रिकोर्डों में पार्श्वगायिका के स्थान पर 'गीत' गाने वाली पात्र 'कामिनी' का नाम उन्हें संघर्ष की प्रेरणा दे गया। "मुझे महसूस हुआ कि वह तो कुछ ठीक नहीं है..... और उसके लिए मुझे थोड़ा–सा लड़ना भी पड़ा, आखिर 'बरसात' फिल्म में जाकर गायकों के नाम पर्दे पर आए, और रिकॉर्डो पर भी।"

व्यक्तित्व के जुझारूपन के साथ उनकी आवाज भी बेहद सुलझी और शांत मनोबल से भरी थी। सन 1974 में, ब्रिटिश लेबर पार्टी के नेता 'माइकल फुट' ने लंदन के प्रसिद्ध रॉयल एल्बर्ट हॉल में उनकी परफॉर्मेंस पर उन्हें 'वॉयस ऑफ इंडियॉ' की उपाधि दी। 2009 में प्रसिद्ध निर्माता–निर्देशक श्याम बेनेगल ने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के साथ हुए एक साक्षात्कार में लता जी की उपमा मिश्र की "उम्म खुलतम" से की। बेनेगल जी की ये उपाधि लता मंगेशकर के व्यक्तित्व और उनकी गायन प्रतिभा का हमसे परिचय कराते हुए जनमानस में विद्यमान उनके प्रभाव को दर्शाता है।

लता जी के बारे में और क्या कहा जाए 'मौन ही स्वर है'। इतना ही कह सकते हैं कि उनके भीतर बैठा अबोध बालक कभी भी स्वर से दूर नहीं हुआ। वे प्रत्येक अवसर पर हमारे साथ हैं। उनके होने से ही हमारी खूबसूरत एक्ट्रेस सेल्यूलाइड पर और खूबसूरत हो जाती हैं। चाहे सायरा बानो, मुमताज़, नूतन, नर्गिस, निम्मी, वहीदा रहमान, नन्दा, साधना हो अथवा इस दौर की श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित, काजोल, भाग्यश्री सभी सेल्यूलाइड खूबसूरती पर फबती उनकी आवाज और निखर कर हमारे सामने आती है। 'भारत कोकिला' 'लता मंगेशकर' के स्वर कभी भी जनमानस से दूर नहीं हो पाएंगे। उन्हें नमन श्रद्धांजलि !

तेजराज सिंह
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

75 वां स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

21वीं सदी और उज्ज्वल भविष्य

इस सृष्टि का कोई नियंता है जिसने अपनी समग्र कलाकारिता को बटोर कर इस धरती को, उस पर शासन करने वाले मनुष्य को बनाया है। वह उसका इस प्रकार विनाश होते नहीं देख सकता। समझदारी बाधित करती है कि पीछे लौट चला जाए। वर्तमान अनाचार के संबंध में भी यही बात है। नियंता ने सामयिक निश्चय लिया है कि विनाश की दिशा में चल रही अंधी दौड़ को रोक दिया जाए और फिर प्रवाह को संतुलित स्तर पर लाया जाए।

वर्तमान प्रवाह का, चरम विनाश के बिन्दु तक जा पहुँचने से पहले, सृष्टा ने उस पर रोक लगाने और परिवर्तन का नया माहौल बनाने का निश्चय लिया है। समय की गति मनुष्यों के प्रचंड पुरुषार्थ परायणता के कारण अत्यधिक तेज हो गयी है। समय की चाल तेज हो जाने पर घंटे में तीन मील चलने वाला व्यक्ति वायुयान में चढ़कर उतनी ही देर में कहीं से कहीं जा पहुँचता है।

हर बात की एक सीमा होती है। रावण, कंस, हिरण्यकश्यप आदि भी उभरे तो तेजी से, पर उसी गति से उनका अंत भी हो गया। इसी क्रमानुसार अवांछनीयताओं का माहौल अब समाप्त होने जा रहा है और उसका स्थान सच्चे अर्थों वाली प्रगतिशीलता ग्रहण करेगी। लंका दमन के साथ ही राम राज्य का अवतरण भी जुड़ा हुआ था। वही इस बार भी होने जा रहा है। इन आधारों पर 21वीं सदी सुखद संभावनाओं की अवधि है। यह समय युग संधि का है। बुझता हुआ दीपक अधिक ऊंची लौ उभारता है, मरते समय चींटी के पंख उगते हैं। मरणकाल में साँसो की गति तेज हो जाती है। युगसंधि की इस ऐतिहासिक बेला में सृजन संभावनाओं के दृश्यमान प्रयत्न शासन, अर्थ क्षेत्र, विज्ञान आदि की परिधि में दिखाई पड़ेंगे।

सृष्टि के आदिकाल से अब तक कई ऐसे अवसर उपस्थित हुए हैं जिनमें विनाश की विभीषिकाओं को देखते हुए लगता था महाविनाश होकर रहेगा, किन्तु इससे पूर्व ही ऐसी व्यवस्था बनी, ऐसे साधन उभरे, जिसने गहराते घटाटोप का अंत कर दिया

विश्व के मूर्धन्य विचारक, मनीषी, ज्योतिर्विद अब इस संबंध में एक मत हैं कि युग परिवर्तन का समय आ पहुंचा। हमें भी यही आशा करनी चाहिए कि एक अच्छे युग का सूत्रपात होने वाला है।

दीपक कुमार ऋषि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

वास्तु टिप्स

घर का मुख्य द्वार पूर्व या उत्तर की ओर हो तो अच्छा है।

रसोई सदैव आग्णेय कोण (दक्षिण–पूर्व) में हो एवं बिजली उपकरण जैसे फ्रिज़, इनवर्टर इत्यादि भी इसी कोण में होना चाहिए।

पूजा का स्थान ईशान कोण (उत्तर–पूर्व) में होना सर्वोत्तम है एवं उस स्थान पर पीले रंग की पेंटिंग करवानी चाहिए।

घर के मुखिया का शयनकक्ष (मास्टर बेडरूम) सदैव नैऋत्य कोण दक्षिण–पश्चिम में हो तो सर्वोत्तम है। यह पृथ्वी तत्व है, अतः यह कोण भारी होना चाहिए। गेस्ट रूम के लिए वायव्य कोण (उत्तर–पश्चिम) बेहतर होता है।

जब भी घर बनवाएं उसमें समसंख्या में खिड़कियों को लगवाएं एवं खिड़कियों के दरवाजे अंदर की ओर खुलने चाहिए। खिड़कियां दो पल्ले की होनी चाहिएं। घर के सभी दरवाजे अंदर की ओर एवं क्लॉकवाइज खुलने चाहिएं।

वास्तु अनुसार बेडरूम का आकार चौकोर या आयताकार होना चाहिए।

बेडरूम में सोते समय सिर दक्षिण या पूर्व दिशा में होना चाहिए।

सीढ़ियों की संख्या हमेशा विषम होनी चाहिए।

एक्सपायर्ड दवाएं रात को ही फेंकनी चाहिएं, इससे घर में दवाओं का आना बंद हो जाता है।

घर में सप्ताह में एक बार गुग्गल का धुआँ करना चाहिए।

घर में सरसों के तेल के दिये में लौंग डालकर जलाना शुभ होता है।

हर गुरुवार को तुलसी के पौधे को दूध चढ़ाएँ।

मकान में तीन दरवाजे एक ही रेखा में न हों।

बैठक में आशीर्वाद देते हुए संत महात्माओं के चित्र लगाएं।

घर में टपकने वाले नल नहीं होने चाहिएं।

घर में गोल किनारों के फर्नीचर ही शुभ हैं।

दीपक कुमार ऋषि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

ईश्वर का गणित

एक बार दो आदमी एक मंदिर के पास बैठे गपशप कर रहे थे। वहाँ अंधेरा छा रहा था और बादल मंडरा रहे थे। थोड़ी देर में वहाँ एक और आदमी आया तथा वो भी उन दोनों के साथ बैठकर गपशप करने लगा।

कुछ देर बाद वह आदमी बोला– उसे बहुत भूख लग रही है। उन दोनों को भी भूख लगने लगी थी। पहला आदमी बोला– मेरे पास 3 रोटी हैं, दूसरा बोला– मेरे पास 5 रोटी हैं, हम तीनों मिल बाँट कर खा लेते हैं। उसके बाद प्रश्न उठा कि 8 (3+5) रोटी तीन आदमियों में कैसे बंट पाएंगी ?

पहले आदमी ने राय दी कि ऐसा करते हैं हर रोटी के 3 टुकड़े करते हैं, अर्थात 8 रोटी के 24 टुकड़े ($3 \times 8 = 24$) हो जाएंगे और हम तीनों में 8–8 टुकड़े बराबर बराबर बंट जाएंगे।

तीनों को उसकी राय अच्छी लगी और 8 रोटियों के 24 टुकड़े करके प्रत्येक ने 8–8 टुकड़े खाकर भूख शांत की और फिर बारिश के कारण मंदिर के प्रांगण में ही सो गए।

सुबह उठने पर तीसरे आदमी ने उनके उपकार के लिए दोनों को धन्यवाद दिया तथा स्नेह पूर्वक 8 रोटी के टुकड़ों

के बदले दोनों को उपहार स्वरूप 8 सोने की गिन्नी देकर अपने घर की ओर चला गया।

उसके चले जाने के बाद दूसरे आदमी ने पहले आदमी से कहा, हम दोनों 4–4 गिन्नी आपस में बाँट लेते हैं। पहला आदमी बोला नहीं, मेरी 3 रोटी थी और तुम्हारी 5 रोटी थी, अतः मैं 3 गिन्नी लूँगा और तुम्हें 5 गिन्नी रखनी होंगी।

इस पर दोनों में बहस होने लगी। इसके बाद वे दोनों समाधान के लिए मंदिर के पुजारी के पास गए और उन्हें समस्या बताई तथा इसके समाधान के लिए प्रार्थना की।

पुजारी भी असमंजस में पड़ गया, दोनों दूसरे को ज्यादा देने के लिए लड़ रहे हैं। पुजारी ने कहा कि तुम लोग ये 8 गिन्नियाँ मेरे पास छोड़ जाओ और मुझे सोचने का समय दीजिए। मैं कल सवेरे तक जवाब दे पाऊँगा।

पुजारी को दिल से वैसे तो दूसरे आदमी की 3–5 की बात ठीक लग रही थी, परंतु फिर भी वह गहराई से सा. `चते–सोचते गहरी नींद में सो गया।

कुछ देर बाद उसके सपने में भगवान प्रकट हुए तो पुजारी ने उन्हें सब बातें बताई और न्याय मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की और बताया मेरे ख्याल से 3–5 बंटवारा ही उचित लगता है।

भगवान मुस्कुरा कर बोले– नहीं, पहले आदमी को 1 गिन्नी मिलनी चाहिए और दूसरे आदमी को 7 गिन्नी मिलनी चाहिए। भगवान की बात सुनकर पुजारी अचंभित हो गया और अचरच से पूछा– प्रभु, ऐसा कैसे ?

भगवान फिर एक बार मुस्कुराए और बोले, इसमे कोई शंका नहीं है कि पहले आदमी ने अपनी 3 रोटी के 9 टुकड़े किए परंतु उन 9 में से उसने सिर्फ 1 बांटा और 8 टुकड़े स्वयं खाए अर्थात उसका त्याग सिर्फ 1 रोटी के टुकड़े का था, इसलिए वो सिर्फ 1 गिन्नी का ही हकदार है।

दूसरे आदमी मे अपनी 5 रोटी के 15 टुकड़े किए जिसमें से 8 टुकड़े उसने स्वयं खाए और 7 टुकड़े उसने बाँट दिए। इसलिए वो न्यायानुसार 7 गिन्नी का हकदार है। ये ही मेरा गणित है और ये ही मेरा न्याय है।

ईश्वर के न्याय का सटिक विश्लेषण सुनकर पुजारी नतमस्तक हो गया।

इस कहानी का सार यही है कि हमारी वस्तुस्थिति को देखने एवं उसे समझने की दृष्टि तथा ईश्वर का दृष्टिकोण एकदम भिन्न है। हम ईश्वरीय न्यायलीला को समझने में सर्वथा अज्ञानी हैं।

हम अपने त्याग का गुणगान करते हैं, परंतु ईश्वर हमारे त्याग की तुलना हमारे सामर्थ्य एंव भोग के तौर पर करके यथोचित निर्णय करते हैं। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हम कितने धन सम्पन्न हैं, महत्वपूर्ण यह है कि हमारे सेवा भाव कार्य में त्याग कितना है।

रियाज बशीर शेख
छावनी बोर्ड, खड़की

निरक्षरता : एक सामाजिक अभिशाप

मुनष्य को किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व सोच समझ लेना पड़ता है। उसे औचित्य तथा अनौचित्य का विचार करना पड़ता है। वह किसी विशेष कार्य को यूं ही प्राम्भ नहीं कर देता। जबकि मूर्ख को किसी भी बात से कोई सरोकार नहीं होता। उसका चाहे मान हो या अपमान हो, उसे तनिक भी चिन्ता नहीं रहती। मूर्ख का अपने में कोई लक्ष्य नहीं होता। लक्ष्य निर्धारण में वह अपने को सर्वथा शून्य पाता है। उसे जिस किसी काम में डाल दिया जाए बस, उसे करता जाएगा। उसके परिणाम से वह नितांत अनिभिझ होता है।
श्री भृतहरि के अनुसार – जो मनुष्य साहित्य, संगीत कला से हीन है, वह तुच्छ तथा सींग रहित पशु के सदृश है। बुद्धि मान वही है जो साहित्य, संगीत और कला का व्यसनी हो अन्यथा वह इस धरती पर भार के समान है। अपनी उदरपूर्ति के साधन प्राप्त करने में ही मूर्ख अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझता है।

किसी भी समाज या देश में ऐसे लोगों से क्या लाभ हो सकता है और फिर ये अधिक संख्या में हों, तो वे समाज या देश के लिए कहाँ तक हितकर सिद्ध हो सकते हैं – यह एक विचारणीय प्रश्न है। ऐसे लोगों पर यदि परिवार का भार है, तो क्या वे परिवार को सही दिशा दे सकेंगे। उसका मार्गदर्शन कर सकेंगे। वे माता पिता के रूप में आकर अपनी सन्तान को क्या शिक्षा प्रदान कर सकेंगे। और फिर मनुष्य और पशु में क्या अन्तर रह गया। ज्ञान ही एक ऐसा विशेष एवं अनुपम तत्व है जो उसे पशुता से पृथक करता है। अन्यथा यह पशु कोटि में गणना करने योग्य है। मनुष्य अपने स्वार्थ में अति पटु होता है तो पशु–पक्षी भी हानि या अपने लाभ सम्यक् प्रकार से जानते हैं सन्तति प्रेम मनुष्यों तथा पशु–पक्षियों में समान रूप से पाया जाता है। गाय–भैंस भी अपने बच्चे को प्यार दुलार करती हैं – संगीत में ऐसी मनमोहक शक्ति है कि उसकी और सभी समानरूपेण आकृष्ट होते हैं। एक बधिक के वश में मृग भी सुगमता से नहीं आ जाता और संगीत सुनकर वह इतना आनन्द विभोर हो जाता है कि वह आँखें मूँद लेता है। बधिक बाण मारकर उसकी जान ले लेता है। कलाकार तथा गुणवान मनुष्य का सम्मान सर्वत्र होता है। मूर्ख व्यक्ति का कोई समादर नहीं करता है। सारांश यह है कि अनेक गुण तथा व्यवहार ऐसे हैं जो मनुष्यों की तरह से ही पशुओं में पाए जाते हैं। पशुओं और पक्षियों में भी एकता पाई जाती है। उदाहरणार्थ एक बन्दर कहीं फँस जाये तो उसे बचाने के लिए अनेक वानर वहाँ एकत्रित हो जाते हैं। केवल शिक्षा या ज्ञान ही एक ऐसा सूक्ष्म तत्व है जो मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ प्रमाणित करता है।

उपर्युक्त तथ्यों पर दृष्टि डालने से यह तथ्य सामने आता है कि साक्षर होना मनुष्य के लिए बहुत ही आवश्यक है। शासन की ओर से सभी के लिए समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। भारत में शिक्षा की समुचित व्यवस्था रही है। हमारा देश भारत सैकड़ों वर्षों तक दासता की जंजीरों मे जकड़ा रहा। इससे हमारी विचारधारा तथा प्रयत्न निष्क्रिय हो गए। ब्रिटिश शासनकाल में शिक्षा व्यवस्था की जो दशा हुई, उससे भली प्रकार सभी सुपरिचित हैं। उन लोगों का तो यही विचार था कि भारतीय संस्कृति और साहित्य का मूलोच्छेदन ही कर दिया जाए, और इस विचार को उन्होंने कार्यरूप में बदलने का पूरा प्रयास किया।

यह स्पष्ट है कि निरक्षरता के उन्मूलन के बाद ही हमारा देश सच्चे अर्थ में समस्त क्षेत्रों में प्रगति कर सकता है। निरक्षरता समाज के लिए तथा देश के लिए अभिशाप है– कलंक है। खेद का विषय यह है कि स्वतन्त्र हुए 75 वर्ष व्यतीत हो गए किन्तु अभी निरक्षरता समाप्त नहीं हो सकी है। आज की शिक्षा व्यवस्था में कुछ सुधार की भी आश्वयकता है – शिक्षा सस्ते शुल्क पर उपलब्ध कराई जाए तो सभी को लाभ मिलेगा। शिक्षा पर होने वाला व्यय कुछ महंगा पड़ता है। इसके अतिरिक्त कुछ लोगों का ध्यान अब भी शिक्षा की ओर अपेक्षाकृत कम है।

हमारे राष्ट्र कर कल्याण तभी सम्भव है जबकि हमारे देशवासी साक्षरता की दिशा में ठोस कदम उठाएँ और निरक्षरता के निवारणार्थ यथासम्भव सच्चे अर्थ में प्रयत्न करें। वह दिन वास्तव में कितना सुखद होगा जबकि निरक्षरता पूर्णतः समाप्त हो जाएगी अथवा बहुत कम प्रतिशत में ही रह जायेगी।

पवन कुमार तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

पागल

वो छत पर खड़ी थी, बाल खुले और बिखरे
कभी मुंह इधर कभी उधर
बार–बार सामने निहारती, दीन–दुनियां से बेखबर
मुझे बहुत दया आ रही थी।
इतनी कम उम्र में पागल होना
अभी तो पूरी जिन्दगी पड़ी है
क्या होगा, कैसे होगा?
मुझे उसके पिता की चिन्ता सताने लगी
बेचारा दिन–भर मेहनत करके परिवार पालता है
ऊपर से इस पागल लड़की को कैसे सम्भालेगा?
धीरे–धीरे पागलपन और बढ़ गया... मैं घबराया
अब तो वह मुंडेर पर बैठ गई थी
मैनें अपनी बिटिया को बुलाया और अपनी चिन्ता से अवगत कराया
बिटिया बोली ''पापा वो पागल नहीं है, वो तो सेल्फी ले रही है।''

सुनो ना माँ

माँ, देखो ना, कितना अकेला हूँ, आओ ना
आज तुमसे कुछ कहना है, सुनो ना माँ
बचपन से आज तक, ऐसा तो नहीं हुआ
तुमने कभी मुझे अकेला छोड़ा हो
कभी तो नहीं...
कभी गुस्साती थी, कभी डांटती थी
कभी मातृत्व की छांव में, मुझको सुलाती थी
धूप खाते बदन को, ठोकर खाते कदम को
तुमने ही संवारा था, तुमने ही संभाला था

विपत्ती के समय में जब नौकरी गंवाई पापा ने
कितनी हिम्मत और समझ से तुमने हमको सम्भाला था
बिखरते पत्तों को, एक भाखा पे सजाया था
फिर आज ऐसा क्यूं, जब मेरे बदन पे धूप नहीं पड़ती, मेरे कदम लड़खड़ाते नहीं
तब मेरे उड़ते पंखों को हौंसला देने के लिए, तुम ही मेरे पास नहीं हो

अगर इन सब की कीमत तुम हो
तो भगवान मेरा सब कुछ ले ले, पर मेरा वो बचपन
हां, वो बचपन लौटा दे, और मैं तुम्हारी गोद में, अपनी सारी उम्र बिता दूं,
मां, देखो ना आज तुमसे कुछ कहना है,
एक बार तो सुन लो ना माँ।

अन्नू सिंह
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

शब्द

शब्दों में अप्रतिम शक्ति है
भावों के अनुवादन की।
लिखने, पढ़ने, गढ़ने की,
कहने, सुनने , मनने की।।

इतिहास लिखा है शब्दों का,
शब्दों के अनुनादों का।
संघातों का, प्रतिघातों का,
संबंधों के संवादों का।।

शब्द ही सीना छलनी करते,
या खुद सिने लग जाते हैं।
कौन है वैरी , कौन मीत है
शब्द हमें बतलाते हैं।।

अंतर में उठते भावों से,
बातों की माला गूँथते हैं।
फूल हों या केवल कांटे हों
यम हम स्वतः/स्वयं चुनते हैं।।

सही समय पर गलत बात से,
महाभारत रच जाता है।
गलत समय पर सही बात से,
भाई–भरत हो जाता है।।

शब्द सदा ही हेतु होते,
भावों के सम्प्रेषण के।
अपने मन की कहने को,
सबके दिल की सुनने को।।

मानव को तो छोड़ ही दें,
अध्यात्म जगत ने माना है।
नाम, जप और शब्द कीर्तन
मुक्ति का अचूक खाजाना है।।

शब्द नहीं जो शब्दों के,
सौन्दर्य का वर्णन कर पाऊँ ।
भावों के अनकहे चित्रों से,
मधुमास का वर्णन कर पाऊँ।।

सपने में भी शब्दों का ही
सब ताना बाना होता है।
हर्ष, गर्व, भ्रम, शोक, विरह का,
आना–जाना होता है।।

रिश्तों की उलझी गुत्थी या,
योवन के सपने वादे हों।
भावों के शुष्क धरातल पर,
अपनों के नियत इरादे हों।।

दिल के नवीन तराने हों या
उमंगों के मतवाले हों
शब्द ही माया रचते हैं।
रिश्तों कों अर्थ देकर
जीवन रथ चलाते हैं।।

दीपक कुमार तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

राजा मार्तण्ड वर्मा (1729 – 7 जुलाई 1758)

यूरोपीय देश के लोगों को समुद्र में अजेय माना जाता था पर आपको पता है लगभग 250 साल पहले केरल के राजा मार्तण्ड वर्मा ने डच समुद्री सेना को हरा दिया था, वह भी पारंपरिक हथियारों से। लेकिन विदेशियों के मानसिक गुलाम हमारे इतिहासकारों ने इस गौरवपूर्ण विजय का इतिहास दबा दिया। वस्तिकता तो यह है कि भारत प्राचीनकाल से समुद्री शक्ति रहा था, हाँ, इस्लामिक काल में यह शक्ति भी बुरी तरह प्रभावित हुई थी, पर चोल राजाओं ने जिस प्रकार दक्षिण और दक्षिण पूर्व के समुद्री राज्यों पर विजय प्राप्त कर वहां वैदिक आर्य संस्कृति का विस्तार किया था उससे लगता है दक्षिण भारत समुद्री शक्ति में बहुत बाद तक स्थिति मजबूत बनाये हुए था।

डच कौन थे?

डच नीदरलैंड के लोगों को कहा जाता है. पुर्तगाली और अंग्रेजों की तरह डच भी यूरोप की एक बड़ी ताकत थे। लगभग 50 साल तक दुनिया के व्यापार पर उनका कब्जा रहा। 1602 में डच सरकार ने एक कम्पनी बनाई थी, जिसे डच ईस्ट इंडिआ कम्पनी के नाम से जाना जाता था। इसमें 17 शेयर होल्डर थे। दुनिया की इस सबसे अमीर और ताकतवर कम्पनी की ताकत उस समय पुर्तगालियों और अंग्रेजों से भी ज्यादा हो गई थी। उन्होंने एशिया के मसाला व्यापार पर कब्जा कर लिया था। उस दौर में मसाला सोने से ज्यादा कीमती था।

केरल में काली मिर्च सबसे ज्यादा होती है। जिसपर डच ईस्ट इंडिया कंपनी की नजर थी। ये एक ऐसा मसाला था, जिसकी पूरी दुनिया में बड़ी मांग थी। उस जमाने में काली मिर्च सोने से ज्यादा कीमती थी। काली मिर्च के खजाने की तलाश यूरोपीय व्यापारियों को केरल के समुद्री तटों पर खींच लाई थी।

1604 से 1697 के प्रथम चरणों में डचों ने अपने हितों के क्षेत्र स्थापित किए जो जल्द ही उपनिवेश बन गए। पश्चिमी तट पर पुर्तगालियों की नृशंस नीतियों ने पुर्तगाली व्यापारियों को मलयालम भाषियों के लिए अवांछित बना दिया। पुर्तगाली मुख्यालय को गोवा ले जाने का यह भी एक कारण था। डच व्यापारी को स्थानीय जनसंख्या द्वारा हमेशा आदर दिया जाता था और उन्हें तरजीह दी जाती थी।

पुर्तगालियों के विपरीत डचों ने स्वंय को सौम्य, सभ्य और अनुशासित रूप में प्रस्तुत किया। डच के पक्ष में इस माहौल का अधिकतम इस्तेमाल किया गया, खास तौर पर 1658 में सिलोन (श्रीलंका) पर डच विजय के उपरांत। कोझिकोड के जमोरिन ने पुर्तगाली शक्ति और प्रभाव को नष्ट कर 7 जनवरी 1663 तक कोचीन और 15 फरवरी 1663 तक कन्नूर में उनके आधिपत्य को स्थापित करने में सहायता का हाथ बढ़ाया। डच अधिकारी धीरे धीरे कोचीन रियासत के निर्णय लेने लगे। वे सीमा शुल्क, राजकीय किराया, कर और जुर्माना वसूल करते थे। वे अदालती मामलों में हस्तक्षेप करते थे तथा उन्होंने तंबाकू, नमक, गेंहू आदि के व्यापार में एकाधिकार स्थापित किया।

डच नीतियों की मज़बूती तथा प्रभावोत्पादकता ने उन्हें 17 वीं सदी तक केरल तट पर सर्वाधिक स्वीकार्य तथा न्यूनतम आपत्तिजनक बना दिया। वान रीड, डच गवर्नर ने कोल्लम, कार्तिकपल्ली, पुरक्कड, कोझीकोड तथा कोलातुनाड के राजाओं के साथ सैन्य दबाव के साथ संधियों पर संतुष्टि दर्ज की है। आपसी आदर और समझ से डच ने वेनाड, कायमकुलम, तेक्कमकूर और कोचीन के साथ संधियों पर हस्ताक्षर किए। इसके साथ ही केरल तट पर डच आधिपत्य एक वास्तविकता बन गया ।

त्रावणकोर का छोटा पर शक्तिशाली राज्य

केरल के इतिहास में त्रावणकोर राजघराने का सबसे बड़ा योगदान है। इसमें भी राजा मार्तण्ड वर्मा के बारे में जाने बिना त्रावणकोर का इतिहास अधूरा है। उन्होंने 1729 से 1758 तक शासन किया। इन 29 सालों में उन्होंने त्रावणकोर को एक बड़ा राज्य बनाया और अपने सभी दुश्मनों को परास्त किया। चाहे वह घर के अंदर के दुश्मन हों या बाहर के। मार्तण्ड

वर्मा ने उस जमाने की बड़ी शक्ति समझे जाने वाली डच नौसेना को पराजित किया।

राजा मार्तण्ड वर्मा ने केरल को विदेशी शक्ति से बचाने के लिए केरल का एकीकरण हेतु अभियान चलाया और अत्तिन्गल, क्विलोन, कायाकुलम आदि रियासतों को जीतकर राज्य को मजबूत बनाया। कायाकुलम की जीत पर डच गवर्नर गुस्ताफ विल्लेम वान इम्होफ्फ़ ने मार्तण्ड वर्मा को पत्र लिखकर अप्रसन्नता जताई जिसपर मार्तण्ड वर्मा ने जबाब दिया राजाओं के काम में दखल देना तुम्हारा काम नहीं है। तुमलोग सिर्फ व्यापारी हो और अपने व्यापार से मतलब रखो।

आस पास के राज्यों को जीतने के बाद अब उनकी नज़र वेनाद (वायनाड) राज्य पर थी। जहां काली मिर्च की खेती सबसे ज्यादा होती थी। लेकिन वेनाद के मिर्च व्यापार पर डच कम्पनी का एकाधिकार था। मार्तण्ड वर्मा उसे तोड़ना चाहते थे और वेनाद पर विजय प्राप्त कर वे उसे तोड़ने में सफल भी हुए।

त्रावणकोर कि लगातार विजय पर डच गवर्नर इम्होफ्फ़ ने युद्ध करने कि धमकी दी जिस पर मार्तण्ड वर्मा ने जबाब दिया, *"I would overcome any Dutch forces that were sent to my kingdom] going on to say that I am considering an invasion of Europe" (Koshy, M.O. (1989)- The Dutch Power in Kerala, 1729-1758)*

केरल पर डचों का हमला

डच गवर्नर इम्होफ्फ़ ने पराजित राजाओं के साथ मिलकर कुटनीतिक चाल चला तो मार्तण्ड वर्मा ने मालाबार स्थित डचों के सभी किलों पर कब्जा कर लिया। गुस्साए इम्होफ्फ़ ने विशाल जलसेना सहित कमांडर दी लेननोय को श्रीलंका से त्रावणकोर पर हमले के लिए भेजा।

डच ईस्ट इंडिया कंपनी के पास उस समय के सबसे आधुनिक हथियार थे। डच कमांडर दी लेननोय श्रीलंका से सात बड़े युद्ध जहाजों और कई छोटे जहाजों के साथ पहुंचा। डच सेना ने कोलचल बीच पर अपना कैम्प लगाया। कोलचल से मार्तण्ड वर्मा की राजधानी पद्मनाभपुरम सिर्फ 13 किलोमीटर दूर थी। डच समुद्री जहाजों ने त्रावणकोर की समुद्री सीमा को घेर लिया। उनकी तोपें लगातार शहर पर बमबारी करने लगीं। डच कम्पनी ने समुद्र से कई हमले किये। तीन दिन तक लगातार शहर में गोले बरसते रहे। शहर खाली हो गया। अब राजा को सोचना था कि उनकी फौज कैसे डच सेना के आधुनिक हथियारों का मुकाबला कर पाएगी।

राजा मार्तण्ड वर्मा कि चतुराई

लेकिन लड़ाई आधुनिक हथियारों से नहीं दिमाग और हिम्मत से जीती जाती है। डच सेना तोपों से बमबारी कर रही थी। लेकिन मार्तण्ड वर्मा ने दिमाग से काम लिया। उन्होंने नारियल के पेड़ कटवाए और उन्हें बैलगाड़ियों पर इस तरह लदवा दिया जैसे लगे कि तोपें तनी हुई हैं।

डच सेना की एक रणनीति थी वो पहले समुद्र से तोपों के जरिये गोले बरसाते। उसके बाद उनकी सेना धीरे धीरे आगे बढ़ती हुई खाईयां खोदती और किले बनाती थी। इस तरह वो धीरे धीरे अपनी सत्ता स्थापित करते थे। लेकिन मार्तण्ड वर्मा की नकली तोपों के डर से डच सेना आगे ही नहीं बढ़ी।

उधर मार्तण्ड वर्मा ने अपने दस हजार सैनिकों के साथ घेरा डाल दिया। दोनों तरफ से छोटे छोटे हमले होने लगे। डच कमांडर दी लेननोयने केरल के मछुआरों को अपने साथ मिलाने की कोशिश की। उन्हें पैसों का लालच दिया गया लेकिन विदेशियों की ये चाल नाकामयाब रही। मछुआरे अपने राजा से जुड़े रहे उन्होंने पूरी तरह से त्रावणकोर की सेना का साथ दिया।

मार्तण्ड वर्मा ने डच सेना को पराजित किया

डचों को सिलोन से कोई अतिरिक्त सैन्य बल नहीं मिला जिसकी उन्हें आशा थी। मौसम बिगडने के कारण डचों को अपना आक्रमण रोकना पड़ा। डचों ने, हालांकि 26 नवंबर 1740 को कोलाचल पर गोलाबारी शुरू कर दी और लगातार तीन दिनों तक करते रहे। डच जहाजों ने भी कोल्लम और कन्याकुमारी के बीच बंदरगाहों को अवरोधित कर दिया। निवासी तेज़ी से निकल भागे। कपास उद्योग में तबाही को रोकने के लिए मार्तंड वर्मा ने 2,000 की मज़बूत सैन्य शक्ति भेजी। हालांकि अंग्रेज काफी प्रभावित हुए थे किंतु वे ज्यादा कुछ नहीं कर सकते थे। स्टेन वान गोल्लइनेस कोचीन के साथ बड़े बेड़े को लाया था पर वो अधिक कुछ नहीं कर सकता था। कैप्टन हैकार्ट कमांडर इन चीफ था, एनरिस लेसलोनार्ट किलों का निरीक्षक बना और जोहान क्रिस्टियन रिगलेट को डच सेना का कमांडर बना गया। स्टेन गोल्लइनेस तट पर शीर्षस्थ भूमिका में बना रहा। शुरूआत में कोलाचल में त्रावणकोर सेना की बागडोर राम वर्मा, राजमहल के दूसरे राजकुमार, के पास थी जिसमें 600 सैनिक शामिल थे इसमे से 300 मारवा थे। यहां तक कि डच भी उन्हें पराजित नहीं कर सके चूंकि वे एशियाई इतिहास के बेहद अहम वक्त से गुजर रहे थे। कोलाचल और कोल्लम के कमांडर ने कोचीन से सैन्य सहायता की मांग की और कोचीन ने तूतीकोरिन (तुत्तूक्कुडी) से। तूतीकोरीन ने कोलंबो से यह मांग रखी और कोलंबो ने बताविया से और बताविया अतिरिक्त सैन्यबल प्रदान नहीं कर सका क्योंकि वह गृह सरकार से इसकी आशा नहीं कर सकता था।

डचों के उच्च और निम्न अधिकारियों के बीच संबंध अच्छे नहीं थे। गोल्लइनेस को हैकार्ट में कमियां लगी और हैकार्ट ने लेसलोनार्ट को इसके लिए दोषी ठहराया कि वह कोलाचल मे डच किले का निर्माण पूरा नहीं कर सका। कोलाचल के कमांडर रिजटेल ने कोचीन में डच काउंसिल को लिखा कि ''भारतीय इतिहास में इससे पहले किसी भारतीय राजकुमार (मार्तंड वर्मा) ने किसी यूरोपीय किले को घेरने की हिम्मत और दृढ़ता नहीं की यह काफी आश्चर्यजनक है कि शत्रु (त्रावण ाकोर) ने तट पर कितनी जल्दी इन शक्तियों को निर्मित कर लिया।'' यह सच है क्योंकि मार्तंड वर्मा के त्रावणकोर के बल से लगभग 15000 सैन्य शक्ति के साथ जून 1741 तक डच सेनाओं को घेराबंदी कर दी थी। 420 सैनिकों की डच सेना 27 जुलाई 1741 को कन्यकुमारी से चली किंतु त्रावणकोर की बड़ी सैन्य शक्ति के सामने वे बेबस थी। रिजटेल ने अपने उच्चाधिकारियों को बार–बार अधिक अतिरिक्त सैन्य बल भेजने को कहा किंतु न तो कोलंबो से कुछ प्राप्त हुआ और न ही बताविया से। कई दिनों के भीषण समुद्री संग्राम के बाद 31 जुलाई 1741 ईस्वी को मार्तण्ड वर्मा कि जीत हुई। इस युद्ध में लगभग 11000 डच सैनिक बंदी बनाये गए और हजारों मारे गये।

1740–41 के दौरान डच और त्रावणकोर की सेनाओं के बीच आमने–सामने कई युद्ध हुए। इसी प्रकार के एक युद्ध (2 अगस्त 1741) में डच कमांडर रिजटेल के सिर में चोट आई और अपने देश के लिए लड़ते हुए उसने अपनी अंतिम सांस ली। अन्य डच सैनिकों को पकड़ लिया गया जिसमें यूस्ताच डी लनॉय और डोनाल्डी, दोनों फ्लेमिश मूल के, शामिल थे। इनमें से पहले वाले को मार्तंड वर्मा द्वारा सैन्य स्थापना का प्रभारी बनाया गया क्योंकि वह काफी सक्रिय एवं अनुशासित था तथा डच शक्ति के पतन (1741–1795) के दौरान राज्य के सैन्य इतिहास में प्रमुख भूमिका निभाई थी। देशी सेनाओं ने कोलाचल के आस–पास 60 किमी तक बहुत से यूरोपीय और देशी तटों पर अतिक्रमण कर लिया । इससे डचों ने कोचीन तक बात पहुंचाई कि वह यहां के लोगों के आक्रमण को सहन नहीं कर सकते।

डच कमांडर डी लनॉय और उप कमांडर डोनाल्डी सहित 24 डच जलसेना के टुकड़ियो के कप्तानों को हिन्दुस्तानी सेना ने बंदी बना लिया और राजा मार्तण्ड वर्मा के सामने पेश किया जिन्हें राजाज्ञा से उदयगिरी किले में बंदी बनाकर रखा गया।

कोलाचल स्थित डचों की युद्ध परिषद् ने इस मुद्दे पर 8 अगस्त 1741 को चर्चा की और तत्काल अर्थात् 9 अगस्त 1741 को कन्याकुमारी वापस जाने अथवा कोल्लम में तंगास्सेरी जाने का निर्णय लिया। उनका यह निर्णय कोलाचल में डच सेनाओं के पिछडने के मद्देनजर था जहां की मूल सेना विशाल, बेहतर शस्त्रों से लैस तथा बेहतर स्थिति में थी। 9 अगस्त 1741 के निर्णायक दिन डच सेना को कोलाचल में सभी लोगों और सामग्री के साथ उनके किले के विध्वंस का अंतिम आघात प्राप्त हुआ।

बहुत से जहाजियों ने दर्ज किया है कि डच झंडा तीन बार फहराया गया और प्रत्येक बार उसे त्रावणकोर द्वारा हटा दिया गया अथवा उड़ा दिया गया। न केवल इतना बल्कि कोलाचल किले के अंतर्गत भीषण विस्फोट हुआ और 600 पाउंड से भी अधिक बारूद सभी तोपें और ग्रेनेड विस्फोटित हो गए। त्रावणकोर सेना में नैयर, इझावा, मारवा और परवान शामिल थे जिनकी प्रत्येक की संख्या 300 से अधिक थी, वह सब कुछ नष्ट कर दिया जो कोलाचल किले में थी। महाराजा मार्तंड वर्मा और त्रावणकोर के प्रधानमंत्री के प्रधान सलाहकार रमाय्यन डलावा के नेतृत्व में मारवा अश्वारोही सेना ने किले पर सीधा आक्रमण किया। पूरे किले में आग लग गई और उसका कुंआ शवों से भर गया। जन हार्टमैन जो कि पास के चर्च में था, के मुताबिक खासतौर पर किला रहने योग्य नही रह गया। एक गोला बारूद से टकराया और देखते ही देखते हर चीज़ में आग लग गई। सारा कोलाचल क्षेत्र ढह गया। डच देखते ही रह गए क्योंकि वे कुछ नहीं कर सकते थे। उन्होंने मार्तंड वर्मा की रणनीति और कौशल की पूर्ण गहनता को पहचाना।

यहां की सेना द्वारा उनकी घेराबंदी के साथ ही उन्होंने बिना शर्त समर्पण कर दिया और शांति का निवेदन किया। उन्होंने उनके शांतिपूर्ण वापसी की आज्ञा मांगी जिसे मार्तंड वर्मा ने गरिमापूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया । कोचीन में हुई युद्ध परिषद ने निष्कर्ष निकाला कि कोलाचल में डच तबाही का मुख्य जिम्मेदार हैकर्ट था। बिना आदेश के उसने अपनी सेना को तुतुक्कुडी भेज दिया और बाद में कोलाचल को बचा नहीं सका। हालांकि वह डच युद्ध परिषद का भूतपूर्व अध्यक्ष था किंतु उसके भूतपूर्व कनिष्ठों द्वारा उसे सजा सुनाई गई और बताविया भेज दिया गया जहां 1743 में बंधक के रूप में उसकी मृत्यु हुई।

राजा मार्तण्ड वर्मा ने इस विजय कि खुशी में कोलाचेल में विजय स्तम्भ बनबाया। मार्तण्ड वर्मा कि इस विजय से भारत में डच सैन्य शक्ति समाप्त हो गयी।

राजा मार्तण्ड वर्मा कि उदारता और दूरदर्शिता

बाद में पकड़े गये डच सैनिकों को नीदरलैंड सरकार के अनुरोध पर उन्हें पुनः हिंदुस्तान वापस नहीं भेजने के शर्त पर नायर जलसेना कि निगरानी में अदन तक भेज दिया गया, जहाँ से डच सैनिक उन्हें यूरोप ले गये। कुछ बरसों बाद कमांडर दी लेननोय और उप कमांडर डोनादी को मार्तण्ड वर्मा ने इस शर्त पर क्षमा किया कि वे आजीवन राजा के नौकर बनकर उदयगिरी में राजा के सैनिकों को प्रशिक्षण देंगे। कमांडर दी लेननोय कि मृत्यु उदयगिरी किले में ही हुई जहाँ आज भी उसकी समाधि सुरक्षित है।

1750 में हुए एक भव्य समारोह में त्रावणकोर के राजा ने अपना राज्य भगवान पद्मनाभ स्वामी को समर्पित कर दिया, जिसके बाद पद्मनाभ स्वामी के दास के रूप में त्रावणकोर का शासक किया। इसके बाद से त्रावणकोर के शासक भगवान पद्मनाभ स्वामी के दास (पद्मनाभदासों) कहलाए।

1757 में अपनी मृत्यु से पूर्व दूरदर्शी राजा मार्तण्ड वर्मा ने अपने उत्तराधिकारी राम वर्मा को लिखा था। "जो मैंने डचों के साथ किया वही बंगाल के नवाब को अंग्रेजों के साथ करना चाहिए। उनको बंगाल कि खाड़ी में युद्ध कर के पराजित करें, वरना एक दिन बंगाल और फिर पूरे हिंदुस्तान पर अंग्रेजों का कब्जा हो जायेगा।"

प्रदीप मिश्र
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

राजभाषा अनुभाग की गतिविधियां

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय का राजभाषा अनुभाग संगठनात्मक स्तर पर संघ की राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की मॉनीटरिंग एवं रक्षा सम्पदा संगठन के अधीनस्थ कार्यालयों में उसके कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार पर अपनी नजर बनाए रखता है। संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने की दृष्टि से सरकार द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को अनेक दायित्व सौंपे गए हैं जिनमें हिन्दी भाषा का प्रसार एवं उसका विकास सम्मिलित हैं जिससे कि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

राजभाषा अनुभाग संघ की राजभाषा नीति संबंधी विशेष दायित्वों का निर्वहन करता है :–

(i) यह अनुभाग सुनिश्चित करता है कि राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में ही जारी हों। हालांकि कार्यालय प्रमुख भी यह सुनिश्चित करता है किन्तु राजभाषा अनुभाग इस कार्य में उनका सहयोग करता है।

(ii) राजभाषा अनुभाग ही मुख्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयी स्तर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वार्षिक कार्यक्रम के अन्तर्गत राजभाषा हिन्दी से संबंधित निर्धारित लक्ष्यों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।

(iii) महानिदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों, हिन्दी कार्यशालाओं एवं हिन्दी पखवाड़े का आयोजन, अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण, केंद्र सरकार द्वारा लाई जा रही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू करना इत्यादि कार्य भी राजभाषा अनुभाग द्वारा सफलतापूर्वक किए जाते हैं।

(iv) राजभाषा अनुभाग संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए जाने वाले निरीक्षणों के दौरान संबंधित अधीनस्थ कार्यालयों को मार्गदर्शन एवं समुचित सहायता भी प्रदान करता है।

उपर्युक्त के आलोक में रक्षा सम्पदा महानिदेशालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा चालू वर्ष के दौरान किए गए कामकाज का एक विस्तृत ब्यौरा निम्नानुसार है :–

1. माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 11.03.2022 को रक्षा सम्पदा कार्यालय दिल्ली मंडल, दिनांक 04.05.2022 को छावनी बोर्ड रानीखेत, दिनांक 06.05.2022 को छावनी बोर्ड बरेली, दिनांक 24.06.2022 को रक्षा सम्पदा कार्यालय लेह, दिनांक 29.06.2022 को रक्षा सम्पदा कार्यालय ऊधमपुर एवं श्रीनगर, दिनांक 15.07.2022 को रक्षा सम्पदा कार्यालय जयपुर और दिनांक 18.08.2022 को छावनी बोर्ड अहमदाबाद एवं रक्षा सम्पदा कार्यालय अहमदाबाद के राजभाषायी निरीक्षण किए गए। ये सभी निरीक्षण कार्यक्रम सफल रहे। इन कार्यालयों के निरीक्षण के दौरान मुख्यालय के प्रतिनिधियों ने समुचित मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान कर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. रक्षा सम्पदा महानिदेशालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिण दिल्ली.प् के 09 सदस्य कार्यालयों के समूह का नोडल कार्यालय है। नराकास बैठकों में नोडल कार्यालय के रूप में प्रशंसनीय कार्य करने पर महानिदेशालय और रा.जभाषा अनुभाग की कई बार सराहना की जा चुकी है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के साथ–साथ राजभाषा अनुभाग इस समूह के सदस्य कार्यालयों का उचित मार्गदर्शन भी करता है तथा आवश्यकतानुसार उनकी समुचित सहायता भी करता है।

3. रक्षा सम्पदा महानिदेशालय में 14 से 28 सितंबर, 2021 तक हिन्दी पखवाड़े का भव्य आयोजन किया गया। कोविड–19 महामारी के चलते सामाजिक दूरी का ध्यान रखते हुए केवल लिखित प्रतियोगिताओं का ही आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति–पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

4. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों, जिनमें राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की स्थित का जायजा लेने के लिए समय–समय पर किए जाने वाले राजभाषायी निरीक्षण भी सम्मिलित हैं, के अनुसार मुख्यालय स्तर पर अपने न्यूनतम 25: अधीनस्थ कार्यालयों (रक्षा सम्पदा निदेशालय, निदेम, छावनी बोर्ड कार्यालय और रक्षा सम्पदा कार्यालय) का राजभाषायी निरीक्षण किया जाता है। महानिदेशक, रक्षा सम्पदा द्वारा वर्ष 2021–22 और 2022–23 के लिए अनुमोदित निरीक्षण कार्यक्रम के अनुसरण में मुख्यालय स्तर पर 23 कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण कार्य पूर्ण किया जा चुका है तथा उनकी निरीक्षण रिपोर्टें संबंधित कार्यालयों और कमानों को आगामी कार्रवाई हेतु भेज दी गई हैं। शेष कार्यालयों की निरीक्षण प्रक्रिया जारी है।

5. रक्षा सम्पदा संगठन के सभी अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिन्दी पखवाड़ा बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजेताओं को प्रशस्ति–पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही लगभग सभी अधीनस्थ कार्यालयों में समय–समय पर हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गई जिनमें अधिक से अधिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं के आयोजन से कार्मिकों में हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होती है तथा मूल हिन्दी पत्राचार में भी वृद्धि देखने को मिलती है। सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गई।

6. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनाएं परिचालित की जाती हैं जैसे वर्ष भर में हिन्दी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने वाले अधिकारियोंध्कार्मिकों को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत की जाने वाली प्रोत्साहन योजना आदि। महानिदेशालय में वर्ष 2020–21 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक काम करने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए :–

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	अनुभाग	पुरस्कार
1.	श्री जगदीश बिश्नोई, सहायक महानिदेशक	अधि./किराया	प्रथम
2.	श्री राकेश मीना, कनिष्ठ सचिवालय सहायक	छावनी	प्रथम
3.	श्री रविन्द्र डबास, वरिष्ठ सचिवालय सहायक	रजिस्ट्री	द्वितीय
4.	श्री मुनेश कुमार मीना, सहा. अनुभाग अधिकारी	समन्वय	द्वितीय
5.	श्री सोनू पाल, उच्च श्रेणी लिपिक	अधिग्रहण.*II*	द्वितीय
6.	श्री राजीव कुमार, एसडीओ.ए	अधिग्रहण.*II*	तृतीय
7.	श्री राहुल कुमार, सहायक अनुभाग अधिकारी	समन्वय	तृतीय

7. महानिदेशालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "सम्पदा भारती" का प्रकाशन भी राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है। इसमें प्रकाशित लेख, कहानी, कविता एवं चुटकुले इत्यादि कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का एक सार्थक एवं सक्रिय मंच है। "सम्पदा भारती" में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों (प्रत्येक रचनाकार की केवल एक रचना) को गुणवत्ता के आधार पर पारिश्रमिक भी प्रदान किया जाता है।

8. संक्षेप में, राजभाषा अनुभाग हिन्दी के प्रति अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन को लेकर काफी गंभीर है। सदैव यह प्रयास रहता है कि सौंपे गए दायित्व को सजगता एवं सावधानी के साथ पूरा किया जाए। इस कार्य में महानिदेशक महोदय के मार्गदर्शन में संबंधित उच्च अधिकारियों के बहुमूल्य सुझावों से हिन्दी के प्रोत्साहन संबंधी सभी नीतिगत निर्णयों का सुचारु रूप से कार्यान्वयन संभव हो पाता है।

****

संपर्क सूत्र

राजभाषा अनुभाग, रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

रक्षा सम्पदा भवन, उलान बाटर मार्ग

दिल्ली छावनी – 110010

दूरभाशः 011 – 25674970

फैक्सः 011 – 25674965

ई–मेलः rajbhasha-dgde@gov.in

dgdehindi2013@gmail.com